₹ 20

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

जनवरी 2015

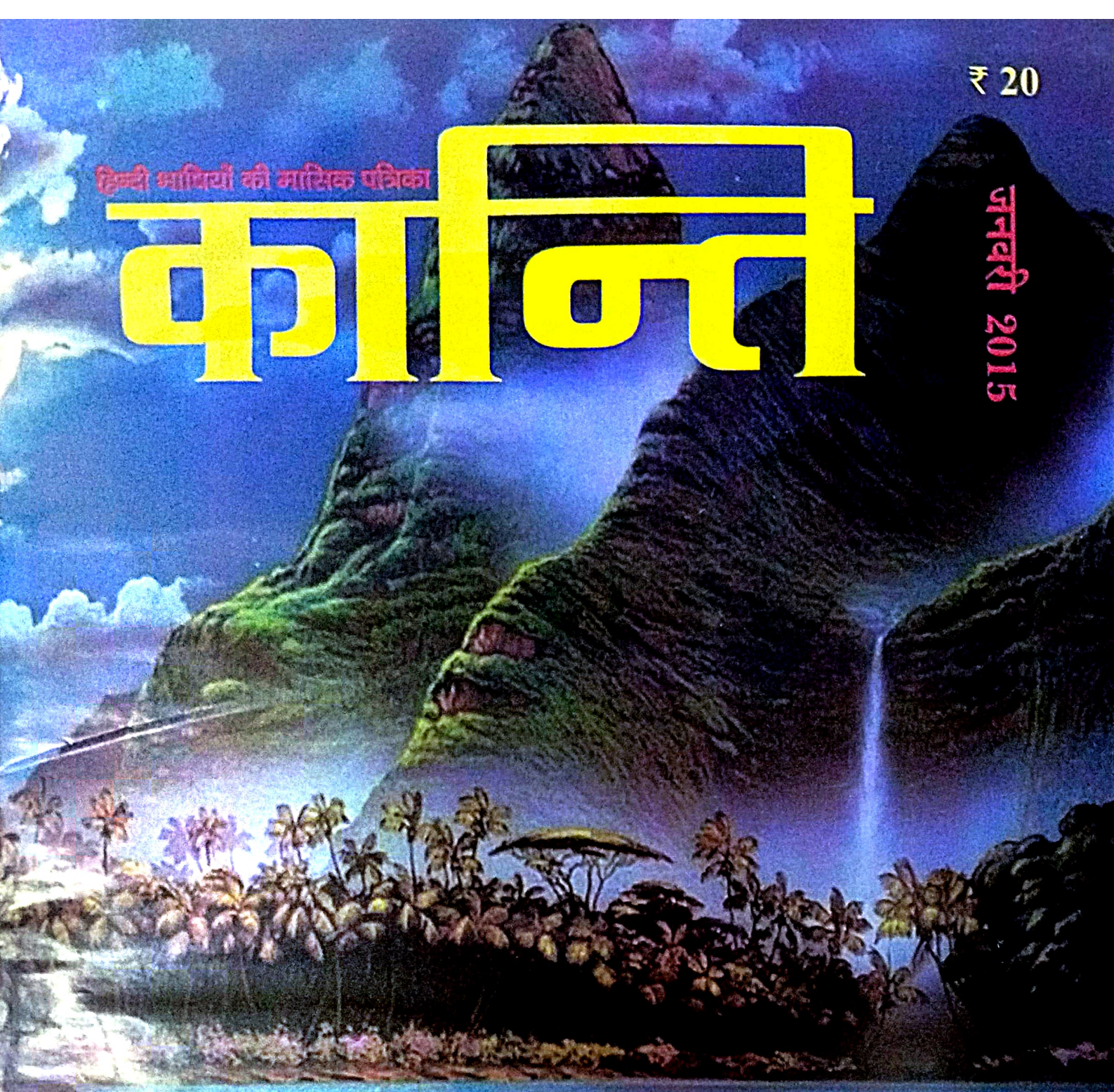

- पशु-पक्षी, पर्यावरण भी दया के पात्र
  –डॉ॰ फ़रहत हुसैन
- मेरे सपनों का भारत
  –मुहम्मद अली शाह शुऐब
- अश्लील विज्ञापनों पर अंकुश लगे
  –डॉ॰ विभा सिंह
- निशस्त्रीकरण की दिशा में क़दम
  –डॉ॰ जगदीश गांधी

S. Riyaz Khadri

Decorators
Real Estate
Medical Store
Consultancy
Enterprises

Off. : 2519501/6970673
Res. : 2517612
Fax : 2517992
Mob. : 9422060878
9423888457

RIYAZ DECORATORS

On hire Shamiyana Pandal, Sound System Lighting Chairs, Table and Crockery etc. Items

SHOP : Opp. Zuari Complex, Block No. 3, Patrong Baina-Vasco, Goa-403 802

RES : Fire Wood Depot, Sasmolem Baina, Vasco-Goa

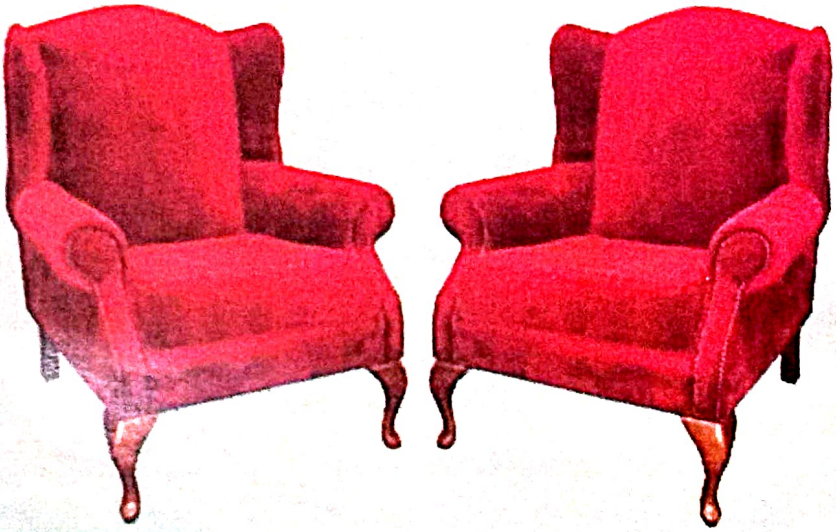

RIYAZ Real Estate

Sales, Purchase & Letting of Commercial/Residential Properties & Development Plots

Off. : 2519501/6970673
Res. : 2517612
Fax : 2517992
Mob. : 9422060878
9423888457

Off. Shop No. 4, Navprasth Estate, Near Kharpreshwar Mandir, Patrong Baina, Vasco-da-Gama, Goa - 403 802

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 24 अंक 7 जनवरी 2015

जिसने किसी इन्सान को क़त्ल के बदले या ज़मीन में बिगाड़ फैलाने के सिवा किसी और वजह से क़त्ल कर डाला उसने मानो सारे ही इन्सानों को क़त्ल कर दिया, और जिसने किसी की जान बचायी उसने मानो सारे इन्सानों को जीवन दान किया। –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 20/- विशेषांक रु० 30/-

वार्षिक रु० 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु० 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

छापे

निरन्तर पड़ते रहते हैं छापे
पकड़ी जाती है अकूत संपत्ति
नोटों के बंडल बंगले प्लाट ज़मीनें
लाकर उगलते हैं ढेरों सोना चांदी ज़ेवर
फिर भी नर्म पड़ने में नहीं आते
भ्रष्टाचारियों और माफ़िया के तेवर ।

छोटे-मोटे कर्मचारियों के यहां से भी
छापे में करोड़ों निकल आते हैं
ऐसी ख़बरें पढ़-सुनकर
आम जन विस्मित स्तब्ध रह जाते हैं ।

फल-फूल रहा है भ्रष्टाचार बढ़ रही है महंगाई
खुलेआम की जा रही है काली कमाई
जो जहां है वहीं अपना घर भरने में लगा है
हर काम में कमीशनख़ोरी है घपला है घोटाला है ।

जिधर देखें वहीं मिलीभगत का खेल है
नेता नौकरशाह माफ़िया में पूरा तालमेल है
पैसा ही सब कुछ है पैसे की रेलपेल है
ऐसे ही हाथों में व्यवस्था की नकेल है !

क्यों भूल गये हैं यह लोग
सदियों की गुलामी का त्रासद इतिहास
अपने तुच्छ निहित स्वार्थों में अंधे होकर
क्यों धकेल रहे हैं देश को फिर से
उसी अंधी गहरी खाई की ओर ।

जिन अपनी अगली पीढ़ियों के लिए
ऐशोआराम का प्रबंध करने हेतु
यह लोग कर रहे हैं देश से द्रोह
और देश के आम जन से दग़ा-
यक़ीन मानिए, इतिहास गवाह है
कि कभी नहीं होगा
ऐसी कमाई से उनका भला ।

ओमप्रकाश बजाज

बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर-482001 (म०प्र०)



कहां क्या है ?

छापे (कविता)	–ओमप्रकाश बजाज	3
कुरआन ज्योति		5
अल्लाह का ज़िक्र (हदीस मंजरी)		6
सफलता का राज़ (संपादकीय)		7
बेवजह का हंगामा (आपके पत्र)		9
कुरआन मजीद की विशेषताएं (आस्था)	–सैयद मुनव्वर हुसैन	13
ग़ज़ल	–'दरवेश' भारती	14
पशु-पक्षी, पर्यावरण भी दया के पात्र (आस्था)	–डॉ॰ फ़रहत हुसैन	15
मेरे सपनों का भारत (दृष्टिकोण)	–मुहम्मद अली शाह शुऐब	17
अश्लील विज्ञापनों पर अंकुश लगे (ज्वलंत सामयिक)	–डॉ॰ विभा सिंह	21
केदारनाथ सिंह को ज्ञानपीठ (साहित्यिकी)	–मुहम्मद इलियास हुसैन	23
हिन्दी भाषा और मुसलमान (विशेष आयोजन)	–ज़हीर ललितपुरी	26–27
और मैं ख़ामोश रहा	–कमला भसीन	28
शाह आलमे सानी की 'नादिराते शाही' (विशेष आयोजन)	–डॉ॰ किश्वर सुल्ताना	29
संस्कृत की धौंस ? (विशेष आयोजन)	–डॉ॰ सुरेन्द्र अज्ञात	31
झूठा निकला क़रार तेरा	–इंशा अल्लाह ख़ां 'इंशा'	32
बातों-बातों में (कहानी)	–डॉ॰ सलीम ख़ान	33
विश्वव्यापी निशस्त्रीकरण की दिशा में उठाएं सार्थक क़दम (विचारणीय)	–डॉ॰ जगदीश गांधी	37
कथा सत्यनारायण की (उद्‌गार)	–रचना रस्तोगी	41
तालियां, घोषणा पत्र (लघुकथा)	–रोहित यादव	42
मुद्दों से ध्यान हटाने की कला (विचार)	–सी॰के॰ रहमानी	43
अस्ल गुनहगार है हमारा लोकतंत्र (अख़बारों से)	–विभांशु द्विव्याल	45
समकालीन सामाजिक विसंगतियां (पुस्तक समीक्षा)	–डॉ॰ सूर्यप्रसाद शुक्ल	47
ठंड को भगाएं कोसों दूर (स्वास्थ्य चर्चा)	–डॉ॰ अनुराग श्रीवास्तव	48
समय का दुरुपयोग न करें (बालवीथी)	–विद्या प्रकाश	49

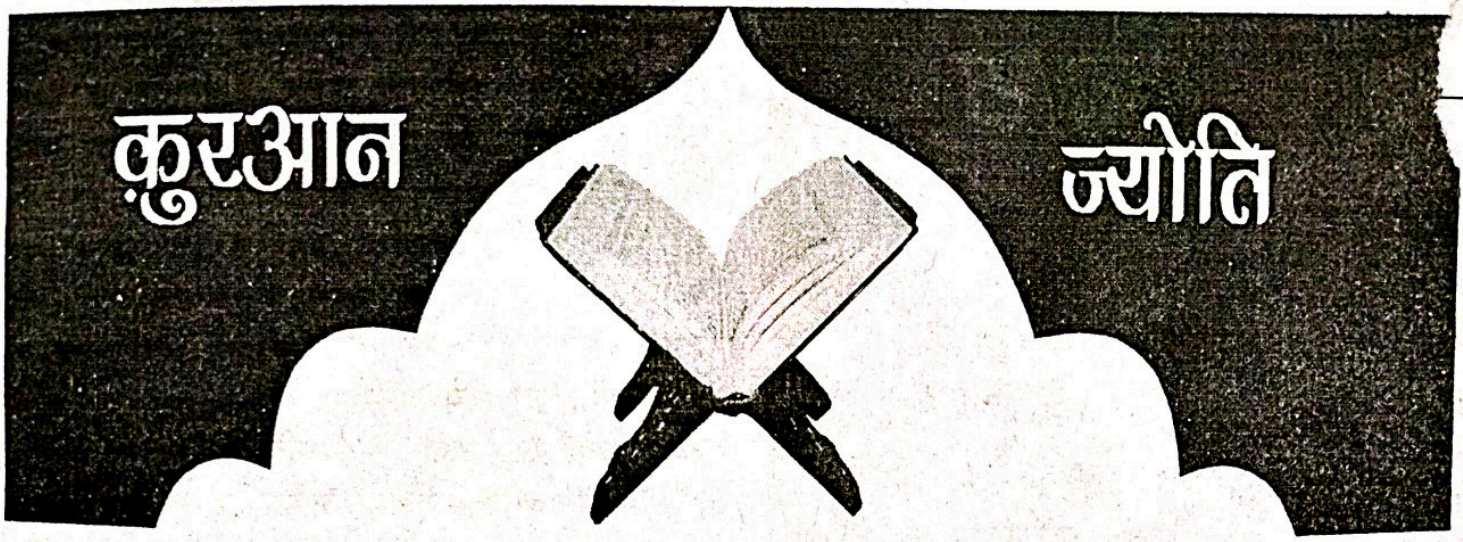

(64) ऐ नबी, इनसे कहो, "और हंसी उड़ाओ ! अल्लाह उस चीज़ को खोल देने वाला है जिसके खुल जाने से तुम डरते हो ।" (65) अगर इनसे पूछो कि तुम क्या बातें कर रहे थे, तो झट कह देंगे कि हम तो हंसी-मज़ाक़ और दिल्लगी कर रहे थे ।[73] इनसे कहो, क्या तुम्हारी हंसी-दिल्लगी अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूल ही के साथ थी ? (66) अब बहाने न गढ़ो । तुमने ईमान लाने के बाद इन्कार किया है । अगर हमने तुममें से एक गिरोह को क्षमा कर भी दिया तो दूसरे गिरोह को तो हम ज़रूर सज़ा देंगे, क्योंकि वह अपराधी है ।[74]

–क़ुरआन, 9 : 64-66

---

73. तबूक की लड़ाई के समय में मुनाफ़िक़ प्राय: अपनी सभाओं में बैठकर नबी (सल्ल॰) और मुसलमानों का मज़ाक़ उड़ाते थे और अपने मज़ाक़ से उन लोगों का मनोबल तोड़ने का यत्न करते थे जिन्हें वे निष्ठापूर्वक जिहाद पर तैयार पाते थे । चुनांचे रिवायतों में इन लोगों की बहुत-सी बातें नक़ल हुई हैं, जैसे एक सभा में कुछ मुनाफ़िक़ बैठे गप्प लड़ा रहे थे । एक ने कहा, "अजी, क्या रूमियों को भी तुमने कुछ अरबों की तरह समझ रखा है ? कल देख लेना कि ये सब योद्धा जो लड़ने के लिए आये हैं, रस्सियों में बंधे हुए होंगे ।" दूसरा बोला, "मज़ा हो जो ऊपर से सौ-सौ कोड़े भी लगाने का आदेश हो जाए ।" एक और मुनाफ़िक़ ने नबी (सल्ल॰) को लड़ाई की सरगर्म तैयारियां करते देखकर अपने यार-दोस्तों से कहा, "आपको देखिये, आप रूम व शाम के क़िले जीतने चले हैं ।"

74. अर्थात, वे मूर्ख खिल्ली उड़ाने वाले तो क्षमा किये जा सकते हैं, जो केवल इसलिए ऐसी बातें करते और उसमें रुचि लेते हैं कि उनके निकट दुनिया में कोई चीज़ गंभीर है ही नहीं, लेकिन जिन लोगों ने जान-बूझकर ये बातें इसलिए की हैं कि वे रसूल और उसके लाए हुए दीन को अपने ईमान के दावे के बावजूद एक उपहास समझते हैं और जिनके इस उपहास का वास्तविक उद्देश्य यह है कि ईमान वालों के मनोबल टूटें और वे पूरी शक्ति के साथ जिहाद की तैयारी न कर सकें, उनको तो कदापि क्षमा नहीं किया जा सकता क्योंकि वे मज़ाक़ उड़ाने वाले नहीं, बल्कि अपराधी हैं ।

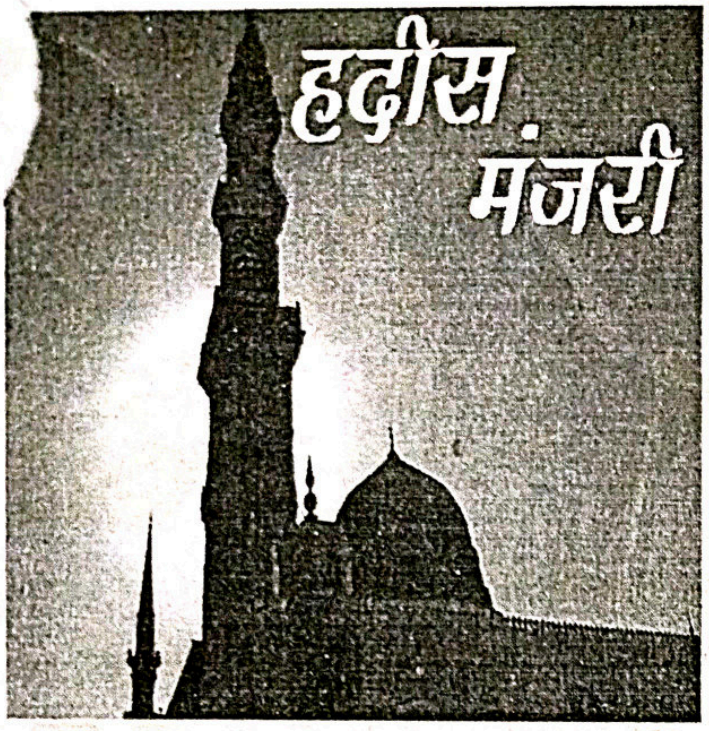

अल्लाह का ज़िक्र

ज़िक्र का माहात्म्य और इस पर उभारना

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "दो शब्द ऐसे हैं जो ज़ुबान के लिए तो बहुत हल्के हैं, तौल में बहुत भारी हैं और रहमान (अत्यंत कृपाशील अल्लाह) को बहुत प्रिय हैं : 'सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही, सुबहानल्लाहिल अज़ीम' (महान है अल्लाह और प्रशंसा उसी के लिए है, महान है अल्लाह जो अत्यंत बड़ाई वाला है ।)" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "अगर मैं यह कहूं : 'सुबहानल्लाहि अलहम्दुलिल्लाह व ला इलाह इल्लल्लाह' (महान है अल्लाह और प्रशंसा अल्लाह के लिए है और अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है) तो यह मुझे हर उस चीज़ से अधिक प्रिय है जिस पर सूर्य उदय होता है ।" –मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जिसने ये शब्द एक दिन में सौ बार कहे : 'ला इलाह इल्लल्लाह वहदहू ला शरीक लहु लहुलमुल्क व लहुलहम्द व हुवा अला कुल्लिशैय्यिन क़दीर' (अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह एक है उसका कोई साझी नहीं, बादशाही उसी की है, प्रशंसा उसी के लिए और उसे हर चीज़ पर पूर्ण सामर्थ्य प्राप्त है) तो उसका यह कहना दस दास मुक्त करने के समान होगा और उसके लिए सौ नेकियां लिखी जाएंगी और उसके सौ गुनाह क्षमा कर दिये जाएंगे । और ये उस दिन संध्या तक उसके लिए शैतान से बचाव का कारण बनेंगे । और कोई व्यक्ति उससे अच्छा कर्म लेकर नहीं आएगा सिवाय उस व्यक्ति के जो उससे ज़्यादा (पढ़ने का) अमल कर ले ।" और आपने कहा : "जिस ने एक दिन में सौ बार 'सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही' (महान है अल्लाह और प्रशंसा उसी के लिए है) कहा, तो उसके गुनाह क्षमा कर दिये जाते हैं यद्यपि वे समुद्र के झाग के बराबर ही क्यों न हो ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू अय्यूब अल-अंसारी (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "जिस किसी ने दस बार कहा कि 'अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह एक है उसका कोई साझी नहीं, उसी की बादशाही है और उसी की प्रशंसा है और उसे हर चीज़ पर पूर्ण सामर्थ्य प्राप्त है' तो वह उस व्यक्ति जैसा है जिसने इस्माईल की संतान से चार गुलामों को मुक्त किया ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू ज़र (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने मुझसे कहा : "क्या मैं तुम्हें उस सूत्र-वाक्य की सूचना न दूं जो अल्लाह के यहां सबसे अधिक प्रिय है ? निश्चय ही अल्लाह के यहां सबसे प्रिय सूत्र-वाक्य है : 'सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही' (महान है अल्लाह और प्रशंसा उसी की है।)" –मुस्लिम

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

सफलता का राज़

हमारा देश इस समय अत्यंत गंभीर और चिंतनीय स्थिति से गुज़र रहा है । जिधर भी नज़र दौड़ाइए, हर जगह अनैतिक और अमानवीय चीज़ें पनप रही हैं । हद तो यह कि जिन पर पूरी मानवता और भारतीय संदर्भ में देशवासियों को सुधारने व सीधा मार्ग बताने की ज़िम्मेदारी है, वे भी अपना काम सुचारू रूप से नहीं कर पा रहे हैं । देश के बृहत्तर और सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार सिर उठाकर बोल रहा है, नैतिक पतन की निकृष्टतम अवस्था दिखायी देने लगी है, भौतिकवाद और विलासिता की आंधी ने सारी शुचिता व पवित्रता भंग कर दी है, मानवीय रिश्तों और रिश्तेदारी-नातेदारी के बंधन ढीले पड़ रहे हैं–माता, पिता, भाई, बहन, पुत्र, पुत्री के बीच परस्पर स्वाभाविक प्रेम, सामंजस्य, सम्मान एवं करुणा जैसी भावनाएं लुप्त होती जा रही हैं । इन्सान को उसकी धनप्रियता और स्वार्थप्रियता डसे जा रही है । अनैतिक कार्यों और साधनों से धन की थैलियां भरी जा रही हैं, मंत्री से लेकर संतरी तक सभी इस काम को भली-भांति जी-जान लगाकर अंजाम दे रहे हैं । मानो ऐसा है कि जल्द से जल्द जिस्म की ''धनरूपी'' चमड़ी को मोटी बनाने का उपक्रम चल रहा है । नये-नये घोटाले सामने आ रहे हैं, जनता की ख़ून-पसीने की गाढ़ी कमाई चंद भ्रष्ट लोगों तक सिमट रही है । यह इस देश की कटु सच्चाई है कि यहां के बृहत्तर समाज पर एक ख़ास क़िस्म की विकृत मानसिकता हावी रही है, जो विभिन्न समस्याओं और बिगाड़ का कारण सिद्ध हो रही है । इसी मानसिकता के कारण बड़ी आबादी का दूल्हा घोड़े पर सवार नहीं हो सकता, एक ही मौलिक तत्वों से बना इन्सान दूसरे इन्सान के बराबर नहीं बैठ सकता, वह बेगारी करने को भी बाध्य है, जब अपने अधिकार के लिए खड़ा होता है तो सामंतवादी लोगों की प्रताड़नाएं उसे दबा देती हैं । औरतों की स्थिति और भी दयनीय है । मीडिया तक जो ख़बरें पहुंचती है उनसे पता चलता है कि महिलाओं के साथ बलात्कार की हद तक बात पहुंच जाती है । इन निन्दनीय घटनाओं को रोकने के लिए जो प्रयास किये जाते हैं, विकृत मानसिकता जिसका सरकार और प्रशासन में असर बढ़ता जा रहा है, इन पर पानी फेर देती है । फिर अपने को दूध का धुला साबित करने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपनाती है । इस दोहरी चरित्र वाली मानसिकता को तत्काल रूप से ध्वस्त कर देने की ज़रूरत है ।

देश इस समय जिन समस्याओं और विसंगतियों से दो-चार है, उनका निदान उस समय तक संभव नहीं है, जब तक कि लोगों को मानसिक रूप से प्रशिक्षित न किया जाए । इसके लिए उन मूल्यों, मान्यताओं और आदर्श को अपनाना ज़रूरी है, जो वास्तविक हैं । यह सच है कि इन्सान को दुनिया के जीवधारियों पर श्रेष्ठता प्राप्त है । फिर भी इन्सान से अपेक्षा नहीं है कि वह स्वच्छंद जीवन गुज़ारे, बल्कि उसके जीवन गुज़ारने के लिए ईश्वर ने आदेश और निर्देश दिये हैं, जिनका पालन करके वह सांसारिक और पारलौकिक जीवन की सफलता सुनिश्चित कर सकता है । जो इनसे हटता है, देखा गया है और यह सर्वमान्य सच्चाई है कि उसके जीवन में बिगाड़ आ जाता है और वह तरह-तरह के अस्वाभाविक समस्याओं में घिर जाता है । यहां यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि जीवन गुज़ारने के लिए इन्सान को वास्तविक शिक्षाएं कैसे प्राप्त हों और उसे आदर्श जीवन का नमूना कैसे मिले, जो हर क़िस्म की मिलावट और अतिरंजना से पाक हो । इन प्रश्नों का उत्तर बहुत

सरल है । यह एक स्वयंसिद्ध सच्चाई है कि इस्लाम की शिक्षाएं सारी मानवता के लिए हैं । इनकी विशेषता यह भी है कि ये हर ज़माने और काल में प्रासंगिक एवं मानवानुकूल रही हैं और आने वाले समय में भी इनकी उपादेयता घटने की गुंजाइश नहीं है । ये शिक्षाएं ईश्वरीय और सनातन शिक्षाएं हैं, जो संशोधन, परिवर्तन और परिवर्धन से सुरक्षित रही हैं । इस बात का पूरा इन्तिज़ाम कर दिया गया है कि ये क़ियामत तक इन विकृतियों से बची रहेंगी । इसी प्रकार हम अल्लाह के अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के पवित्र और आदर्श जीवन को हर प्रकार की गड़बड़ियों से मुक्त पाते हैं । संसार में जितने सत्य-सन्देश सुनाने वाले आये हैं, सबने अपना जीवन उन झूठे ईश्वरों के ईश्वरत्व का अंत करने में व्यतीत कर दिया, जिन्हें इन्सान ने एकमात्र ईश्वर को छोड़कर अपना ईश्वर बना लिया था । परन्तु सदैव यही होता रहा कि उनके बाद उनके अनुयायियों ने अज्ञानतापूर्ण श्रद्धा और अंधविश्वास के कारण स्वयं उन्हीं को भगवान या ईश्वरत्व में भगवान का भागी बना लिया और वे भी उन्हीं उपास्यों में शामिल कर लिए गये जिनके खंडन में उन्होंने अपना सारा जीवन लगा दिया था । संसार के सारे सन्मार्ग दर्शकों में यह विशिष्टता केवल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को प्राप्त है कि आपकी शिक्षा और आपका व्यक्तित्व शताब्दियों से सर्वथा अपने यथार्थ रूप में सुरक्षित है और अल्लाह की कृपा से ऐसा प्रबंध हो गया है कि इसका बदलना असंभव है । वास्तव में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का व्यक्तित्व सारे विश्व के लिए एक अनुकरणीय आदर्श है और संपूर्ण जीवन-नीति के उत्कर्ष एवं शिष्टता की पराकाष्ठा का यथार्थ मानदंड है । आइए हम हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के बताये सीधे मार्ग पर चलकर अपने सांसारिक एवं पारलौकिक जीवन को संवारें । विभिन्न समस्याओं के छुटकारे के लिए हमें इस्लाम की शिक्षाओं का अनुपालन करना चाहिए ।

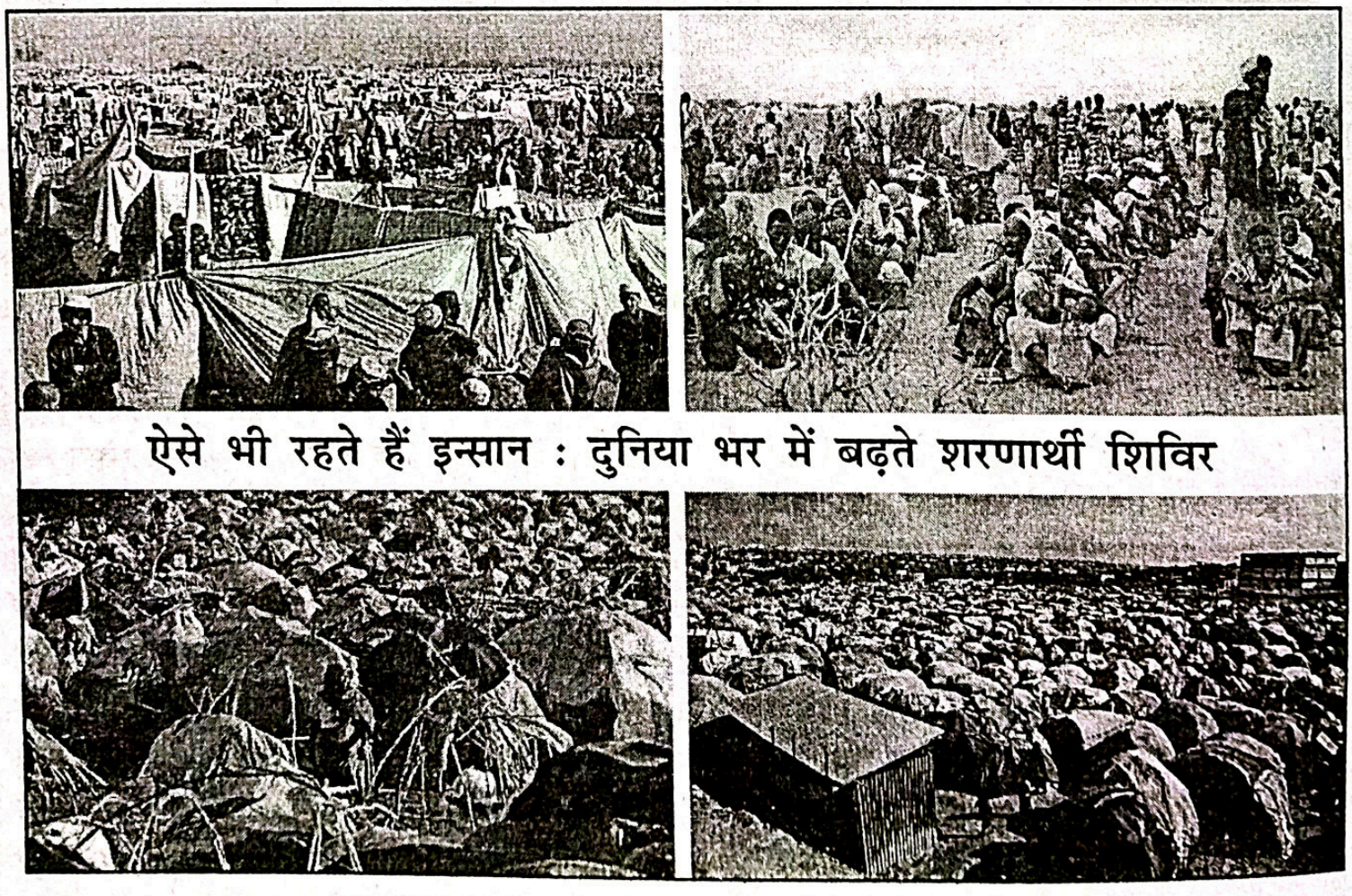

ऐसे भी रहते हैं इन्सान : दुनिया भर में बढ़ते शरणार्थी शिविर

बेवजह का हंगामा

पिछले दिनों अंग्रेज़ी, हिन्दी मीडिया के बड़े वर्ग तथा केन्द्रीय मंत्री द्वारा अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी के उपकुलपति के एक संबोधन को अनावश्यक रूप से दुष्प्रचार का बहाना बना लिया है । स्थिती यह है कि विश्वविद्यालय का महिला संभाग मुख्य कैम्पस से 2½-3 किलोमीटर दूर है । महिला कॉलेज के कैम्पस में हॉस्टल तथा कॉलेज, लाइब्रेरी, क्रीड़ा स्थल सब कुछ है । जिस लाइब्रेरी में नहीं जाने देने की बात है वह सिर्फ़ अन्डर ग्रेजुएट छात्राओं की है । इससे आगे रिसर्च इत्यादि की छात्राएं वहां आ-जा सकतीं हैं । यह लाइब्रेरी महिला कैम्पस से दूर भी है और रास्ता भी बहुत टेढ़ा भीड़-भाड़ वाले बाज़ार से होकर गुज़रता है ।

जो ज़्यादा तर्कसंगत हल था वह यह कि वर्तमान में चल रही महिला कॉलेज की लाइब्रेरी को मुख्य लाइब्रेरी के पास लाया जाए ताकि वह बग़ैर असुविधा के समय तथा साधन की बचत करके सुरक्षित रहकर लाइब्रेरी का लाभ उठा सकें, परन्तु इसको छोड़कर पिछले कई वर्षों से हर वर्ष इसी बात को मुद्दा बनाकर विश्वविद्यालय को बदनाम किया जाता है । जबकि महिला कालेज की यूनियन पदाधिकारी ने और भी समस्याएं बतायी थीं पानी कम होना, इमरजेंसी डिस्पैंसरी नहीं होना, मेस में औसत खाने का नहीं होना इत्यादि समस्याएं मीडिया तथा मंत्री श्रीमती नजमा हैबतुल्लाह का ध्यान आकर्षित नहीं करा पायी ऐसा क्यों है ? सिवाय इसके कि मीडिया और विश्वविद्यालय के दुश्मन अधिकारी मिलकर इसके विरुद्ध षड्यंत्र रचकर ए०एम०यू० में भी वही बेहुदगी और जींस, टाप कल्चर फैलाना चाहते हैं जो दूसरे कैम्पसों में है । ताकि यहां भी वही यौन उत्पीड़न, छेड़छाड़, साइबर क्राइम, अश्लील एस०एम०एस० महिला केन्द्रित गैंग वार आदि शुरू हो जैसा दूसरी जगहों पर हो रहा है ।

सर सैयद हो या महिला कॉलेज के संस्थापक अब्दुल्लाह या मौलाना आज़ाद सबके सब महिला शिक्षा के हामी थे परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि वे आवश्यक रूप से सहशिक्षा के भी हामी थे । वे रिवाजी परदे तथा इस्लामी परदे में फ़र्क़ की बात तो करते थे परन्तु ऐसा नहीं है कि वे परदे के बग़ैर ही महिला शिक्षा के समर्थक थे ।

अलीगढ़ मात्र एक शिक्षण संस्थान नहीं है यह एक सांस्कृतिक संस्थान भी है । यहां की अपनी तहज़ीब है यहां के छात्रों पर भी बहुत सी पाबन्दियां हैं । उनके लिए भी ड्रेस कोड है । हॉस्टल में उनके लिए भी नियम-क़ायदे हैं । प्रोपगैंडा ऐसा किया जा रहा मानो कि सारे नियम-क़ायदे मात्र छात्राओं के लिए है । परन्तु वास्तविकता यह है कि आज छात्राओं के लिए सबसे सुरक्षित माहौल है तो यहीं पर है ।

इस हक़ीक़त को छुपाया जाता है । एक दो पथ भ्रष्ट छात्राओं के भ्रष्ट विचारों को पूरे विश्वविद्यालय की संस्कृति को भ्रष्ट व नष्ट करने के लिए स्वतंत्र नहीं छोड़ा जा सकता । यह कोई महिला हित की बात नहीं है कि पहले जुर्म के लिए माहौल बनाओ फिर उसके बुरे नतीजे निकलें तो फिर हंगामा मचाकर टी०आर०पी० बढ़ाओ ।

डॉ० एम० अजमल
15-गांधी रोड, देहरादून

अब इंटरनेट से क़ुरआन और हदीस की पढ़ाई

मदरसों और मकतबों में होने वाली क़ुरआन शरीफ़ और हदीस की पढ़ाई अब हाईटेक हो चुकी है । विदेशों में रहने वाले प्रवासी भारतीयों तथा विदेशी छात्र भारतीय उस्तादों से जुड़कर मज़हबी व आसमानी किताब के जानकार बन रहे हैं । उ०प्र० के इलाहाबाद में ऐसे अनेक क़ाबिलो माहिर उस्ताद हैं जो इस मामले में सोशल साइट तथा चुनिन्दा वेबसाइट के माध्यम से छात्र समूह को प्रशिक्षित कर रहे हैं । इस प्रक्रिया से तालिबे इल्म तथा उस्ताद दोनों ही फ़ायदे में रहते हैं । इस माध्यम तथा व्यवस्था से जहां विदेशों में रहने वाले छात्रों को क़ुरआन मजीद व हदीस की विधिवत तालीम हासिल हो रही है, वहीं यहां मदरसों व मकतबों के उस्तादों के लिए यह आमदनी व कमाई का अतिरिक्त ज़रिया बन रहा है ।

विदेशों में धार्मिक शिक्षा को गहराई व असरदार तरीक़े से पहुंचाने में हिन्दुस्तानी शिक्षकों व प्रशिक्षकों की काफ़ी मांग है । एशिया तथा यूरोप के विभिन्न देशों और अमेरिका

में इस अनुपात में देश से प्रशिक्षित मौलवियों का जा पाना व्यावहारिक असुविधाओं के चलते मुमकिन नहीं हो पाता । इस स्थिति को देखते हुए इंटरनेट तथा चुनिन्दा वेबसाइटों ने इस दिशा में ज़रूरतमन्दों के लिए कुछ सहूलत प्रदान की है ।

विदेशों में कुछ निर्धारित संस्थानों ने यहां के आलिमों तथा मुफ़्तियों से प्रशिक्षण का क़रार किया है । छात्रों के निर्धारित समूह यहां के आलिमों से राबिता क़ायम कर मज़हबी मामलात में न केवल तबादला-ए-ख़यालात व राय मशविरा कर रहे हैं, बल्कि कुरआन की तालीम भी हासिल कर रहे हैं । ऐसे छात्र एकल अथवा समूह में संबंधित मौलवी को उसका मुनासिब मेहनताना भी बाख़ुशी देते हैं इलाहाबाद में मदरसा वसीअतुल उलूम के सचिव मौलाना अहमद मकीन का कहना है कि विदेशों में मज़हबी मामलात में इस्लाह की मांग बराबर बनी रहती है । विदेशों में अनेक मुल्क हिन्दुस्तान के आलिमों की बातों को तरजीह देते हैं । निकाह, तलाक़, हराम-हलाल, तालीमो-तर्बियत, औरत-मर्द व औलाद से जुड़े मसायल, तहरीक व मुशाअरे में मुख़ालिफ़ तब्दीली पर मशविरा अथवा फ़तवा के मक़सद से विदेशी हिन्दुस्तान के आलिमों से इस्लाह कराना ज़्यादा पसन्द करते हैं । इसके लिए वे सोशल मीडिया में फेसबुक और ट्वीटर पर सीधे जुड़ते हैं, अपनी बात कहते हैं तथा उसका हल मालूम करते हैं ।

जहां तक कुरआन व हदीस व इस्लामी मामलात की तालीम का सवाल है, वे मदरसों के उस्ताद तथा मकतबों में मुफ़्ती से संपर्क में रहते हैं । विदेशों में ऐसे काफ़ी छात्र हैं जो धार्मिक शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं लेकिन उन्हें वहां पर ऐसे शिक्षक या शिक्षण केन्द्र नहीं मिलते जो उनकी जिज्ञासा का आसानी से समाधान कर सकें । ऐसे छात्र इंटरनेट या निर्धारित वेबसाइट पर संपर्क स्थापित कर कंप्यूटर से सीधे शिक्षा प्राप्त करते हैं । उस्ताद उन्हें अरबी जुबान की प्रारंभिक वर्णमाला से लेकर शब्द रचना, वाक्य रचना, पैराग्राफ़ आदि के संबंध में समझाते हैं । उस्ताद उन्हें अरबी लिपि के साथ धार्मिक शिक्षा प्रदान करने में उनकी ऑनलाइन मदद करते हैं ।

खाड़ी के मुस्लिम देशों में इस प्रकार के प्रशिक्षण की व्यवस्था तो हो जाती है मगर ब्रिटेन, अमेरिका तथा अन्य यूरोपीय देशों में मुफ़्ती स्तर का व्यक्ति तालिब-इल्म को समूह में कुरआन की अहमियत, उसके सही शुद्ध उच्चारण व लफ़्ज़ों की मश्क़ कराता है । विदेशी छात्र दारुल उलूम, देवबन्द तथा नदवातुल उलूम, लखनऊ जैसी शीर्षस्थ मज़हबी वेबसाइटों पर बराबर आनॅ लाइन मशविरा तथा सवालात करते रहते हैं ।

आजकल बाज़ारों में इस्लामी मज़हबी मामलात से जुड़े मोबाइल हैंडसेट भी उपलब्ध हैं । इस दिशा में इंडोनेशिया, मलेशिया आदि देशों के मोबाइल हैंडसेट प्रमुख हैं । इनके ज़रिये विदेशी तथा जिज्ञासु जन को कुरआन, हदीस, रोज़ा-नमाज़ आदि के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जानकारी उपलब्ध कराना है, जिसमें ऐसे मोबाइल हैंडसेट काफ़ी हद तक कामयाब भी हैं ।

विद्या प्रकाश
अचला घाट मार्ग, सिपाह,
जौनपुर (उ०प्र०)

इन्साफ़ की बलि

गौतल नवलखा ने कहा कि एजेंसियों पर राजनैतिक दबाव होता है जो इस समस्या को और विकराल बना देता है । आज विभाजनकारीं राजनीति ही भाजपा की कथित विकास की राजनीति का हिस्सा है । उन्होंने क़हा कि बड़े आर्थिक बदलावों से उपजने वाले विरोधों से ध्यान हटाने के लिए भी आतंकवाद का इस्तेमाल होता है । उत्तर प्रदेश के राजनैतिक हालातों का ज़िक्र करते हुए उन्होंने साफ़ कहा कि प्रदेश में चाहे जो चुनाव जीते, वी०एच०पी० के लोगों को, अपने काम करने के तरीक़ों में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता । सपा सरकार उनकी खुली मदद कर रही है ।

उन्होंने कहा कि आज इस देश के लिए भयावह वक़्त है । भाजपा केवल मुसलमानों के लिए हानिकारक नहीं है । यह पूरे समाज के लिए हानिकारक है । उन्होंने कहा कि हमें जोड़ने वाली चीज़ों की तरफ़ देखने की ज़रूरत है । जो क़ानून लोगों के बीच में विभेद करता हो उनका विरोध करना ही होगा । अगर क़ानून सबको बराबरी का दर्जा देता है तो फिर विभेदकारी यू०ए०पी०ए० क़ानून की ज़रूरत क्या है । यू०ए०पी०ए० जैसा क़ानून किसी अन्य मुल्क में नहीं है । इन काले क़ानूनों के ख़िलाफ़ सड़क पर उतरना होगा ।

शहनवाज़ आलम
प्रवक्ता, रिहाई मंच, लखनऊ

शिक्षा का उद्देश्य

'कान्ति' मासिक अंक नवम्बर 2011 का अंक प्राप्त हुआ। दृष्टिकोण के अंतर्गत शीर्षक शिक्षा, व्यावहारिक ज्ञान और समग्र विकास लेखिका डॉ॰ अर्चना रानी वालिया को मैंने सरसरी दृष्टिकोण से अध्ययन किया। मैं लेखिका के शिक्षा के संबंध में सारगर्भित विचारों का पूर्णतया समर्थक हूं। सारांश रूप में यही ज्ञात हुआ, वर्णन इस प्रकार है–

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य यही है कि जीवन जीने की कला मानव को आ जानी चाहिए, ताकि मानव भविष्य में सच्चा चरित्र व व्यावहारिक ज्ञान बना सके। व्यावहारिक शिक्षा का तात्पर्य यही है कि विषयों का बोझ कम हो, शिक्षा ख़र्चीली नहीं हो, आरक्षण व जातिगत भेदभाव नहीं हो, समस्त वर्ग के बच्चों को अपनी योग्यता का बढ़ावा देने का पूर्ण मापदंड निर्धारित हो। ऐसा भी सुनने में आता है कि यौन शिक्षा भी बच्चों में करवाई जाए। मेरी समझ में नहीं आता कि इस प्रकार की शिक्षा दिलाकर के बच्चों में चारीत्रिम हीनता की भावना विकसित करना चाहते हैं। इससे वेश्यावृत्ति को बढ़ावा मिलेगा। इस शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं।

आवश्यकता योग शिक्षा की है जिससे बच्चों का शारीरिक स्वास्थ्य ठीक होने से मानसिक स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। टी॰वी॰ के बन्दे विज्ञापन व मोबाइल की गन्दगी संस्कृति ने बच्चों में नैतिक शिक्षा का ह्रास किया है।

अंत में मेरा यही विचार है कि शिक्षा का व्यावहारिक प्रारूप ऐसा हो कि भविष्य में बच्चे के जीवन का सर्वांगीण विकास हो। बच्चे में आत्मविश्वास, आत्मानुभूति, आत्म नियंत्रण व आत्म स्वावलंबन की भावना विकसित हो सके। यही व्यावहारिक ज्ञान और समग्र विकास का मापदंड है।

अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूलों को बढ़ावा देने से पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति का विकास हो रहा है। इसी के कारण वर्तमान युवा पीढ़ी की चाल-चलन आचार-विचार, रहन-सहन, खान-पान आदि विपरीत होते जा रहे हैं। पैसा नहीं होने पर भी निम्न व मध्यम वर्ग के अभिभावक ऋण लेकर अपने बच्चों को इन स्कूलों में अध्ययन के लिए भेज रहे हैं। विचार तो अनेक हैं परन्तु मैं इस संबंध में अधिक क्या लिखूं।

रामस्वरूप झैवर
9-10 शास्त्रीनगर-विस्तार, नीलवाड़ा (राज॰)

भविष्यवाणियां

वैदिक धर्म हो या बौद्ध धर्म, ईसाईयत हो या यहूदियत, प्रत्येक धर्म के धार्मिक ग्रंथों में ईश्वर के भेजे हुए ईशदूतों के संबंध में, भविष्यवाणियां की गयी हैं, किन्तु जितनी अधिक भविष्यवाणी पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के बारे में की गयी है, उतनी किसी दूसरे पैग़म्बर के बारे में नहीं की गयी।

ईसाई धार्मिक ग्रंथ 'इंजील' में मुहम्मद "अहमद" (सल्ल॰) और बाइबल में "पैराक्लीट" और यूनानी भाषा में "फ़ारक़लीत" के नाम से आपके आगमन की पहले ही सूचना दी गयी है।

यहूदी धार्मिक ग्रंथ "तौरेत" में जो मूसा के समान हो और उसके भाइयों के मध्य से हो और जो ईश्वरीय वचनों को प्राप्त करके उन्हें प्रसारित करता हो कहकर, "आपके पैदा होने की सूचना दी गयी है।"

गौतम बुद्ध ने अपने प्रिय सेवक नन्दा को आने वाले बुद्ध ऋषि पैग़म्बर का नाम "मैत्रेय" बताया है।

तो आग के पुजारियों के धार्मिक ग्रंथ "जन्द-ओस्ता में इस्तूत अरीता" और "अश्ज़रीका" कहकर पैग़म्बरे इस्लाम की आगमन की भविष्यवाणी की है।"

वेदों में नारशंस और "कीरि" के नाम से आपके आगमन की पूर्व सूचना दी गयी है।"

पुराणों में कल्कि अवतार के नाम से आपके जन्म की पूर्व चर्चा की गयी है।

उपनिषदों में "महामद" रसूल कहकर आपके विषय में भविष्यवाणी की गयी है। तो भगवत पुराण में "मुहम्मद" के नाम से आपके संबंध में सूचना दी गयी है।

भविष्य पुराण में "मुहम्मद" कहकर आपके जन्म की पूर्व ख़बर दी गयी है। संग्राम पुराण में भी महामद उच्चारण के साथ आपके पैदा होने की सूचना दी गयी है।

भारत में प्राचीन काल में मृत्यु कष्ट से बचने के लिए अगर कान में मुहम्मद नाम जपने की अन कही कहते थे।

तो तुलसीदास बिना नामे मुहम्मद के स्वर्ग में प्रवेश वर्जित बताया करते थे।

"निष्कर्ष यह है कि प्रत्येक धर्म-ग्रंथ में कल्कि अवतार पैग़म्बरे इस्लाम के आगमन की भविष्यवाणी की गयी है।

शीराज़ी ज़ैगम
जलालाबाद, शाहजहांपुर (उ॰प्र॰)

हमारी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें

इस्लाम एक सामान्य परिचय	—शैख़ अली तंतावी	90.00
इस्लाम एक स्वयंसिद्ध ईश्वरीय जीवन व्यवस्था	—राजेन्द्र नारायण लाल	25.00
प्यारे नबी की पाक ज़िन्दगी	—एजाज़ुल हक़ क़ुद्दूसी	30.00
इतिहास के साथ यह अन्याय	—बी॰ एन॰ पाण्डे	7.00
मेरे दावती तजुर्बात (प्रथम)	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	25.00
ग़लत फ़हमियों का निवारण	—डॉ॰ ज़ाकिर नाइक	25.00
क़ुरआन और हम मुसलमान	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
क़ुरआन का पैग़ाम	—ख़ुर्रम मुराद	10.00
क़ुरआन पर अनुचित आक्षेप	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
हमें ख़ुदा कैसे मिला?	—अब्दुल ग़नी फ़ारूक़	100.00
इस्लाम आतंक या आदर्श?	—स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य	40.00
इस्लाम और इनसान (1-6)	—डॉ॰ सैयद शाहिद अली	84.00
दलित समस्या जड़ में कौन?	—इन्तिज़ार नईम	140.00
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और भारतीय धर्म-ग्रंथ	—डॉ॰ एम॰ ए॰ श्रीवास्तव	18.00
इस्लामी सभ्यता	—मुंशी प्रेम चन्द्र	5.00
क़ुरआन पुकारता है "ऐ लोगो..."	—मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
आधुनिक नारी	—नुज़हत यासमीन	10.00
इस्लाम एक मात्र रास्ता	—मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
शैतानी धोखे के विभिन्न रूप	—डॉ॰ सैयद शाहिद अली	40.00

हमारी सभी पुस्तकें मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स से भी प्राप्त की जा सकती हैं।

MADHUR SANDESH SANGAM

E-20, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
E-mail : madhursandeshsangam@yahoo.co.in, Ph. : 9212356332

क़ुरआन मजीद की विशेषताएं

■ सैयद मुनव्वर हुसैन

अल्लाह का कलाम पवित्र क़ुरआन मजीद एक ऐसा मोजिज़ (चमत्कार) था, जिसका तोड़ किसी के पास न था। न उसका कोई जोड़ था और न ही उसका मुक़ाबला करना किसी के बस की बात थी। इसकी कोई बात भी ऐसी न थी, जिस पर पकड़ की जा सके। यह ज़ुबानों को मूक कर देने वाला और चेहरों की रंगत उड़ा देने वाला कलाम था। यह बार-बार अपने मुख़ातिबीन और इन्कर करने वालों को चैलेंज करता था और उसके चैलेंज का किसी के पास कोई उत्तर न था।

आज तक विश्व में किसी ने इतना बड़ा दावा नहीं किया, जितना बड़ा दावा आप (सल्ल०) का था कि आप रहमतुल्लिल आलमीन (सारे संसार के लिए रहमत) हैं, अंतिम नबी हैं और आप सारी दुनिया के लिए पथप्रदर्शक बनाकर भेजे गये हैं। अपने इस महान दावे के प्रमाण में आप (सल्ल०) ने एक किताब पेश कर दी और उस किताब ने सारी दुनिया को चैलेंज कर दिया। इस किताब के सामने आज तक किसी को बोलने का साहस न हुआ।

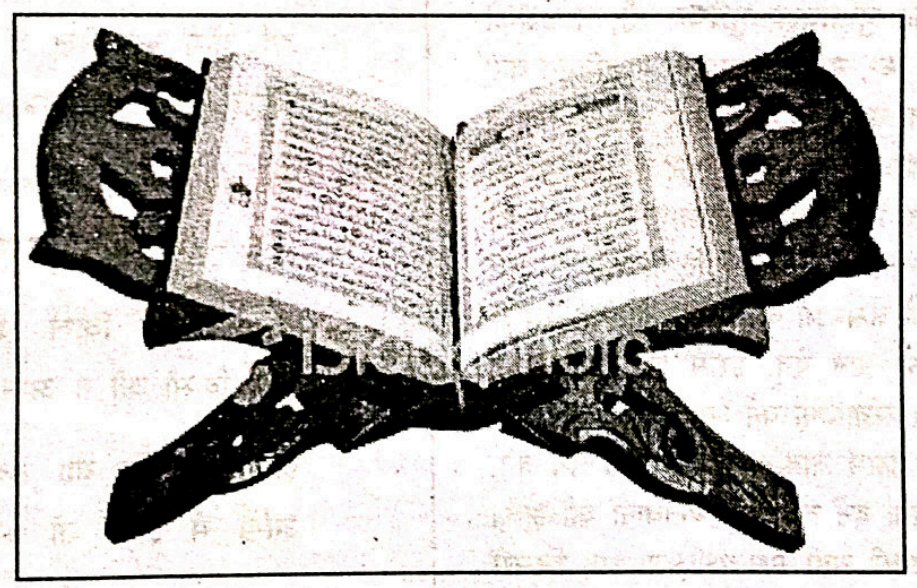

यह वह किताब है जिसने ज़मीन के हर भू-भाग व क्षेत्र तक अपने क़ानून व नियम पहुंचाए और जिसने रंग-रूप, भेष-भूषा, जाति-पात, ऊंच-नीच, छूतछात से हटकर सारी दुनिया को अपना फ़ैज़ पहुंचाया। इस किताब की यह विशेषता है कि यह समस्त ईश्वरीय धर्मों की पवित्र शिक्षाओं की पुष्टि करती है और उनको अच्छे ढंग से पेश करती है।

क़ुरआन मजीद ही एक ऐसी किताब है, जो अपने कलाम की शुरुआत इस दावे से कर सकती है कि इसका एक-एक शब्द संदेह से परे है और इसको वह सर्वोच्च विशिष्टता प्राप्त है, जो दुनिया की दूसरी किताबों को प्राप्त नहीं है। यह क़ुरआन मजीद की ही विशेषता है कि उसकी वर्णनशैली बहुत ही सभ्य, पवित्र और युक्तिपूर्ण है। इसमें कोई एक शब्द भी सभ्यता के दायरे से बाहर और शर्मोहया के तक़ाज़ों के प्रतिकूल नहीं है और इसने मानव-जीवन के विभिन्न पहलुओं पर बहस की है। अल्लाह तआला क़ुरआन में फ़रमाता है–

"ऐ रसूल (सल्ल०) सबको कह दीजिए कि अगर इन्सान और जिन्न सबके सब मिलकर इस क़ुरआन जैसी कोई चीज़ लाने की कोशिश करें तो न ला सकेंगे, चाहे वे सब एक-दूसरे के सहायक ही क्यों न हों।"

(क़ुरआन,17:88)

पवित्र क़ुरआन का यह दावा सदियों से क़ायम है और इस दावे की मौजूदगी में इस्लाम के विरोधी चाहे कितना ही ज़ोर लगा लें, वे क़ुरआन के सामने बेबस हैं। एक इन्सान जिसने कोई शिक्षा प्राप्त न की और उन्हीं के मध्य पला-बढ़ा और उनको ऐसा चैलेंज दे रहा है कि कौन है जो उनके इस चैलेंज को असत्य साबित कर सके। आज दुनिया प्रगति करके शिक्षा और साहित्य के तारे तोड़ लायी है, ज्ञान-विज्ञान व शिक्षाओं की यूनीवर्सिटियां खोल दी गयी हैं और आज भी यह चैलेंज उसी तरह सारी दुनिया वालों के सामने है। वास्तविकता यह है कि जो व्यक्ति इस भाषा में जो क़ुरआन मजीद की भाषा है, जितनी ज़्यादा महारत रखता है, उतनी ही वह अच्छी तरह

जानता है कि इस चैलेंज का कोई उत्तर संभव नहीं है ।

कुरआन मजीद ने ज़िन्दगी के बारे में जो नियम व सिद्धांत बयान किये हैं और क़ौमों के उत्थान-पत्न की जो हिकमतें व दलीलें बतायी हैं, यद्यपि आज का दौर ज्ञान-विज्ञान में उन्नति करके कहीं से कहीं चला गया है, लेकिन आज भी कुरआन के उन सिद्धांतों में कोई सिद्धांत भी न पुराना हुआ है और न ही उसका खंडन करना संभव है । इसमें असत्य व झूठ का कोई हस्तक्षेप नहीं है । ज़माने की उन्नति व प्रगति न इसमें किसी चीज़ को कम साबित करती है न ज़्यादा । यह एक परिपूर्ण, वृहद और असंशोधनीय ईश्वरीय किताब है । अल्लाह तआला फ़रमाता है–

''ये वे लोग हैं जिनके सामने नसीहत भरी वाणी आयी तो इन्होंने उसे मानने से इन्कार कर दिया । मगर वास्तविकता यह है कि यह एक ज़बरदस्त किताब है, असत्य न सामने से इस पर आ सकता है न पीछे से, यह एक तत्वदर्शी और प्रशंसित (ईश्वर) की उतारी हुइ चीज़ है ।''

(कुरआन, 41:41,42)

कुरआन मजीद का मुक़ाबला मुश्किल है, न उसकी मधुरता का, न साहित्य का, न धाराप्रवाह व मौज़ूनियत का, न तिलावत और मृदुलता का, न हरकत और तहरीक का, न रौब-दबदबा और महानता का । इसमें पत्थर दिल वालों को पिघला देने की शक्ति है । इसमें चेतनाशून्य लोगों को झिंझोड़ डालने की योग्यता है । इसमें ज़ालिमों को मोम कर देने की हरारत है । इसमें बेसमझों को समझा देने का तरीक़ा है, इसमें अज्ञानियों को ज्ञान देने, इसमें विवेकहीनों को विवेक प्रदान करने और संज्ञाहीनों को आगाह और सावधान करने की ताक़त है । इसमें ताक़तवरों को डरा देने की, बुज़दिलों को बहादुर बना देने की और बलवानों को झुका देने की शक्ति है । इसकी यही प्रभावशीलता थी, जिससे बड़े-बड़े मज़बूत दिलवाले भय खाते थे । कानों में रूई ठूंस लेते थे, ताकि यह पवित्र कुरआन उनको फ़तह न करे और जब इसे बादशाहों के दरबार में पढ़ा जाता था तो दरबारियों में सन्नाटा और आंखों से आंसू छलक पड़ते थे ।

हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) ने मुसलमान होने के बाद अपने कुरआन करीम सुनने का एक तास्सुर कुछ ऐसा ही बयान किया है, वे कहते हैं–

''मैं एक रोज़ घर से निकला । आप (सल्ल०) काबा में दाख़िला हो चुके थे । मैं पहुंचा तो आप नमाज़ में सूरह अल-हाक़्क़ा पढ़ रहे थे । मैं आप (सल्ल०) के पीछे खड़ा हो गया और कुरआन पाक सुनने लगा । मैं कुरआन मजीद की शान और बयान करने के अंदाज़ पर ही आश्चर्यचकित हो रहा था कि अचानक मेरे दिल में यह विचार आया कि यह व्यक्ति ज़रूर शायर है, जो अक्सर कुरैश कहते हैं । फ़ौरन ही आपकी मुबारक ज़ुबान से यह अल्फ़ाज़ अदा हुआ–''यह एक प्रतिष्ठित रसूल का कथन है, किसी कवि का कथन नहीं है ।'' मैंने दिल में कहा, शायर नहीं तो काहिन है ।

उसी वक़्त आप (सल्ल०) के मुबारक ज़ुबान से ये शब्द निकले, ''और न यह किसी काहिन का कथन है, तुम लोग थोड़ा ही विचार करते हो । यह सारी दुनिया के रब की ओर से अवतरित हुआ है ।'' यह सुनकर इस्लाम मेरे दिल में गहरा उतर गया । हज़रत उमर (रज़ि०) का ईमान लाना भी कुरआन मजीद के प्रभाव का ही मौजिज़ा है ।

ग़ज़ल

दर्द औरों का दिल में गर रखिए
बेग़रज़ हो के उम्र-भर रखिए

हो ही जाएंगी मुश्किलें आसान
अक़्ल-सा एक राहबर रखिए

सब हवाई क़िले दिखाते हैं
कुछ किसी की न आस पर रखिए

हो इशारा कि बह सके न हवा
आंख में इतना तो असर रखिए

इसके दम से है आबरू का वजूद
अपने किरदार पर नज़र रखिए

शरपसन्दी न शरपसन्द रहें
जा-ब-जा इस क़दर शरर रखिए

दोस्ती में है शर्त ये 'दरवेश'
ज़िक्र 'मैं-तू' का ताक़ पर रखिए ।

■ 'दरवेश' भारती

पशु-पक्षी, पर्यावरण भी दया के पात्र

❖ डॉ॰ फ़रहत हुसैन

क़ुरआन में अंकित प्रभु के कुछ संदेश–

■ "अल्लाह ने हर जीवधारी को पानी से पैदा किया, तो उनमें से कोई अपने पेट के बल चलता है और कोई उनमें दो टांगों पर चलता है और कोई उनमें चार (टांगों) पर चलता है ।" (क़ुरआन, 24:45)

■ "और निश्चय ही तुम्हारे लिए चौपायों में भी एक शिक्षा है । उनके पेटों में जो कुछ है उसी में से एक चीज़ (अर्थात दूध) हम तुम्हें पिलाते हैं, और तुम्हारे लिए उनमें बहुत-से दूसरे फ़ायदे हैं और उन्हें तुम खाते भी हो और उन पर और नौकाओं पर तुम सवार होते हो ।" (क़ुरआन, 23:21-22)

■ "और तुम्हारे लिए चौपायों में भी एक बड़ी शिक्षा-सामग्री है, जो कुछ उनके पेटों में है उसमें से गोबर और रक्त के बीच से हम तुम्हें विशुद्ध दूध पिलाते हैं ।" (क़ुरआन, 16:66)

■ "क्या उन्होंने अपने ऊपर पक्षियों को पंक्तिबद्ध पंख फैलाए और उन्हें समेटते नहीं देखा ? उन्हें रहमान के सिवा कोई और नहीं थामे रहता ।" (क़ुरआन, 67:19)

■ "निस्सन्देह अल्लाह दाने और गुठली को फाड़ निकालता है ।" अर्थात बीज अंकुरित होता है । (क़ुरआन, 6:95)

■ "और वही है जिसने बाग़ पैदा किये, कुछ जालियों पर चढ़ाए जाते हैं और कुछ नहीं चढ़ाए जाते, और खजूर और खेती भी जिनकी उपज अलग-अलग प्रकार की होती है, और ज़ैतून व अनार भी....।" (क़ुरआन, 6:141)

■ "और अल्लाह ही ने आकाश से पानी बरसाया । फिर उसके द्वारा धरती को उसके मृत हो जाने के पश्चात जीवित किया । निश्चय ही इसमें बड़ी निशानी है उन लोगों के लिए जो सुनते हैं ।" (क़ुरआन, 16:65)

■ "और खजूरों और अंगूरों के फलों से भी (हम एक चीज़ तुम्हें पिलाते हैं) जिससे तुम मादक चीज़ भी तैयार कर लेते हो और पाक रोज़ी भी ।" (क़ुरआन, 16:67)

■ "और तुम्हारे रब ने मधुमक्खी के मन में यह बात डाल दी कि 'पहाड़ों और वृक्षों में और लोगों की बनायी हुई छत्रों में घर बना । फिर हर प्रकार के फल-फूलों से ख़ुराक ले और अपने रब के बताए हुए मार्ग पर चलती रह ।' उसके पेट से विभिन्न रंग का एक पेय (मधु) निकलता है, जिसमें लोगों के लिए रोग उपचार है ।" (क़ुरआन, 16:68-69)

यहां क़ुरआन के कुछ चयनित अंश प्रस्तुत किये गये हैं । इसके अतिरिक्त भी इस प्रकार के अनेक अंश हैं जिन्हें अल्लाह ने निशानी के तौर पर पेश किया है । इनको पढ़कर पशु-पक्षी, वनस्पति, पानी अर्थात कुल मिलाकर आज की भाषा में पर्यावरण जागरूकता नज़र आती है । क़ुरआन में प्रभु का कथन है–"हमने आपको (ऐ मुहम्मद सल्ल॰) सारे संसार के लिए रहमत बनाकर भेजा है" (21:107), अर्थात संसार के समस्त प्राणियों, जीव-जन्तुओं व वनस्पति के लिए अत्यन्त दयावान बनाकर भेजा है । अत: हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को एक महान पर्यावरणवादी के रूप में भी देखा जाता है जो कि आगे की चर्चा से भी स्पष्ट है–

पशुओं के लिए दयावान

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पशुओं का बहुत ख़याल रखते थे । जो लोग अपने ऊंट या घोड़ों पर सवार होकर आपके पास आते थे आप उनके जानवरों को देखते थे । यदि ऐसा लगता कि उसका मालिक अपने जानवर का ध्यान नहीं रख रहा है तो उसे उचित निर्देश देते थे । पशुओं के संबंध में आपने जो दिशा-निर्देश दिये वे इस प्रकार हैं–

(1) जानवर पर उसकी क्षमता से अधिक भार न लादा जाए ।

(2) उसकी थकान का भी ख़याल रखा जाए ।

(3) उसके चारे और पानी की उचित व्यवस्था हो ।

(4) खेल-तमाशे के लिए जानवर को न मारा जाए ।

(5) जंगल के पशु-पक्षियों का भी अनावश्यक शिकार न किया जाए ।

(6) हर प्यासे जीवधारी को पानी पिलाना पुण्य है ।

इतिहास की पुस्तकों से ज्ञात होता है कि नबी (सल्ल॰)

ने मदीना नगर से बाहर भूमि सुरक्षित करायी थी जिसमें जानवरों की चरागाह थी और पेड़-पौधे भी उगते थे, इसे 'हरीम' (अर्थात सुरक्षित क्षेत्र) कहा जाता था। यह आज के सुरक्षित वन-क्षेत्र (अभ्यारण्य) का उदाहरण है।

एक बार पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) एक व्यक्ति के बाग़ में गये। वहां एक ऊंट बंधा था जो आपको देखकर बिलबिलाया। आपने स्नेह से उसके ऊपर हाथ फेरा और ऊंट के मालिक से कहा, "तुम इस जानवर के मामले में अल्लाह से डरते नहीं ?" बेज़बान जानवरों को भूखा रखना या कष्ट देना पाप है। एक महिला के बारे में बताया गया कि उसे इसलिए अज़ाब (ईश्वरीय प्रकोप) हुआ कि उसने बिल्ली को बांधकर रखा यहां तक कि वह भूख-प्यास से मर गयी। प्यास से तड़पते कुत्ते को पानी पिलाने की घटना पर पैग़म्बर (सल्ल०) ने जन्नत की खुशख़बरी दी।

पक्षियों के लिए दयाभाव

इसी प्रकार मुहम्मद (सल्ल०) का दयाभाव पक्षियों के लिए भी अपार था। एक यात्रा में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और आपके साथियों ने जहां पड़ाव किया वहां चिड़िया ने अंडा दे दिया था। एक सहाबी ने वह अंडा उठा लिया। चिड़िया व्याकुल होकर पंख फड़फड़ाने लगी। आप (सल्ल०) ने अंडे को उसी घोंसले में रखवाया।

एक बार मुहम्मद (सल्ल०) के एक प्रिय साथी चादर में चिड़िया के बच्चे छिपाए आप (सल्ल०) के पास आये। आप (सल्ल०) ने देखा तो फ़रमाया, जाओ जहां से इन बच्चों को उठाया है वहीं रखकर आओ। आपने फ़रमाया कि फलदार पेड़ और खेती के जो फल या अनाज इन्सान और पशु-पक्षी खा लेते हैं वह भी सदक़ा (दान) है। आप (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया, "जो व्यक्ति एक गौरैया को भी अकारण मारेगा तो प्रलय के दिन वह अल्लाह से फ़रियाद करेगी।" (हदीस : नसई)

पेड़-पौधों के बारे में

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने पेड़-पौधे लगाने की प्रेरणा जिन शब्दों में दी है वह सुनहरे अक्षरों से लिखने योग्य है–

"अगर प्रलय सामने हो, किसी के हाथ में खजूर का पौधा बोने के लिए हो और उसे बोने की शक्ति हो तो पौधे को लगा दे।"

ऊपर उल्लेख हो चुका है कि मुहम्मद (सल्ल०) ने सुरक्षित वन-क्षेत्र स्थापित किया था, जो जीवधारी तथा वनस्पति दोनों के संरक्षण हेतु था। साधारणतया युद्धकाल में पेड़-पौधों की कोई चिन्ता नहीं करता, बल्कि उस समय दुश्मन की फ़सलों और बाग़ों को तबाह व बर्बाद करने का चलन आम था। ऐसे में आप (सल्ल०) ने युद्ध के दौरान पालतू जानवरों को मारने, खेती तबाह व बर्बाद करने और पेड़ों को काटने से मना किया। (हदीस : अबू दाऊद)

इस्लामी राज्य के प्रथम ख़लीफ़ा हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) सेना को जो निर्देश देते थे, उनमें से एक यह भी था कि फलदार पेड़ों को न काटें और हरे-भरे स्थान न जलाएं। स्पष्ट है कि आपातकालीन परिस्थिति में पेड़-पौधों के संरक्षण के प्रति इतना भाव है तो आम दिनों में कितना होगा।

पानी के बारे में

पानी क़ुदरत का अनमोल उपहार है। "क़ुरआन के अनुसार, "ईश्वर ने हर जीवित चीज़ को पानी से बनाया।" (21:30) आज जो पानी की बर्बादी हो रही है, उसकी पृष्ठभूमि में ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का सद्व्यवहार देखिए कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने अपने अनुयायियों को नमाज़ के लिए मुंह-हाथ-पांव धोते समय भी हिदायत की कि पानी का अपव्यय नहीं होना चाहिए, चाहे तुम बहती नदी के किनारे पर ही बैठे हो।

प्रदूषण के बारे में

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने पर्यावरण साफ़-सुथरा रखने पर बल दिया। आप (सल्ल०) के मुख्य निर्देश इस प्रकार हैं–

1. स्वच्छता आधा ईमान है।
2. अपने आंगन को साफ़ रखो और यहूदियों की भांति न हो जाओ।
3. अल्लाह पवित्र है और पवित्रता को पसन्द करता है।
4. रास्ते से कष्टदायक चीज़ों को हटाना पुण्य है।
5. रास्तों पर या छायादार पेड़ों के नीचे या पानी में पेशाब या शौच करना मना है।
6. जो कोई सामूहिक स्थलों (मार्ग, पार्क, बाज़ार आदि) में मूत्र या शौच करता है उस पर अल्लाह, फ़रिश्तों और इन्सानों की ओर से लानत होती है।

विचारणीय है कि जब मूत्र और शौच के बारे में ऐसी सख़्त हिदायत है, तो इससे अधिक बड़े प्रदूषण जो गैस, रासायनिक या विषैली चीज़ों से फैलें उन पर कितनी बड़ी फटकार है।

मेरे सपनों का भारत

❖ मुहम्मद अली शाह शुऐब

सपना देखना मनुष्य की प्रकृति और स्वाभाविक कामों में से है । यदि मनुष्य सपना न देखे तो उसका मानसिक सन्तुलन बिगड़ जाए और वह पागल हो जाए । और सपना न देखने से जिस प्रकार व्यक्तिगत रूप से मनुष्य का मानसिक सन्तुलन बिगड़ जाता है उसी प्रकार सामूहिक रूप से यदि देश के नागरिक देश के विकास और उसकी उन्नति के बारे में सपना न देखें तो वह देश और समाज भी असन्तुलन का शिकार हो जाता है । इसलिए सपना देखना जहां एक ओर स्वाभाविक और सतत प्रक्रिया है वहीं यह देश के नागरिकों का मूल अधिकार और मौलिक कर्तव्य भी है ।

इसका अर्थ यह हुआ कि सपना देखना देश के विकास का मार्ग प्रशस्त करता है । गांधी जी ने सपना देखा और एक पुस्तक लिखी 'मेरे सपनों का भारत'। देश के भूतपूर्व राष्ट्रपति ए॰पी॰जे॰ अब्दुल कलाम ने भारत के विकास का सपना देखा उन्होंने भी एक किताब लिखी 'मेरे सपनों का भारत'। इसका अर्थ यह हुआ कि यह सतत प्रक्रिया है और इसको निरन्तर जारी रहना चाहिए । लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि सपना केवल बुद्धिजीवी और बड़े लोग ही देख सकते हैं । नहीं ! यह हर व्यक्ति का अधिकार है कि वह सपना देखे और लोगों को बताए कि वह देश और समाज को कैसा देखना चाहता है ?

इसका अर्थ यह हुआ कि सपना देखना देश के विकास का मार्ग प्रशस्त करता है । गांधी जी ने सपना देखा और एक पुस्तक लिखी 'मेरे सपनों का भारत'। देश के भूतपूर्व राष्ट्रपति ए॰पी॰जे॰ अब्दुल कलाम ने भारत के विकास का सपना देखा उन्होंने भी एक किताब लिखी 'मेरे सपनों का भारत'। इसका अर्थ यह हुआ कि यह सतत प्रक्रिया है और इसको निरन्तर जारी रहना चाहिए ।

यदि परिस्थिति ऐसी हो कि देश में जनसाधारण से लेकर शासक तक, नेता से लेकर अभिनेता तक, बच्चों से लेकर महिलाओं और बुज़ुर्गों तक सभी देश की स्थिति से असन्तुष्ट हों तो ऐसे में और भी आवश्यक हो जाता है कि हर व्यक्ति देश को विकास की ओर ले जाने के बारे में सोचे और विचार करे । हम सब जानते हैं कि हमारे देश में भ्रष्टाचार अपनी चरम को पहुंचा हुआ है । चारों ओर अत्याचार, अनाचार और अराजक़ता व्याप्त है । देश के रक्षक भक्षक का रोल निभा रहे हैं । शासक वर्ग में धन लोलुपता इतनी बढ़ गयी है कि हर ओर लूट-खसोट मची हुई है । इसका परिणाम यह निकल रहा है कि देश में भुखमरी बढ़ रही है, किसान खुदकुशी कर रहे हैं, आर्थिक असन्तुलन इतना बढ़ गया है कि ब्याजख़ोरों, जमाख़ोरों और सट्टेबाज़ों के हाथों में देश की सम्पत्ति रखेल बनी हुई है । देश की 70 प्रतिशत जनता 20 रुपये प्रतिदिन कमा पाती है और अपना गुज़ारा मुश्किल ही से कर पाती है । परिवार विघटन का शिकार हैं । समाज में असुरक्षा का माहौल है । राजनीतिक अस्थिरता तो इतनी बढ़ गयी है कि सरकारों पर हर समय तलवार लटकी रहती है और जब यह तलवार सरकारों पर गिरती है तो देश की जनता पर बिजली टूट पड़ती है यानी चुनाव होते हैं और अरबों रुपये चुनाव में लग जाते हैं परिणामस्वरूप कमर तोड़ देने वाली मंहगाई आती है । मानवाधिकारों की सरेआम धाज्जियां उड़ायी जाती हैं । बेक़सूरों को पकड़-पकड़ कर न केवल जेलों में ठूंस दिया जाता है बल्कि अवसर मिलने पर मौत के घाट भी उतार दिया जाता है । हालांकि देश में मानवाधिकार आयोग भी मौजूद है और बहुत-से ग़ैर-सरकारी संगठन भी यहां काम कर रहे हैं ।

यह तो हमारी अन्दर की स्थिति है । बाह्य स्थिति भी कुछ भिन्न नहीं है कि हम विदेशी ताक़तों के हाथों कठपुतली बनते चले जा रहे हैं । देश के संसाधनों को धीरे-धीरे विदेशी सरकारों और संस्थाओं के हवाले किया जा रहा है । विदेशी सरकारों और संस्थाओं के हम इतने क़र्ज़दार हो चुके हैं कि अपने बजट का लगभग 56 प्रतिशत भाग क़र्ज़ से संबंधित मामलों के निबटारे में ख़र्च करना पड़ता है, जिसमें लगभग 22 प्रतिशत तो ब्याज होता है और लगभग 34 प्रतिशत मूल ।

इसके विपरीत हमारे स्वास्थ्य और शिक्षा पर हमारी सरकार केवल 10 प्रतिशत ही ख़र्च करती है । फिर हम देखते हैं कि हमारे देश के किसी भी पड़ोसी देश से अच्छे संबंध नहीं हैं । न केवल पाकिस्तान बल्कि नेपाल, भूटान, चीन इत्यादि सभी देशों से हमारे संबंध बहुत अच्छे नहीं हैं ।

कारण क्या है ?

जब कारण पर बात की जाती है तो जनता को फिर भ्रमित किया जाता है । प्रोपगैंडा किया जाता है कि इन सबका कारण है देश में बढ़ती हुई जनसंख्या और अशिक्षा । हालांकि जब हम इस पर गंभीरता से विचार करते हैं तो कारण ये नज़र नहीं आते । जहां तक जनसंख्या की बात है तो जनसंख्या तो हमारे देश की पूंजी (Asset) है, यह तो देश के विकास में सहायक होनी चाहिए न कि अवरोधक । यदि जनसंख्या देश के विकास में बाधक होती तो चीन भूखों मर गया होता, लेकिन हम देखते हैं कि स्थिति बिल्कुल विपरीत है ।

चीन में हम से अधिक जनसंख्या होने के बावजूद हम से कहीं अधिक ख़ुशहाली है । हम सब जानते हैं कि माल्थस की थ्योरी फेल हो चुकी है । जनसंख्या जितनी बढ़ती है उससे कहीं अधिक संसाधनों में वृद्धि होती है और हुई है ।

यह तो हमारी अन्दर की स्थिति है । बाह्य स्थिति भी कुछ भिन्न नहीं है कि हम विदेशी ताक़तों के हाथों कठपुतली बनते चले जा रहे हैं । देश के संसाधनों को धीरे-धीरे विदेशी सरकारों और संस्थाओं के हवाले किया जा रहा है । विदेशी सरकारों और संस्थाओं के हम इतने क़र्ज़दार हो चुके हैं कि अपने बजट का लगभग 56 प्रतिशत भाग क़र्ज़ से संबंधित मामलों के निबटारे में ख़र्च करना पड़ता है, जिसमें लगभग 22 प्रतिशत तो ब्याज होता है और लगभग 34 प्रतिशत मूल ।

दूसरा कारण अशिक्षा बताया जाता है । जब हम इस पर विचार करते हैं तो स्थिति यहां भी वह नज़र नहीं आती । देश में जितने घोटाले होते हैं और देश की सम्पत्ति पर जो लोग नाजायज़ क़ब्ज़ा किये बैठे हैं वे सब पढ़े-लिखे और शिक्षित लोग हैं । 1951 से लेकर आज तक हमारे देश में शिक्षा की दर निरंतर बढ़ रही है किन्तु भ्रष्टाचार भी निरंतर बढ़ रहा है । रिश्वत वही लोग लेते हैं जो शिक्षित हैं, महिलाओं का यौन शोषण वही लोग अधिक करते हैं जो शिक्षित हैं ।

समस्या का समाधान क्या है ?

इस विश्लेषण से यह बात सिद्ध होती है कि देश को तबाही के कगार तक ले जाने का कारण जनसंख्या और अशिक्षा नहीं है कुछ और है । समाधान यह नहीं है कि जनसंख्या कम कर दी जाए, समाधान यह नहीं है कि शिक्षा की दर बढ़ा दी जाए और समाधान यह भी नहीं है कि राजनीतिक पार्टी बदल दी जाए । आज फ़लां पार्टी है तो कल दूसरी पार्टी को सत्ता सौंप दी जाए । क्योंकि हम निरंतर देख रहे हैं कि कुछ लोग खड़े होते हैं, सत्ता पक्ष के विरुद्ध नारे लगाते हैं, देश की बिगड़ती हुई परिस्थितियों का रोना रोते हैं । भोली-भाली जनता में से लाखों और करोड़ों की भीड़ इकट्ठी करते हैं और फिर एक नयी राजनीतिक पार्टी का गठन होता है । और जनता की भावनाओं से खेलकर उससे झूठे वादे करके सत्ता तक पहुंच जाते हैं और बस ! जनता ठगी-सी मुंह ताकती रह जाती है।

आइए कुछ अलग सोचें !

अब समय आ गया है कि हम कुछ अलग सोचकर देखें । कुछ इस प्रकार सोचें कि कहीं ऐसा तो नहीं हमारी व्यवस्था में ही ख़राबी हो । हमारे देश की व्यवस्था सेक्युलर अर्थात धर्मनिरपेक्ष या अधार्मिक है । तनिक विचार कीजिए कि देश की बहुसंख्या तो है धार्मिक और व्यवस्था अधार्मिक !

एक ओर तो हम धर्म के बारे में कहते हैं कि धर्म इन्सान को इन्सान बनाता है । धर्म आपस में प्रेम और भाईचारगी के साथ रहना सिखाता है । धर्म समाज में शान्ति की स्थापना करता है । स्वामी विवेकानन्द जी तो यहां तक कह गये कि-

Nothing has made more for peace and charity than religion.

समाज में शान्ति और सौहार्द्र के लिए धर्म से बढ़कर किसी ने योगदान नहीं किया ।

जब धर्म इन्सान को इन्सान बनाता है और एक बेहतरीन समाज की नींव रखता है और उस नींव पर देशरूपी एक शानदार भवन का निर्माण करता है तो फिर देश की व्यवस्था से धर्म को क्यों निकाल कर फेंक दिया गया । तनिक विचार कीजिए कि कहीं यह अधर्मियों की चाल तो नहीं है । धर्म में यदि इतनी भी उदारता न हो कि वह व्यवस्था में रहते हुए दूसरे धर्म का आदर न करे तो फिर वह धर्म ही नहीं है । धर्म यदि है तो वह व्यवस्था में भी मनुष्य का मार्गदर्शन करेगा और दूसरे धर्मों के साथ व्यवहार भी उदारतापूर्ण करेगा ।

आज हम मन्दिरों, मस्जिदों, गिरजाघरों और गुरुद्वारों इत्यादि में जाते हैं और ईश्वर की पूजा-उपासना करके चले आते हैं और समाज में जो भ्रष्टाचार और अत्याचार है उसी में लिप्त हो जाते हैं या उसी भ्रष्टाचार और अत्याचार का हिस्सा बन जाते हैं । तनिक विचार कीजिए कि यदि धर्म मनुष्य के चरित्र का निर्माण करता है तो एक बेहतरीन समाज के निर्माण में कोई रोल क्यों नहीं प्ले करता । आज समाज में हो रहे अत्याचार के विरुद्ध कोई आवाज़ मस्जिदों और मन्दिरों से क्यों नहीं आती ? महिलाओं पर हो रहे अत्याचार पर मन्दिरों और मस्जिदों इत्यादि में क्यों नहीं चर्चा होती, क्यों नहीं इसके रोकथाम के लिए कोई कार्यप्रणाली तैयार की जाती ।

आज हम मन्दिरों, मस्जिदों, गिरजाघरों और गुरुद्वारों इत्यादि में जाते हैं और ईश्वर की पूजा-उपासना करके चले आते हैं और समाज में जो भ्रष्टाचार और अत्याचार है उसी में लिप्त हो जाते हैं या उसी भ्रष्टाचार और अत्याचार का हिस्सा बन जाते हैं । तनिक विचार कीजिए कि यदि धर्म मनुष्य के चरित्र का निर्माण करता है तो एक बेहतरीन समाज के निर्माण में कोई रोल क्यों नहीं प्ले करता ।

क्या ईश्वर इतना स्वार्थी है कि वह केवल अपनी पूजा और उपासना का ही भूखा है और समाज में बस रहे लोगों की समस्याओं से उसे कोई सरोकार नहीं है । वह अपनी पूजा-अर्चना का तो आदेश देता हो किन्तु यह आदेश न देता हो कि जाओ और फ़लां और फ़लां कुप्रथाओं और बुराइयों का उन्मूलन करो ताकि समाज में लोग सुख और शान्ति से जीवन व्यतीत कर सकें ।

क्या ईश्वर समाज में भूख से तड़प रहे लोगों की सहायता के लिए और अन्याय तथा अत्याचार के शिकार लोगों को न्याय दिलाने हेतु किसी व्यवस्था की ओर मार्गदर्शन नहीं करता । यदि नहीं करता है तो फिर वह धर्म सत्य धर्म नहीं हो सकता । वह ईश्वर की ओर से अवतरित धर्म नहीं हो सकता । वह लोगों का अपना घड़ा हुआ धर्म ही हो सकता है ।

निश्चित रूप से यह एक ऐसा विषय है जिस पर गहन और निष्पक्ष भाव से चिन्तन की आवश्यकता है । और यदि कोई ऐसा धर्म मिलता है जो समाज में शान्ति स्थापित कर सकता हो तो उसका साथ देना चाहिए और आगे बढ़कर उसे स्वीकार एवं अंगीकार करना चाहिए, इसमें किसी प्रकार का संकोच और पक्षपात नहीं होना चाहिए ।

इस संबंध में इस्लाम धर्म का अध्ययन निष्पक्ष भाव से केवल इस बात को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए कि क्या वास्तव में इस्लाम केवल पूजा-उपासना कर लेने ही का नाम है या यह कोई ऐसी व्यवस्था भी रखता है जो समाज का निर्माण बेहतरीन सिद्धांतों पर कर सकता है ?

क्या इस्लाम की व्यवस्था केवल वैचारिक है या व्यवहार में भी इसको कभी लाया गया है ? और यदि लाया गया है तो उस व्यवस्था की विशेषताएं क्या थीं ? क्या उस समय वास्तव में समाज में शान्ति की स्थापना हो सकी थी ?

यदि इस्लाम वास्तव में कोई ऐसी व्यवस्था रखता है तो फिर हमें सोचना चाहिए कि क्या हम पक्षपात का शिकार होकर वास्तव में भ्रष्टाचार और अत्याचार के इसी दलदल में

फंसे रहना चाहते हैं ? यदि नहीं, तो फिर हमें इस्लाम को समझना चाहिए और इसके अनुसार व्यवस्था की स्थापना के लिए आगे आना चाहिए ।

इस्लाम को समझने के लिए एक बात यह भी ध्यान में रहनी चाहिए कि हमें मुसलमानों के व्यवहार को नहीं देखना चाहिए । क्योंकि किसी धर्म को उसके अनुयायियों के माध्यम से नहीं समझा जा सकता । इसके लिए उसके मूल स्रोतों को ही देखना होगा ।

इस्लाम को वास्तव में जानने के लिए सीधे तौर पर क़ुरआन का अध्ययन किया जाए और ईश्वर के अंतिम दूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की जीवनी का अध्ययन किया जाए और देखा जाए कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने इस्लाम के अनुसार जिस व्यवस्था की स्थापना की थी और जिसके आधार पर उनके बाद उनके साथियों ने जिस समाज का निर्माण किया था, जिसकी स्थापना की कामना स्वयं गांधी जी ने की थी, वह कैसी थी ।

यहां पर एक और पहलू से विचार किया जाना चाहिए कि समाज में शान्ति-व्यवस्था स्थापित करने के लिए हम सैंकड़ों वर्षों से प्रयासरत हैं और जितनी भी अधर्मी या ईश्वर के आदेशों से विमुख व्यवस्थाएं (Secularism, Nationalism, Socialism or Democracy etc.) अपनायी हैं वे सबकी सब नाकाम सिद्ध हुई हैं । इसलिए एक बार Secular Democratic व्यवस्था के स्थान पर उस Theo-Democratic व्यवस्था को भी आज़मा कर देखा जाना चाहिए जो ईश्वर के आदेशों पर आधारित है ।

स्पष्ट है कि इस प्रकार की व्यवस्था को स्थापित करने के लिए हमें सबसे पहले उस व्यवस्था के बारे में जानना पड़ेगा और उसके अतीत पर भी दृष्टि डालनी पड़ेगी कि जब उस व्यवस्था को स्थापित किया गया था तो परिणाम क्या निकले थे । इस संबंध में यह बात भी ध्यान में रहनी चाहिए कि जब हम इस्लामिक व्यवस्था को व्यवहार में लाए जाने की बात करते हैं तो इससे अभिप्राय मुसलमान बादशाह या मुसलमान शासक नहीं होते बल्कि इससे अभिप्राय वह व्यवस्था है जिसे अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने स्थापित करके दिखाया था और उनके बाद उनके चार साथियों (हज़रत अबू-बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान और हज़रत अली रज़ि०) ने स्थापित करके दिखाया था ।

इस्लाम धर्म के अनुयायी होने के नाते हमारा दायित्व एवं कर्तव्य बनता है कि देश की जनता के सामने यह बात लाएं कि हम इस्लाम के आदेशों के अनुसार किस प्रकार के शांतिपूर्ण समाज की स्थापना का सपना देखते हैं । हम ईश्वर के आदेशों का पालन करते हुए एक ऐसे समाज का सपना देखते हैं जो पूर्ण रूप से न्याय पर आधारित हो, जहां सबके साथ समानता का व्यवहार हो, जहां शिक्षा और रोज़गार के सबको समान रूप से अवसर प्राप्त हों, जहां महिलाओं का सम्मान हो और सभी नागरिकों को पूर्ण सुरक्षा प्राप्त हो, जहां सभी जातियों, धर्मों और इन्सानों के साथ उदारतापूर्ण व्यवहार हो ताकि यह धरती वास्तव में स्वर्ग बन जाए । और ऐसा इसलिए कि परम पिता परमेश्वर ने क़ुरआन में आदेश दिया कि–

"निश्चय ही अल्लाह न्याय का और भलाई का और नातेदारों को (उनके हक़) देने का आदेश देता है और अश्लीलता, बुराई और सरकशी से रोकता है । वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम ध्यान दो ।"

(क़ुरआन, 16:90)

"निश्चय ही हमने अपने रसूलों को स्पष्ट प्रमाणों के साथ भेजा और उनके साथ किताब और तुला उतारी, ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ायम हों । और लोहा भी उतारा, जिसमें बड़ा ज़ोर है और लोगों के लिए कितने ही लाभ हैं, और (किताब एवं तुला इसलिए भी उतारी) ताकि अल्लाह जान ले कि कौन परोक्ष में रहते हुए उसकी और उसके रसूलों की सहायत करता है । निश्चय ही अल्लाह शक्तिशाली, प्रभुत्वशाली है ।"

(क़ुरआन, 57:25)

लेखकों एवं रचनाकारों से

"कान्ति" में प्रकाशनार्थ जो रचनाएं हमें मिलती हैं, उनकी स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना अथवा रचनाओं की वापसी के लिए अपना पता लिखा लिफ़ाफ़ा डाक टिकट सहित अवश्य भेजें । इसके अभाव में रचनाओं के विषय में हम आपको जानकारी देने में असमर्थ हैं । ध्यान रहे कि पर्याप्त डाक टिकट लगाकर प्रकाशनार्थ सामग्री भेजें, ताकि डाक, बैरंग न हो । आशा है, आपका सहयोग मिलता रहेगा ।

-संपादक

अश्लील विज्ञापनों पर अंकुश लगे

■ डॉ॰ विभा सिंह
(नंदनपुरा, झांसी)

अश्लीलता से तात्पर्य हर उस व्यवहार, आचरण, कर्म और पहनावे से है जो प्रत्येक दृष्टि से अशोभनीय और लज्जाजनक है । हमारे समाज और संस्कृति की सुरक्षा के लिए हमारा व्यवहार और आचरण ही प्रमुख है, क्योंकि प्रत्येक स्तर के व्यक्ति के साथ हमारे व्यवहार का तरीक़ा भिन्न-भिन्न होता है । उसमें कभी-कभी विचित्र ढंग से किये गये अभद्र व्यवहार दिखायी देते हैं जो बड़ों की मान-मर्यादा के साथ ही अपने स्वाभिमान और मर्यादा को भी तहस-नहस कर देते हैं । अत: हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारा व्यवहार चाहे वह बच्चों के साथ हो, छोटों के साथ हो या बड़ों के साथ हो, अपनी और दूसरों की मर्यादा के अनुकूल हो और अभद्र न हो । हम कोई ऐसा आचरण या काम न करें, और न करने वालों का किसी भी प्रकार से सहयोग करें जो अश्लील प्रतीत हो । हमारा पहनावा ऐसा होना चाहिए जो आरामदेह होने के साथ ही भद्दा भी न मालूम पड़े ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से हमारे देश ने हर क्षेत्र में बहुत प्रगति की है । शिक्षा का प्रसार भी हुआ है, लेकिन पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण भी ख़ूब हो रहा है, जो हमारे अपने अस्तित्व, अपनी सभ्यता और उसूलों को मिटाता-सा हमारे लिए एक चुनौती बनता जा रहा है ।

वैज्ञानिक अनुसंधानों ने हमें तमाम भौतिक सुख-सुविधाओं के साधन उपलब्ध कराये हैं तथा भविष्य में और भी अधिक सुविधाजनक उपकरण होने की संभावना है । लेकिन इन सभी उपकरणों और साधनों के प्रचार के लिए अधिकांशत: महिलाओं को माध्यम बनाया जाता है ।

आज जब भी हम बाहर जाते हैं तो जगह-जगह दीवारों पर, सिनेमाघरों के बाहर, मकानों की छतों तथा चहारदीवारी पर, यहां तक कि चौराहों और वृक्षों के मोटे तनों पर भी विज्ञापन हेतु लगे हुए गंदे तथा महिलाओं के अंगों का अधिकाधिक प्रदर्शन कराते हुए पोस्टर दिखायी देते हैं जिनकी कोई भी सभ्य, सुशिक्षित मनुष्य तो निगाह उठाकर देखने का साहस नहीं कर सकता और न पसंद ही करता है । इसको देखने वाले अधिकांशत: कच्ची उम्र के बच्चे, किशोर तथा अशिक्षित हुआ करते हैं । इसका सर्वाधिक कुप्रभाव किशोरों एवं बच्चों पर पड़ता है । उनकी कोमल भावनाएं बहकर, उच्छश्रृंखल होकर ग़लत रास्ता अपना लेती हैं ।

विज्ञापन का एक साधन टेलीविज़न भी, हर वस्तु के विज्ञापन में महिलाओं का ही प्रयोग करता है । महिलाओं के किसी वस्तु के प्रचार हेतु ग़लत ढंग से पेश करना, अधिकाधिक अंगों का प्रदर्शन, कम उम्र के बच्चों एवं युवाओं पर भी बुरा प्रभाव डालता है ।

यद्यपि सुशिक्षित वर्ग इसकी बुराइयों पर उतना ध्यान न देकर इसे सहजता से लेता है, किंतु अविकसित मस्तिष्क पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता ही है, जिसका दुष्परिणाम रास्ते चलते, सड़कों, होटलों यहां तक कि पुस्तकालयों जैसे पवित्र स्थान पर भी दिखायी दे जाता है ।

दुख एवं आश्चर्य तब होता है, जब हम मात्र आठ-दस वर्ष की उम्र के बालक को किसी भी उम्र की स्त्री पर फ़ब्तियां कसते देखते हैं या उसके साथ छेड़खानी करते हुए देख लेते हैं । सोचना यह चाहिए कि ऐसा क्यों हुआ ? या

ऐसा क्यों होता है ? कहीं हम स्वयं ही तो इसके लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं ? जहां तक मैं समझती हूं, इसके विरोध में ज़ोरदार अभियान चलाना चाहिए । किन्तु पहले अपनी ओर देखकर ।

हम देखते हैं कि पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण पर स्वंय को अत्याधुनिक प्रदर्शित करने के लिए बहुत-सी महिलाएं परिधान धारण करना पसंद करती हैं, जो बहुत भड़कीले हों, चुस्त हों और जिनसे अंगों का प्रदर्शन अधिकाधिक हो, जो अनुचित है । हमारी भारतीय एवं आधुनिक पोशाकों–चाहे वह साड़ी हो या सलवार-कुर्ता या जैसा कि किशोरियां आधुनिक पोशाकें–जींस-टॉप, मिडी आदि भी पहनती हैं–में भी अश्लीलता के दर्शन होते हैं । ये वस्त्र यदि अच्छे ढंग से बहुत कसे न हों तो भद्दे न लगें बल्कि आकर्षक और सुन्दर मालूम लगें । अक्सर ऐसा देखने में आता है कि सलवार-कुर्ता पहनने वाली लड़कियां, दुपट्टा सही ढंग से न लेकर गले में डाल लेती हैं जो सुन्दर कम, अश्लील अधिक दिखायी देता है । ऐसे में अक्सर छेड़खानी की घटनाएं घटित हो जाती हैं ।

साड़ी पहनने वाली महिलाएं अपना आंचल उचित रूप से न लेकर कैसे भी कंधे पर डाल लेती हैं जिससे या तो उनका आधा वक्ष खुला रहता है या कभी-कभी उनका आंचल मात्र एक पट्टी की तरह कंधे पर पड़ा रहता है और पूरा वक्ष स्पष्ट रूप से दिखायी देता है, जो अच्छा नहीं मालूम पड़ता । कभी-कभी आंचल बार-बार सरक कर नीचे आता हुआ या ज़ान-बूझकर गिराया जाता हुआ भी देखने में आता है जो उचित नहीं प्रतीत होता बल्कि असभ्यता का प्रतीक मालूम पड़ता है । ऐसी महिलाओं की प्रशंसा करने वाले भी पीठ पीछे मज़ाक़ बनाते देखे जाते हैं । बुज़ुर्ग, प्रौढ़, युवक सभी बात करने में संकोच या लज्जा का अनुभव करते हैं । स्वयं युवतियां भी बात करने में कतराती या शर्म महसूस करती हैं, क्योंकि ग़लत पहनावा हमारी असभ्यता का द्योतक होने के साथ ही अश्लील भी है ।

विभिन्न विज्ञापनों, पोस्टरों आदि में गंदे तरीक़े से महिलाओं के इस्तेमाल का विरोध किया जा सकता है और हम ऐसे काम करने से साफ़ इन्कार भी कर सकते हैं, जो हमारी मर्यादा के प्रतिकूल हो और हमारे स्वाभिमान को ठेस पहुंचाता हो । यद्यपि इसमें कठिनाइयां बहुत आएंगी, क्योंकि प्राचीन युग से ही स्त्री सौंदर्य को एक हथियार के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है तथा आज मजबूरी एवं आर्थिक कठिनाइयों के कारण भी महिलाएं विज्ञापनों आदि में अपने शरीर का प्रदर्शन करने पर बाध्य हो जाती हैं । यह एक विडम्बना ही है ।

अश्लीलता चाहे वह विज्ञापनों, पोस्टरों या किसी भी माध्यम अथवा स्वयं स्त्री-पुरुषों द्वारा दैनिक जीवन में प्रदर्शित हो, उस पर अंकुश लगाने में महिलाएं काफ़ी हद तक समर्थ हो सकती हैं । यद्यपि इसका प्रयास तो महिला एवं पुरुष दोनों को ही करना चाहिए । यदि ऐसा नहीं होगा तो कुछ वर्षों के पश्चात हालात यह होंगे कि हर गली-कूंचे, दरवाज़ों, खिड़कियों, वाहनों पर भी अश्लील पोस्टरों को चस्पा करने से किसी को भी रोका न जा सकेगा, क्योंकि हमारे समाज, हमारे परिवार में आगे आने वाली पीढ़ी उसी में रुचि लेने वाली होगी ।

अत: इस अभिशाप को जड़ से समाप्त करने का प्रयास किया जाना चाहिए, ताकि भविष्य में यह हमारी उन्नति के मार्ग में अवरोध न उत्पन्न करे ।



केदारनाथ सिंह को ज्ञानपीठ

■ मुहम्मद इलियास हुसैन

शब्द सारे धूल हैं, व्याकरण सारे ढोंग
किस क़दर ख़ामोश हैं चलते हुए लोग ।

ये पंक्तियां हैं उत्तर प्रदेश के बलिया ज़िले के चकिया गांव में 7 जुलाई 1934 को जन्मे सुप्रसिद्ध साहित्यकार और कवि केदारनाथ सिंह की, जिन्हें पिछले दिनों संसद भवन के बालयोगी ऑडिटोरियम में राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने वर्ष 2013 के 49वें ज्ञानपीठ पुरस्कार से नवाज़ा ।

केदारनाथ सिंह यह पुरस्कार प्राप्त करने वाले हिन्दी के 10वें लेखक हैं । इससे पहले हिन्दी के जिन महान साहित्यकारों को यह पुरस्कार प्राप्त हुआ है उनके नाम हैं– सुमित्रानन्दन पंत (1969 में 'चितम्बरा' पर), रामधारीसिंह 'दिनकर' (1972 में 'उर्वशी' पर), अज्ञेय (1978 में 'कितनी नावों में कितनी बार' पर), महादेवी वर्मा (1982 में 'यामा' पर), नरेश मेहता (1992), निर्मल वर्मा (1999 में पंजाबी लेखक कर्तार सिंह दुग्गल के साथ संयुक्त रूप से), कुंवर नारायण (2005), और श्रीलाल शुक्ल एवं अमरकांत (2009 में संयुक्त रूप से) । पहला ज्ञानपीठ पुरस्कार मलयालम के लेखक गोविंद शंकर कुरुप (1965) को मिला था ।

केदारनाथ सिंह कविता-संग्रह 'अकाल में सारस' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार (1989) के अतिरिक्त मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार, कुमार आशान पुरस्कार (केरल), दिनकर पुरस्कार, जीवन-भारती सम्मान (उड़ीसा) और व्यास सम्मान सहित अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार और सम्मानों से सम्मानित हो चुके हैं ।

पुरस्कार-वितरण समारोह में केदारनाथ सिंह की कविता पर बोलते हुए राष्ट्रपति महोदय ने कहा कि उनका काव्य अर्थ, रंग और स्वीकृति का एक कोलाज प्रस्तुत करता है । उन्हें अद्वितीय कवि बताते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि उनका दृष्टिकोण आधुनिक सौन्दर्यशास्त्र के प्रति संवेदनशीलता के साथ पारंपरिक ग्रामीण समुदायों को परिलक्षित करता है । उनकी कविताओं के माध्यम से हमें अनुप्रास एवं काव्यात्मक

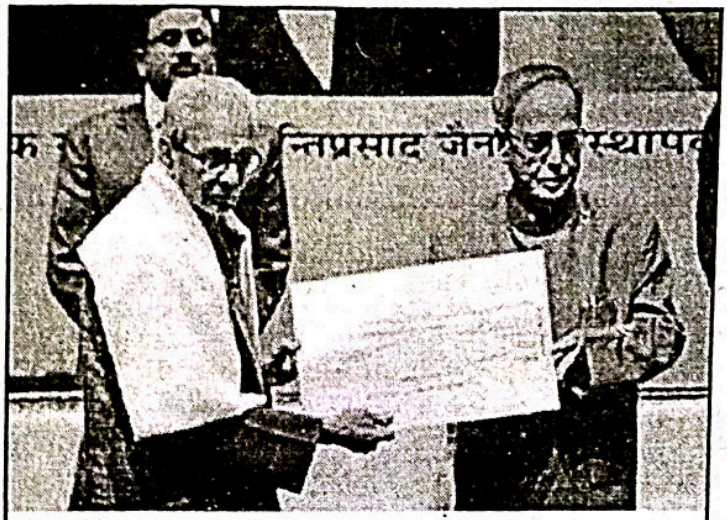

डॉ॰ केदारनाथ सिंह के साथ राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी

गीत की दुर्लभ संगति मिली है और उन्होंने अपनी कविताओं में यथार्थ एवं गल्प को एक समान रूप से समाहित किया है । उनकी कविता अर्थों, रंगों और सुग्राह्यता का सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत करती है । राष्ट्रपति ने कहा कि उनकी इच्छा है कि देश की युवा पीढ़ी कालजयी भारतीय साहित्य का गहराई से अध्ययन करे । इससे न केवल नैतिक मानदंडों को ठीक करने में मदद मिलेगी, बल्कि राष्ट्र निर्माण के हमारे प्रयासों में योगदान होगा ।

भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक लीलाधर मडलोई ने कहा कि केदानरनाथ सिंह की कविताओं में परंपरा और आधुनिकता का सुन्दर ताना-बाना है । यथार्थ और फ़ंतासी, छंद और छंदेतर की महीन बुनावट उनके काव्य शिल्प में एक अलग रंग भरती है ।

केदारनाथ सिंह ने बनारस विश्वविद्यालय से 1956 ई॰ में हिन्दी में एम॰ ए॰ और 1964 में पीएच॰ डी॰ की और फिर कई कॉलेजों में पढ़ाया । अन्त में, जे॰ एन॰ यू॰ में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद से रिटायर्ड हुए । अज्ञेय ने 'तीसरा सप्तक' (1959) में सात कवियों की कविताएं संकलित कीं, तो उस संग्रह में केदारनाथ सिंह की कविताएं भी संकलित की गयीं ।

गीत-शैली में लिखी उनकी कविता 'एक पुरबिहा का आत्मकथ्य' स्थानीय और वैश्विक भाव-बोध का सुन्दर

उदाहरण है। यह कविता भारतीय होने 'अन्य राष्ट्रवादी के अर्थ में नहीं' को भी सुन्दर ढंग से व्यंजित करती है । कविता की अंतिम पंक्तियां हैं–

इस समय मैं यहां हूं
पर ठीक इसी समय
बग़दाद में जिस दल को
चीर गई गोली
वहां भी हूं
हर गिरा ख़ून
अपने अंगोछे से पोंछता
मैं वही पुरबिहा हूं
जहां भी हूं ।

आजकल काला-धन का बड़ा हंगामा है। यहां की मिट्टी, नदी तक प्रदूषण के कारण काली हो चुकी हैं । धन भी काला, लोग भी काले, दिल तो काला है ही, यहां तक कि सारा युग ही काला हो चुका है–

काली मिट्टी
काली नदियां काला धन
सूख रहे हैं सारे बन
काली बहसें काला न्याय
ख़ाली मेज़ पी रही चाय
काले अक्षर काली रात
कौन करे अब किससे बात
काली जनता काल क्रोध
काला-काला है युगबोध

उदारीकरण के बाद पूंजीपति वर्ग चांदी काट रहा है । पृथ्वी पर ही नहीं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पर उसका एकाधिकार होता जा रहा है, कवि इस बात को अच्छी तरह जानता है–

मैं उसे इसलिए भी जानता हूं
कि वह ब्रह्माण्ड का
सबसे सम्पन्न सौदागर है
जो मेरी पृथ्वी के साथ
ताप और ऊर्जा की तिजारत करता है
ताकि उसका मोबाइल
होता रहे चार्ज ।

विभाजन की त्रासदी मुसलमानों को झेलनी पड़ी । वे बेघर हुए । कवि के गांव के एक मुसलमान 'नूर मियां' को घर-बार त्यागकर कहीं भाग जाना पड़ा । विभाजन की त्रासदी भरे उस माहौल में वह कहां गया ? किसी को नहीं पता । कवि ख़ुद से सवाल करता है–

तुम्हें नूर मियां की याद है केदारनाथ सिंह?
गेहुंए नूर मियां
ठिगने नूर मियां
रामगढ़ बाज़ार में सुर्मा बेचकर
सबसे अख़ीर में लौटाने वाले नूर मियां
क्या कुछ भी याद है केदारनाथ सिंह ?
याद है मदरसा
इमली का पेड़
इमामबाड़ा
क्या तुम्हें पता है
इस समय वे कहां हैं
ढाका
या मुल्तान में ?

एक 'बृहत्तर भारत' का सपना कवि देखता है । वह वृहत्तर भारत धार्मिक उन्मादियों का भारत नहीं; वह होगा मानव-हितैषियों का, मानवता-प्रेमियों का । परन्तु कवि इस सपने को साकार होता नहीं देखता । इसलिए इस सपने को वह अपने भीतर बसी एक पागल स्त्री का सपना मानता है, क्योंकि देशों के राजनेता शायद इसे साकार होने देना नहीं चाहते ।

कुर्सी का जो सवाल है । 'बर्लिन की टूटी दीवार को देखकर' कविता में कवि-मन की वह पागल स्त्री चीख़-पुकारकर तीनों देशों के बाशिन्दों से पूछती है–

पर मुझे लगता है मेरे भीरत की वह पागल स्त्री
अब एक दीवार के आगे खड़ी है
और चीख़ रही है–
यह दीवार
आख़िर यह दीवार
कब टूटेगी ?

समाज में अनाचार, अन्याय, अत्याचार के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने वालों की संख्या आटे में नमक के बराबर रह गई है। इसलिए उन सारी जगहों पर भी चुप्पियों का साम्राज्य है, जहां बोलना ज़रूरी है–

चुप्पियां बढ़ती जा रही हैं
उन सारी जगहों पर
जहां बोलना ज़रूरी था ।

ڈائریاں اور کیلنڈر 2015

شب وروز (ڈائری) عام اور ڈیلکس ایڈیشن

• ہر صفحے پر قرآنی آیات واحادیث رسولؐ، انبیاء کرام، صحابۂ عظام اور بزرگان سلف کے سبق آموز اقوال، معتبر شعرا کے تعمیری اور فکر انگیز اشعار • شروع وآخر کے ۴۸ صفحات پر اہم ودل چسپ معلومات • مسنون دعائیں • خطبات جمعہ ونکاح، قربانی، عقیقے، نماز جنازہ اور استخارے کی ماثورات • نقشہ اوقات نماز • مسلم تنظیموں، اہم سفارت خانے اور اردو اخبارات کے پتے • ہر ماہ کے آغاز میں ایک صفحہ Planner کے لیے خاص • لوک سبھا اور راجیہ سبھا کے مسلم ممبران کے پتے کے علاوہ بہت ساری دوسری معلومات سے مزین ایک دل چسپ ومفید ڈائری۔
صفحات: ۴۳۲ نفیس کاغذ، مضبوط ریکسین کور، راؤنڈ کٹنگ، کور پر ربن لگا ہوا ڈیلکس بائنڈنگ۔

اسلامی ڈائری (پاکٹ سائز)

• ہر صفحہ قرآنی آیات، احادیث رسولؐ، بزرگوں کے اقوال اور بزرگ وتعمیر پسند شعرا کے تعمیری وفکر انگیز اشعار سے مزین
• ۲۵ صفحات پر مشتمل اہم اور ضروری معلومات • کل صفحات: ۲۰۸ نفیس اور عمدہ کاغذ۔

کیلنڈر

• چار رنگوں پر مشتمل سفید میٹ پیپر پر نفیس طباعت
• ہر صفحے پر منتخب قرآنی آیات اور حدیث پاکؐ کے دل کش طغرے
• اردو، ہندی اور انگریزی تراجم کے ساتھ ایک دیدہ زیب کیلنڈر
• ۳ ورقی دوطرفہ طباعت، خوب صورت قدرتی مناظر، دو عالی شان مساجد کی تصویر اور ہر مہینے کی تاریخیں نمایاں حروف میں۔

نوٹ

• اسلامی کیلنڈر اور شب وروز ڈائری پر اپنے ادارے کا نام چھپوانے کے لیے ۳۰ اکتوبر ۲۰۱۴ء تک تفصیلات لازماً ارسال فرمادیں۔
شب وروز اور کیلنڈر کے لیے کم از کم مطلوبہ تعداد بالترتیب 100 اور 1000 ہے۔

سب ڈپو سے رابطہ کے لیے

بنگلور : 080-26701306
حیدرآباد : 040-66710339
ممبئی : 09890421345
گوا : 09822163132

مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵

MMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazal Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone:26971652,26954341(D) Fax:26947858 E-mail: mmipublishers@gmail.com • Website: www.mmipublishers.net

हिन्दी भाषा और मुसलमान

❖ ज़हीर ललितपुरी

किसी भाषा के विकसित होने का अर्थ यह होता है कि उसके प्रयोग करने वालों की संख्या बहुत हो तथा किसी भाषा के समृद्ध होने का अर्थ यह होता है कि उसमें उच्चकोटि का साहित्य लिखा जाए । उच्च कोटि के साहित्य में उच्चतम, मानव-मूल्य, मानदंड, संस्कार, सामाजिक सरोकार और नैतिक सिद्धांतों पर आधारित रचनाएं, पुस्तकें और ग्रंथ हुआ करते हैं । भक्ति काल हिन्दी भाषा और साहित्य का स्वर्ण युग कहलाता है । उस युग में हिन्दू धर्म से संबंधित बहुत सारा साहित्य कबीर, सूर, तुलसी, मीरा आदि कृष्णा-भक्त, राम-भक्त और निपुण कवियों ने लिखा, तो अमीर खुसरो, रहीम, अबुल फ़ज़्ल, फ़ैज़ी, रसखान आदि मुस्लिम कवियों ने भी नैतिकता और आध्यात्म पर आधारित इस्लामी साहित्य लिखा । यह भी सर्वविदित है कि भक्ति कालीन साहित्य पर इस्लाम धर्म को मानने वाले सूफ़ी-संतों की विचारधारा का बहुत प्रभाव पड़ा । इस्लामी प्रभाव से हिन्दू धर्म की नयी व्याख्या पेश हुई ।

वास्तव में भारत में मुसलमानों के आगमन के बाद ही हिन्दी भाषा वजूद में आयी । इतिहास इस बात का गवाह है कि मुसलमानों और हिन्दुओं के संपर्क में आने पर जिस भाषा का जन्म हुआ वह उर्दू जुबान है जिसे उस समय रेख़्ता, खड़ी बोली, हिन्दवी या हिन्दुस्तानी के नाम से जाना जाता था । इस हिन्दुस्तानी जुबान के दो रूप प्रचलित हुए । एक रूप अरबी, फ़ारसी मिश्रित जुबान थी, जिस पर मुसलमानों का काफ़ी प्रभाव था । यह भाषा सेना की भाषा होने के कारण इसको उर्दू कहा गया । सेना को उर्दू कहा जाता है । दूसरा रूप संस्कृत, अवधि, ब्रज तथा अन्य देशी भाषा और बोलियों तथा हिन्दू धर्म से प्रभावित होने के कारण हिन्दी कहलाया । दरअस्ल उर्दू जुबान देवनागरी में लिखी जाने और हिन्दू धर्म का माध्यम होने के कारण हिन्दी कहलायी ।

स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा के जन्म और विकास में मुसलमानों का बहुत बड़ा योगदान है । उर्दू जानने वाला हिन्दी भाषी की बात आसानी से समझ सकता है तथा अपनी बात उसे समझा सकता है । यूं भी भारत के अधिकांश मुसलमान हिन्दी के अच्छे जानकार हैं, बल्कि आजकल ऐसे मुसलमानों की कमी नहीं है जो हिन्दी और अंग्रेज़ी तो ख़ूब अच्छी तरह पढ़-लिख लेते हैं, किन्तु उर्दू नहीं जानते । इसलिए हिन्दी जुबान में इस्लामी सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार आसान प्रतीत होता है तथा हिन्दी के ज़रिये भारत में इस्लामी आन्दोलन के कामयाब होने के ज़्यादा मौक़े हैं ।

साहित्य, किताबों, प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के ज़रिये भारत में इस्लामी शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार हेतु इस्लामी इन्क़िलाब के कार्यकर्ताओं के सामने दो तरीक़े हैं । या तो वे अरबी, फ़ारसी या उर्दू ज़ुबान को फैलाएं अथवा भारतीय भाषाओं में ज़्यादा से ज़्यादा इस्लामी साहित्य लिखा जाए । अरबी एवं फ़ारसी का प्रचार-प्रसार वर्तमान परिस्थिति में आसान और संभव नहीं है । दूसरा विकल्प यह है कि इस उद्देश्य हेतु हिन्दी का ही इस्तेमाल किया जाए ।

साहित्य, किताबों, प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के ज़रिये भारत में इस्लामी शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार हेतु इस्लामी इन्क़िलाब के कार्यकर्ताओं के सामने दो तरीक़े हैं । या तो वे अरबी, फ़ारसी या उर्दू ज़ुबान को फैलाएं अंथवा भारतीय भाषाओं में ज़्यादा से ज़्यादा इस्लामी साहित्य लिखा जाए । अरबी एवं फ़ारसी का प्रचार-प्रसार वर्तमान परिस्थिति में आसान और संभव नहीं है । दूसरा विकल्प यह है कि इस उद्देश्य हेतु हिन्दी का ही इस्तेमाल किया जाए ।

हिन्दी इस वक़्त हिन्दुस्तान में सबसे अधिक बोली जाने

मुसलमानों का योगदान

किसी मिशन, तहरीक और इन्क़िलाब की कामयाबी में भाषा का अहम रोल होता है। आज़ादी की लड़ाई में हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित करने के पीछे हमारे देश के स्वतंत्रता सेनानियों का यही उद्देश्य था। बाल गंगाधर तिलक, राजा जी, सुभाष चन्द्र बोस, बिनोवा भावे, एन॰सी॰ केलकर, डॉ॰ गोपाल कृष्णा गोखले आदि स्वतंत्रता आन्दोलन के आन्दोलनकारियों, कांग्रेस तथा आर॰एस॰एस॰ जैसे संगठनों ने अपने मिशन को कामयाब बनाने के लिए हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने पर ज़ोर दिया।

और समझी जाने वाली भाषा है। जमाअत इस्लामी हिन्द ही एकमात्र ऐसी इस्लामी संस्था है, जो भारत के मुसलमानों, हिन्दुओं और देश के अन्य धर्मावलंबियों तक दीन-ए-इस्लाम को इसके मूल स्वरूप में पहुंचाने की कोशिश कर रही है, ने हिन्दी ज़ुबान में इस्लामी लिट्रेचर तैयार करने पर विशेष ध्यान दिया है। उसके प्रकाशन मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी आदि ने विश्वविख्यात इस्लामी विद्वान सैयद अबुल आला मौदूदी, सैयद क़ुतुब शहीद, मरयम जमीला, सदरुद्दीन इस्लाही, मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां, मौलाना जलालुद्दीन उमरी इत्यादि की किताबें, क़ुरआन मजीद के अनुवाद, हदीसों के संग्रह हिन्दी में प्रकाशित किये हैं।

इन इस्लामी प्रकाशनों की कुछ महत्वपूर्ण किताबों के नाम ये हैं–

इस्लाम धर्म, ख़ुतबा, इस्लाम जिससे मुझे प्यार है, इस्लाम के मूलाधार, इस्लामी जीवन-व्यवस्था, परदा सूद, इस्लाम और अज्ञान, शांति मार्ग, जिसका इन्तिज़ार था, सत्य धर्म की खोज, पथ रेखाएं इत्यादि। इन किताबों का दुनिया की बहुत सारी ज़ुबानों में ट्रांसलेशन हुआ है तथा इनके हिन्दी अनुवादों ने भारत के एक बहुत बड़े हिन्दी भाषी तबक़े को इस्लामी शिक्षाओं से परिचित कराया है।

जमाअत इस्लामी का साप्ताहिक हिन्दी अख़बार 'कान्ति' एवं मासिक पत्रिका 'कान्ति' भारत के कोने-कोने में पढ़े जाते हैं। इस अख़बार और पत्रिका में छपे प्रबुद्ध पाठकों के पत्र इस बात का सबूत हैं कि इनके ज़रिये बहुत सारे ग़ैर-मुस्लिम भाइयों तक इस्लामी तालीमात पहुंची हैं और पहुंच रही हैं। अक्सर देखा गया है कि जमाअत इस्लामी के कार्यकर्ता शहर-शहर, गांव-गांव, गली-गली, बाज़ारों में और मेलों आदि में इस्लामी पुस्तकों की प्रदर्शनी, स्टाल, सेल तथा मोबाइल वेन के ज़रिये मुल्क के हज़ारों लोगों तक इस्लामी साहित्य पहुंचाते हैं, जिनमें हिन्दी भाषा में इस्लामी साहित्य ख़ूब बिकता है।

हिन्दी में छपे इस्लामी साहित्य को पढ़कर बहुत सारे हिन्दू भाइयों ने दीन की रोशनी पायी है और उन्हें अल्लाह ने क़लम की जो सलाहियत दी है उसको वे अल्लाह के दीन के प्रचार-प्रसार में लगा रहे हैं। नसीम ग़ाज़ी, अब्दुल्लाह अडियार, डॉ॰ मुहम्मद अहमद आदि ऐसे नाम हैं जिनकी इस्लामी ख़िदमत से मुल्क के मुसलमान ख़ूब वाक़िफ़ हैं। इसके अलावा जनाब सुरेन्द्र कुमार अज्ञात, सुरेन्द्र कुमार अंशुल, विद्या प्रकाश, शकुन्तला देशमुख, शशिप्रभा शर्मा, राजकुमार सोनकर, डॉ॰ राम सनेही लाल शर्मा 'यायावर' आदि सैकड़ों बुद्धिजीवियों ने इस्लाम को समझा है। 'कान्ति' के प्रबुद्ध ग़ैर-मुस्लिम पाठकों के पूरे हिन्दुस्तान के हरेक प्रदेश से आये पत्र और लेख 'कान्ति' में छपते हैं। इन पत्रों को पढ़कर मालूम होता है कि ये पाठक इस्लाम धर्म के बारे में इतना जान चुके हैं कि अभी बहुत सारे मुसलमान भी उतना इस्लाम धर्म के बारे में नहीं जानते।

वस्तुतः हिन्दुस्तान में अन्य ज़ुबानों की अपेक्षा उर्दू और हिन्दी में किसी मिशन का प्रचार आसानी से किया जा सकता है। किसी मिशन, तहरीक और इन्क़िलाब की

कामयाबी में भाषा का अहम रोल होता है । आज़ादी की लड़ाई में हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित करने के पीछे हमारे देश के स्वतंत्रता सेनानियों का यही उद्देश्य था । बाल गंगाधर तिलक, राजा जी, सुभाष चन्द्र बोस, बिनोवा भावे, एन॰सी॰ केलकर, डॉ॰ गोपाल कृष्णा गोखले आदि स्वतंत्रता आन्दोलन के आन्दोलनकारियों, कांग्रेस तथा आर॰एस॰एस॰ जैसे संगठनों ने अपने मिशन को कामयाब बनाने के लिए हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने पर ज़ोर दिया ।

1985 ई॰ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से स्वतंत्रता आन्दोलन में जो तीव्रता आयी हिन्दी और उर्दू के प्रसार ने इसमें बहुत सहयोग दिया । कांग्रेस ने 1924 में बेलगाम अधिवेशन में अपने आन्दोलन को जनान्दोलन बनाने के लिए कार्य समिति की कार्यकारिणी का कामकाज आमतौर से हिन्दी में चलाने का प्रस्ताव पास किया । गांधी जी ने इस भाषा को हिन्दू और मुसलमानों में एकता क़ायम रखने के लिए 'हिन्दुस्तानी' नाम दिया । बहरहाल हिन्दी भाषा को महत्व देने से कांग्रेस के मिशन और आन्दोलन को बहुत लाभ मिला । 1935 में जब प्रांतों में कांग्रेस का बहुमत था । आर्य समाज ने भी अपने उद्देश्यों के प्रचार-प्रसार हेतु हिन्दी के शिक्षण, प्रोत्साहन एवं उत्थान के लिए अनेक शिक्षण संस्थाएं खोलीं और अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन कराया ।

विदेशी महिला एनीबेसेंट ने हिन्दी भाषा का समर्थन करते हुए कहा था कि हिन्दी जानने वाला आदमी संपूर्ण भारत में यात्रा कर सकता है और हर जगह हिन्दी बोलने वाले मिल सकते हैं । इसीलिए ईसाई मिशनरीज़ ने ईसाई धर्म के प्रचार के लिए हिन्दी भाषा को माध्यम बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी । हिन्दी भाषा बहुसंख्यक वर्ग की भाषा होने के कारण भारत की अन्य भाषाओं के लेखकों और साहित्यकारों ने हिन्दी भाषा से परहेज़ नहीं किया ।

बंगाल के राजाराम मोहन राय ने आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के समर्थक होते हुए भी 1826 में 'बंगदूत' नामक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किया । बंगला भाषी केशव चन्द सेन ने 'सुलभ समाचार' पत्र हिन्दी में निकाला । आर्य समाज के संस्थापक दयानन्द सरस्वती ने गुजराती होते हुए अपना भाषण हिन्दी में लिखा । वर्तमान इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के दौर में ऐसे हिन्दी चैनल सफल हैं जो हिन्दी में अपने प्रोग्राम पेश कर रहे हैं ।

मुसलमानों के बुज़ुर्गों की भाषा, जो देवनागरी लिपि में लिखी जाने के कारण हिन्दी बन गयी, भारत में इतनी लोकप्रिय और महत्वपूर्ण और समृद्ध है कि उसे भारतीय संविधान के 343(1) के अनुसार भारतीय संघ की भाषा घोषित कर दिया गया । अत: मुसलमानों के पास इस भाषा से दूर रहने का कोई कारण नहीं है । अगर हिन्दी भाषा को भी बढ़ावा मिलेगा, तो इससे उर्दू भाषा को भी बढ़ावा मिलेगा । लेकिन इस हक़ीक़त को बिल्कुल नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता कि भारत में इस्लामी निज़ाम क़ायम करने के लिए, इस्लामी शिक्षाएं हर भारतीय नागरिक तक पहुंचाने के लिए इस्लामी आन्दोलन को जनान्दोलन बनाने के लिए हिन्दी भाषा का इस्तेमाल ज़रूरी है ।

और मैं ख़ामोश रहा

सबसे पहले उन्होंने दलितों पर वार किया
और मैं ख़ामोश रहा
क्योंकि मैं दलित नहीं था

फिर उन्होंने मुसलमानों पर वार किया
और मैं ख़ामोश रहा
क्योंकि मैं मुसलमान नहीं था

फिर उन्होंने सिक्खों पर वार किया
और मैं ख़ामोश रहा
क्योंकि मैं सिक्ख नहीं था

फिर उन्होंने संगठित किसान मज़दूरों पर वार किया
और मैं ख़ामोश रहा
क्योंकि मैं क़िसान-मज़दूर नहीं था

फिर उन्होंने मानव अधिकार कर्मियों पर वार किया
और मैं ख़ामोश रहा
क्योंकि मैं मानव अधिकार कर्मी नहीं था

और फिर वो मुझ पर वार करने आये
तब तक चारों तरफ़ ख़ामोशी थी
और मेरे लिए बोलने वाला कोई नहीं बचा था ।

रूपान्तर : **कमला भसीन**

शाह आलमे सानी की 'नादिराते शाही'

■ डॉ॰ किश्वर सुल्ताना
(रामपुर, उ॰प्र॰)

भारत देश में जब मुसलमानों का पदार्पण हुआ, तो यहां की जलवायु, रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, त्योहार, भाषा, यहां तक कि मौसम भी सब कुछ उनके लिए नया था । चूंकि उन्हें यहां रहना और बसना था, इसलिए संपर्क की भाषाओं (देशी भाषा) का ज्ञान प्राप्त करना उनके लिए आवश्यक था । मुग़ल शासक बाबर यहां की भाषा से बहुत प्रभावित था । जहांगीर ने अकबर के आदेश पर हिन्दी पढ़ी थी और जहांगीर के आदेश पर सअदुल्लाह मसीह ने रामायण को फ़ारसी में नज़्म किया था । अकबर के काल में अनुवाद का एक विभाग स्थापित था । जहां से संस्कृत की प्रसिद्ध पुस्तकों के अनुवाद फ़ारसी में हुए, जैसे–सिंहासन बत्तीसी, रामायण, महाभारत इत्यादि । महाभारत का नाम 'रज़्मनामा' उसी के समय में रखा गया । दाराशिकोह ने उपनिषदों का अनुवाद 'सिर्रे अकबर' के नाम से फ़ारसी में स्वयं किया था । रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में फ़ारसी लिपि में 'योग वशिष्ठ' सुरक्षित है । इसका अनुवाद भी दाराशिकोह ने किया था ।

औरंगज़ेब आलमगीर व्यक्तिगत रूप से धार्मिक था । कुछ इतिहासकारों ने उसे अत्याचारी भी लिखा है, परन्तु कवि भूषण, चिंतामणि हिन्दी भाषा के कवि था और इन्हें आलमगीर की सरपरस्ती प्राप्त थी । पूर्ण मुग़ल दौर पर दृष्टिपात करने पर हम पाते हैं कि मुग़लों ने भारतीय भाषाओं, भारतीय साहित्य और ललित कलाओं को समुन्नत करने में अपना विशिष्ट योगदान किया है ।

शाह आलमे सानी मुग़ल बादशाहों की कड़ी का वह बादशाह है जिसने अत्यंत कठिन परिस्थितियों में जीवन जिया । हिन्दी भाषा और साहित्य की अभिवृद्धि में उसका अप्रतिम योगदान है । शाह आलमे सानी के पिता का नाम अज़ीज़ुद्दीन आलमगीर सानी1 था जिन्हें फ़र्रूख़सियर ने क़ैद कर दिया था । इसी क़ैद के समय में 14 जून सन 1728 ई॰ (सन् 1140 हिजरी) को शाह आलम का जन्म हुआ ।2 लगभग छब्बीस वर्ष की आयु तक शहज़ादा आली गौहर (शाह आलमे सानी) अपने पिता अज़ीज़ुद्दीन के साथ नज़रबन्दी का जीवन व्यतीत करते रहे । शाह आलमे सानी का नाम अब्दुल्लाह था । बाल्यावस्था में लालमियां कहलाते थे । उनकी मां का नाम लाल कुंवर था । वाक़ियात-ए-अज़फ़री के अनुसार नवाब ज़ीनत महल शाह आलमे सानी की सौतेली मां थीं । उनकी मां की मृत्यु के उपरांत ज़ीनत महल ने शाह आलमे सानी को गोद ले लिया था ।

इतिहास की पुस्तकों से जानकारी मिलती है कि शाह आलमे सानी बाल्यावस्था से ही कुशाग्र बुद्धि और परिश्रमी थे । फ़ारसी, उर्दू, हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी, अरबी और तुर्की भाषा के ज्ञाता था । कविता और गद्य लेखन में पारंगत थे । उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से साहित्य और संगीत दोनों क्षेत्रों को समृद्ध किया है । शाह आलमे सानी ने अपने हिन्दी काव्य में शाह आलम उपनाम प्रयुक्त किया है । उनके पद राग-रागिनियों और ताल से भरपूर हैं । वह शहज़ादा जो क़िले की चहारदीवारी की क़ैद में पैदा हुआ हो और जीवन के छब्बीस वर्ष पिता के साथ नज़रबन्दी में गुज़ारे हों, उसका इतनी अधिक भाषाएं सीखना, जानना और इतनी अधिक पुस्तकें लिख देना अपने आप में एक बहुत बड़ा कमाल है । उसके जीवन का सबसे दुखद पहलू गुलाम क़ादिर ख़ां द्वारा उसकी आंखें निकाल कर उसे नेत्रहीन

1. तबक़ात शुअरा-ए हिन्दी–करीमुद्दीन, उ॰प्र॰ उर्दू एकेडमी लखनऊ, पृ॰ 141
2. 'मेरातुल अशबाह'–पृ॰ 53, मुफ़्ताह-उत-तवारीख़, कामूस-उल-मशाहीर, ताज-उत-तवारीख़, शाह आलम नामे के संपादक ने पृ॰ 105 पर 1172 हिजरी (1759 ई॰) शाह आलम की आयु का बत्तीसवां वर्ष बताया है । तारीख़-ए-आलमगीर सानी (एलट : पृ॰ 8, 142) में सन् 1167 हिजरी 1754 ई॰ में आलमगीर के बड़े बेटे (शाह आलम की आयु 28 वर्ष लिखी है)। इन दोनों विवरणों से 1140 हिजरी प्रमाणित होती है । फ्रेंकलिन ने 'तारीख़-ए-शाह आलम पृ॰ 195 पर 1794 ई॰ में बादशाह की उम्र का 75वां वर्ष बताया है जिसके हिसाब से 1719 ई॰ जन्म का वर्ष ठहरता है । ('नादिराते शाही'–इम्तियाज़ अली अर्शी पृ॰ 6)

किया जाना है । फिर भी वह सर्जनारत रहा । शाह आलमे सानी द्वारा रचित पुस्तकों के नाम हैं–

1. दीवान-ए-फ़ारसी
2. अजायब-उल-कसस (गद्य रचना)
3. नादिराते शाही
4. मसनवी मंज़ूम-ए-अक़दस
5. दीवान-ए-उर्दू ।

'नादिराते शाही' शाह आलमे सानी की हिन्दी, उर्दू, फ़ारसी और पंजाबी रचनाओं का संकलन है । पांडुलिपि की लिपि फ़ारसी है । शाह आलमे सानी के काल में ही इसे फ़ारसी लिपि के साथ देवनागरी लिपि में भी लिखा गया । इसमें सबसे अधिक पद भाषा के हैं । इस दृष्टि से हिन्दी साहित्येतिहास में इसका महत्व अत्यधिक है । इस संकलन की मौलिक पांडुलिपि रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में सुरक्षित है । पुस्तकों के अंत में हिन्दी दोहे से ज्ञात होता है कि इसका नाम बादशाह के आदेश से 'नादिराते शाही' रखा गया था ।

मोद उपावे चित्त को, सबे रसन को धाम
'नादिराते शाही' धरयो या पोथी को नाम

इसके आगे की फ़ारसी रूबाई से ज्ञात होता है कि 2012 हिजरी (1797 ई॰) में यह पुस्तक स्वयं बादशाह शाह आलमे सानी के हुक्म पर लिखी गयी थी और इसका नाम नादिराते शाही रखा गया । इस काव्य संकलन का सांस्कृतिक, साहित्यिक, सांगीतिक और ऐतिहासिक महत्व है । शाह आलमे सानी ने अपनी काव्य पंक्तियों को लिखते हुए उन्हें विभिन्न राग-रागिनियों में बांधा है । पंक्तियों के ऊपर उस राग और ताल का नाम इंगित है । जैसे–

(तोड़ी, चलता तिताला)

लाल खुशहाल मैं देखो जबे तब हीं मन मों सुख चैन भयो है

आज को रोज़, सजनी, जो पीतम सूं रस नैन लियो है[1]

स्पष्ट है कि कवि की कविताओं को रागनियों के माध्यम से सहज गाया जा सकता है । मुबारकबादें, अनेक जश्न, नौरोज़, समधी-समधन हास्य-व्यंग्य से संबंधित अनेक पद हैं जो उस काल में क़िले के अन्दर मनाए जाने वाले त्योहारों और रस्मों से संबंधित हैं । इनसे पता चलता है कि क़िले में अनेक समाजी रस्में और त्योहार धूमधाम से मनाए जाते थे । जैसे ईद, दिवाली, वसंत, जन्मोत्सव, छठी, मंगलगान, तारे देखना, गोधन पूजन, सरस्वती पूजन इत्यादि । इन अवसरों पर बनने वाली पाक सामग्री की चर्चा भी पदों में है । निम्न पद दृष्टव्य है–

(हमीर, चौताला)

सरसुती के पूजन को सब ले ले आयीं भर-भर थाली
पूरी, कचोरी, समोसा, पापरी और करीं नीकीं सुहाली
आनन्द सूं गाय बजाय सभी नर-नारी दे दे ताली
किया नीको मिचोरी आज माई कनी बन को बनो हार दिवाली[2]

ऐसे चित्रण से भारतीय सांस्कृतिक परिवेश की झलक मिलती है । इन समारोहों में गायन के दौरान बजाये जाने वाले विभिन्न वाद्य यंत्रों के नाम भी प्रयुक्त हैं–

(किदारा, अड़ा चौताला)

सब नर नारी नीकी निकसीं बसन भूषन अंग संवारे हार
सरनाई, करनाई, झांझ, नफ़ीरी, जैल दमामे बाजे सब द्वार
बाजत ताल, तंबूरा, मिरदंगा, बीन, रबाब, सारंगी और कटतार
गावत गुनी आनन्द बधाई, देत बधाई 'शाहे-आलम' के दरबार[3]

कवि ने गोधन पूजन के अंतर्गत ब्रज की नारी और गोप कुमारी की चर्चा की है–

(भूपाली, बंधा तिताला)

गोधन पूजन बन बन आयीं सब ही ब्रज की नारी
गावत राग हुलास भरे अतहीं आनन्द सूं नाचत गोपकुमारी[4]

ईद, बक़रीद, दिवाली की भांति वसंत की मुबारकबाद से संबंधित पद भी शाह आलम ने रचे हैं–

1. नादिराते शाही–शाह आलमे सानी, पृ॰ 208, हिन्दुस्तान प्रेस रामपुर, 1944 ई॰ ।
2. नादिराते शाही–शाह आलमे सानी, पृ॰ 104, हिन्दुस्तान प्रेस रामपुर, 1944 ई॰
3. नादिराते शाही–शाह आलमे सानी, पृ॰ 117
4. नादिराते शाही–शाह आलमे सानी, पृ॰ 113

फूलन के गड़वा अत सोहत फूल के अंग सिंगार सोसंत है

दे दे मुबारकबाद, गुनी 'शाहे आलम' कूं सब गावें बसंत हैं।[1]

दिवाली के दिन घर में खील, बतासे, चिउड़ा इत्यादि आते हैं और पूजन होता है । चित्र निम्न लिखित हैं–

(गौरी, बंधा तिताला)

खील, बतासे, चिरवे गर सूं दिवाली की भरे हठरी चौघड़ा

खेलन निकसे सभी माई अत ही, आनन्द सूं घर भरा ।

भारत देश में मुस्लिम त्योहारों में शबेबरआत मनायी जाती है । इस दिन लोग रोज़ा रखते हैं, रात भर इबादत करते हैं, क़ब्रिस्तान जाते हैं और अपने निकट संबंधियों की क़ब्र पर फ़ातिहा पढ़ते हैं । कहीं-कहीं आतिशबाज़ी छोड़ी जाती है । शाह आलमे सानी ने अपने पदों में अनेक पटाख़ों के नाम गिनाए हैं–

(किदारा, चौताला)

झार भुचंपे छूटे घनचकर हाथन में करके रोशनाई

देत सबे 'शाहे आलम' को शब-ए-बरआत की रात को लोग बधाई[2]

एक दोहा इस प्रकार है–

दिनकर ससि को है कहां ऐसो जस जो लेत ?

साईं की है जोत सब, जग उजियारो देत[3]

शाह आलमे सानी ने 'नादिराते शाही' में कितने विविध रंगों के पद रचे हैं इसका संक्षिप्त विवरण यहां प्रस्तुत किया गया । हिन्दी साहित्य के इतिहास की बात करें तो नि:संकोच यह कहना होगा कि हिन्दी साहित्य के विकास में प्रत्येक ऐसे लेखक ने महती योगदान किया था । इस योगदान का परिणाम यह हुआ कि हिन्दी साहित्य को विविधता प्राप्त हुई । नयी शैलियों और नये विचारों ने जन्म लिया । निस्संदेह साहित्य वहां के रहने वालों की जीवनी शक्ति का प्रतीक, उनके संस्कारों का परिणाम और उनके जीवन संघर्ष की अनुभूति होता है ।

1. नादिराते शाही–शाह आलमे सानी, पृ॰ 158
2. नादिराते शाही, पृ॰ 116
3. नादिराते शाही, पृ॰ 279

संस्कृत की धौंस ?

■ डॉ॰ सुरेन्द्र अज्ञात
(एम॰ए॰, पी-एच॰डी॰)

प्रधानमंत्री ने एक योजना शुरू की है, जिसे नाम दिया है–श्रमेव जयते । यह संस्कृत में नामकरण संस्कृत के प्रति श्रद्धा का तो सूचक है, परन्तु इस बात का परिचायक नहीं है कि यह नामकरण करने वाला संस्कृतज्ञ भी है ।

यह नामकरण दो अशुद्धियां लिए है । श्रम शब्द पुलिंग में है, अत: संस्कृत में श्रम: लिखा जाता है । विसर्ग के आगे यदि ए स्वर पड़ा हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और दो पृथक-पृथक शब्द रह जाते हैं–श्रम एव । यहां संधि किसी भी प्रकार संभव नहीं है–व्याकरण का कोई नियम संधि का विधान नहीं करता । यह वैसा ही मामला है जैसा अंत एव का है : अत:+एव=एव ।

जिस व्यक्ति ने श्रमेव शब्द गढ़ा है, उसने अंधाधुंध सत्यमेव की नक़ल की है । जबकि कहते हैं : नक़ल बाई अक़ल । 'सत्यम्' शब्द नपुंसक लिंग में है और उसका अन्तिम 'म्' हलंत अर्थात् : स्वरहित है, अत: उसके साथ 'एव' के 'ए' की संधि हो जाती है : सत्यमेव, परन्तु 'श्रम:' के साथ ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि वह शब्द पुलिंग में है ।

यदि कोई अज्ञानवश श्रम: को श्रम समझकर संधि करने का प्रयास करेगा तब भी 'श्रमैव' बनेगा, 'श्रमेव' नहीं । संस्कृत में दो शब्द हैं : एव (ही) और इव (तरह)। 'श्रमैव' का अर्थ 'श्रम ही' बनेगा, जबकि 'श्रमेव' का अर्थ होता है : 'श्रम जैसा', 'श्रम की तरह'।

वैसे 'श्रम' के साथ इव या एव की संधि हो ही नहीं सकती । जो भी 'श्रमैव' या 'श्रमेव' बनाएगा, वज्र ग़लती कर रहा होगा ।

अब रही 'जयते' क्रिया । मुण्डक उपनिषद् की प्राचीन पांडुलिपि में यह 'सत्यमेव जयते' (3/1/6) मिलता था, परन्तु था यह ग़लत । अत: गीता प्रेस गोरखपुर से छपे मुण्डक उपनिषद् में इसे शुद्ध करके 'जयति' के साथ इस तरह लिखा गया है : 'सत्यमेव जयति' शंकराचार्य के भाष्य

में भी 'जयति' रूप ही मिलता है, 'जयते' नहीं !

लोग संस्कृत न सीखते हैं, न पढ़ते हैं, परन्तु अशुद्ध संस्कृत बघारते अवश्य हैं, इसलिए 'अतिथिदेवो भव' को 'अतिथिदेवो भवः' कहते हैं, जो एकदम अशुद्ध है ।

किसी योजना की सफलता-असफलता इस बात पर निर्भर नहीं होती कि उसका नाम किस भाषा में है, बल्कि इस बात पर निर्भर होती है कि कितनी ईमानदारी से उसे लागू किया गया है । यदि नामकरण अशुद्ध संस्कृत में होगा, तो उससे कौन-सा अच्छा फल मिलेगा ? जब न योजना की घोषणा करने वाले संस्कृतज्ञ है, न वे संस्कृतज्ञ हैं जिनके लिए योजना घोषित की जा रही है, तब योजना का नाम संस्कृत में घोषित करने का औचित्य ही क्या रह जाता है ?

यदि संस्कृत देश की राष्ट्रभाषा फिर तो संस्कृत में योजनाओं के नाम रखने का कोई औचित्य था । तब इनके नाम भी शुद्ध होते, परन्तु जब बाबा साहब ने संस्कृत को राष्ट्र भाषा बनाने की वकालत की थी, तब तो वे हिन्दू नेता मैदान से भाग खड़े हुए थे और बाबा साहब के स्वर में स्वर मिलाकर संस्कृत के लिए आवाज़ उठाने में एकदम असफल रहे थे । अब उसी अपराध बोध के नीचे दबे हुए हिन्दू-चपड़ासी से लेकर प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति तक यदा-कदा शुद्ध-अशुद्ध संस्कृत का कोई शब्द या वाक्य इस्तेमाल करके अपने को धन्य-धन्य समझने लगते हैं, परन्तु अपने बच्चों को न संस्कृत पढ़ाते हैं, न खुद पढ़ते हैं । इससे बढ़कर बेईमानी क्या हो सकती है ?

यदि हिन्दू संस्कृत पढ़ने लगें, अपने संस्कृत में रचे ग्रंथों को पढ़ने लगें तो उनकी आंखें खुल जाएंगी । उन्हें पता चलेगा कि उनके धर्म में क्या कुछ है, उनके ग्रंथों में क्या कुछ है । जब दूसरे उन्हें बताते हैं कि तुम्हारे ग्रंथों में यह है, उनमें वह है, तब धर्म-ग्रंथों को बिना पढ़े ही पूजने वाले लोग चिल्लाते हैं कि हमारे धर्म का बंटाधार किया जा रहा है, परन्तु खुद अपने ग्रंथों को वे पढ़ते नहीं । ऐसे लोग क्या धार्मिक हैं ? जो अपने धर्म-ग्रंथों का स्वाध्याय नहीं करता, वह धर्म के विरुद्ध आचरण करता है, क्योंकि धर्म-ग्रंथों का स्पष्ट आदेश है–

स्वाध्यायान्मा प्रमदः (तैत्तिरीय उप० 1/11/1)

अर्थात् : धर्म-ग्रंथों के अध्ययन में कभी प्रमाद (आलस्य) नहीं करना चाहिए ।

हिन्दू समाज 'संस्कृत दिवस' के नाम पर प्रतिवर्ष संस्कृत का श्राद्ध करता है । उस दिन संस्कृत को श्रद्धांजलि देकर 364 दिनों के लिए उसे भूल जाते हैं, जैसे अन्य उन मुर्दों को भुला दिया जाता है जिनका श्राद्ध किया जाता है ।

संस्कृत को बुद्ध ने त्याग दिया था, क्योंकि वे लोगों को कुछ समझाना चाहते थे और वह उन्हें उसी भाषा के द्वारा समझाया जा सकता था जिससे लोग भली-भांति परिचित थे । अतः बुद्ध ने पालि के माध्यम से अपने सदुपदेश लोगों तक पहुंचाए ।

सम्राट अशोक ने भी बुद्ध का अनुगमन करते हुए अपने शिल्लालेख लोगों की भाषा में ही लिखाए थे । आज के हमारे शासक लोगों को समझाना कम और उन पर अपने हिन्दुत्व की छाया अधिक डालना चाहते हैं । अतः वे लोकभाषा की अपेक्षा संस्कृत का प्रयोग करते हैं, भले ही संस्कृत भी वे अशुद्ध ही इस्तेमाल कर रहे हैं ।

झूठा निकला क़रार तेरा

झूठा निकला क़रार तेरा
अब किसको है एतिबार तेरा

दिल में सौ-लाख चुटकियां लीं
देखा बस हमने प्यार तेरा

दम नाक में आ रहा था अपने
था रात ये इन्तिज़ार तेरा

कर ज़ब्र जहां तलक तू चाहे
मेरा क्या, इख़्तियार तेरा

लिपटूं हूं गले से आप अपने
समझूं कि है किनार तेरा

'इंशा' से मत रूठ, ख़फ़ा हो
है बन्दा जांनिसार तेरा ।

● इंशा अल्लाह ख़ां 'इंशा'

बातों-बातों में

■ डॉ॰ सलीम ख़ान

फ़ोन की घंटी बता रही थी कि यह एंटिन का फ़ोन है। शमीम ने हाथ बढ़ाकर उसे उठाया और दूसरी तरफ़ एंटिन हमेशा की तरह खुश और जोश में था। स्वभाव के अनुसार उत्साह के भरे स्वर में उसने पूछा, "क्या हाल है ?"

'सब ठीक-ठाक है, तैयारियां पूरी हो गयीं...?"

"मैंने तो तैयारियां पूरी कर ली हैं लेकिन यह इंश्योरेंस वाले...।"

"क्यों, क्या परेशानी है उनको ?"

"उनका कहना है कि सऊदी अरब में सुरक्षा की परिस्थिति ठीक नहीं है।"

"भाई एक बात बताओ, कनाडा के बारे में आप बेहतर जानते हो या सऊदी अरब में बैठे हुए इंश्योरेंस एजेंट ?"

"मज़ाक़ करते हो शमीम, कनाडा के बारे में मुझ से ज़्यादा कौन जानता होगा ?"

"अब अगर मेरा एजेंट मुझे मना करे तो तुम क्या कहोगे, यही न कि पागल है। तो बस मैं भी वही कहूंगा जो तुम कहोगे।"

"लेकिन शमीम एक बात बताओ...आख़िर तुम्हारे और इंश्योरेंस वालों के ख़याल हमेशा अलग-अलग क्यों होते हैं ?"

"दरअस्ल बात यह है कि हम दोनों व्यापारी लोग हैं। उन्हें अपने कारोबार में दिलचस्पी है और मुझे अपने बिज़नेस में, चूंकि हमारा दृष्टिकोण भिन्न है, इसलिए राय भी अलग हो जाती हैं। मगर दोस्त, इतना याद रखो कि तुम भी कारोबारी आदमी हो और हम दोनों का कार्य क्षेत्र एक ही है, इसलिए तुम्हें बीमा कंपनी के बजाय मुझ से सहमत होना चाहिए।"

उस दिन एंटिन की बीवी मारिया न केवल दरवाज़े तक बल्कि कार तक आ गयी। एंटिन ने हैरत से उसकी तरफ़ देखा मगर इस बीच वह भी कार में बैठ चुकी थी। एंटिन ने सवाल किया। 'भई मारिया, आज सूरज...।"

मारिया ने गुस्से से उसकी बात काट दी, "तुम्हें मज़ाक़ सूझ रहा है, मैं सीरियस हूं।"

सीरियस हो या ग़मगीन ?"

'एंटिन, आख़िर तुम अपनी इन आदतों को कब छोड़ोगे ?"

किन आदतों को ?"

"एक तो तुम खुद कभी गंभीर होते नहीं, और फिर दूसरों को भी...।"

एंटिन ने बात काट दी, 'भई मैं दूसरों के लिए भी वही पसन्द करता हूं जो अपने लिए। लेकिन दूसरों को यह पसन्द न हो तो न सही, क्या फ़र्क पड़ता है ?"

मारिया के शब्दों से बोझल एंटिन ने अपना सामान चैक इन किया। बोर्डिंग कार्ड लेकर लॉबी में पहुंचा और हैंड बैग से एक किताब निकालकर उसे पढ़ने लगा।

एक घंटे बाद जब फ्लाइट में चढ़ने का एलान हुआ तो वह मारिया को भूल चुका था। हवाई जहाज़ में उसका पड़ोसी एक अमेरिकी राजदूत था। सलाम दुआ के बाद एंटिन ने उसे अपनी बातों में उलझा लिया।

रियाज़ जाने वाली इस फ़्लाइट में उसका पड़ोसी एक अरब व्यक्ति था। दुआ सलाम के बाद उसने पूछा, 'आप का नाम ?" मैं कनाडा में रहता हूं, मेरा नाम एंटन है।"

अरबी ने मुस्कुराकर कहा "मैं अदनान हूं।"

"आप कहां जा रहे हैं ?"

अदनान बोला, "जहां जहाज़ जा रहा है, सब वहीं जा रहे हैं।"

एंटिन झेंप गया। उसने संभलते हुए कहा, "वह तो ठीक है परंतु आप कहां से आ रहे हैं ?"

"जी मैं न्यूयार्क से आ रहा हूं।"

"न्यूयार्क से ! तो आप न्यूयार्क में काम करते हैं ?"

"नहीं, काम करता नहीं हूं, बल्कि काम करता था।"

"क्या मतलब ?"

"मैंने न्यूयार्क की नौकरी छोड़ दी है।"

"क्यों ? क्या कोई अच्छी सर्विस मिल गयी ?"

"नहीं।"

"फिर क्यों छोड़ा ?"

"दरअस्ल मैंने अमेरिका ही छोड़ दिया है । अमेरिका में रहना ही न हो तो न्यूयार्क में सर्विस कैसे संभव है ?"

"परंतु अमेरिका छोड़ने का कोई विशेष कारण तो होगा ही ?"

"आतंकवाद...।"

"अमेरिका में आतंकवाद...? हमने तो सुना है 9/11 के बाद अमेरिका से आतंकवाद पूर्णत: समाप्त हो गया ? अब वह पूरे विश्व से उसे मिटाने में लगा हुआ है ।"

"आपने क्या सुना है, यह तो मैं नहीं जानता परंतु हमने तो यह देखा है कि 9/11 के बाद अमेरिका में आतंकवाद प्रारंभ हुआ और अब वह पूरे विश्व में उसे फैलाने में लगा हुआ है ।"

एंटिन को ऐसा लगा मानो अदनान उसी का वाक्य दोहरा रहा है परंतु अर्थ विपरीत निकल रहा है । वो बोला, "आप किस आतंकवाद की बात कर रहे हैं ? मैं कुछ समझा नहीं ?"

"सरकारी आतंकवाद...9/11 के बाद जिस तरह हम लोगों को वहां सताया गया, अपमानित किया गया, उसके बाद हमने उस देश से निकलने का निर्णय ले लिया ।"

"परंतु इस दुर्व्यवहार का कारण ?"

"हमारा मुसलमान होना और उस पर अरबी होना ।"

"मगर यह तो कोई बात नहीं हुई ।"

"आपके लिए नहीं है परंतु अमेरिकी सरकार के लिए है । आये दिन छापे, आये दिन पूछताछ । हर कोई शक की नज़र से देखता है । हर किसी के मन में हमारे प्रति घृणा पैदा कर दी गयी है । आख़िर इन्सान कब तक ऐसा व्यवहार सहन कर सकता है ? जब हमें विश्वास हो गया कि वे नहीं चाहते कि हम वहां रहें तो हमने भी निकलने का मन बना लिया ।"

एंटिन सोचने लगा, यह तो उल्टा हो गया । वह तो सोचता था कि सऊदी अरब से विदेशी आतंकवाद का शिकार होकर निकल रहे हैं, मगर यहां तो एक स्वदेशी अमेरिका के आतंकवाद से डरकर वापस जा रहा था । एंटिन ने बात आगे बढ़ायी, "मगर इस तरह का आतंकवाद सऊदी अरब में भी तो है ।"

"है तो...मगर इन दोनों में एक मूल अन्तर है । अमेरिका का आतंकवाद सरकार के समर्थन से हो रहा है जबकि सऊदी अरब में आतंकवाद प्रशासन के विरुद्ध है ।"

इस फ़र्क़ ने एंटिन को चौंका दिया । उसने विषय बदलते हुए कहा, "शायद इस कलयुग में यह हमारे जीवन का अटूट अंग बन गया है । अच्छा तो आप यह बताओ कि आप अमेरिका कब और कैसे गये ?"

"यह एक पुरानी कहानी है । मैं अस्ल में इराक़ का रहने वाला हूं और यह उस समय की बात है जब ईरान के ख़िलाफ़ युद्ध में सद्दाम हुसैन अमेरिका की आंखों का तारा था । उस समय मैंने अपनी पढ़ाई ख़त्म की थी और उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका गया था । अमेरिका में पढ़ायी पूरी करते ही मुझे नौकरी मिल गयी और फिर मैं वहीं का हो गया । जब मेरे घर वालों को पता चला कि अमेरिका में रहने वाला हूं तो उन्होंने एक अच्छे घराने की लड़की से मेरा विवाह कर दिया और फिर हम लोग अमेरिका में ही रहने लगे । मगर 9/11 के बाद सब कुछ बदल गया और मैं एक बार फिर अजनबी हो गया । आये दिन के डर से तंग आकर मैंने अपने परिवार के लोगों को सऊदी अरब रवाना किया और अब अपना हिसाब-किताब चुकता करके मैं भी जा रहा हूं ।"

"बहुत ख़ूब...परंतु सऊदी अरब को तुमने क्यों चुना ?"

अदनान बोला, "इसका कारण यह है कि मैं इस संसार की मोह-माया में बहुत दूर निकल गया था । मैंने सारी दुनिया का प्रवास किया परंतु कभी मक्का मदीना नहीं गया । दरअस्ल भौतिकवाद ने मुझे अपने धर्म से दूर कर दिया था । मैं पिछले साल अपने घर वालों के साथ हज के लिए सऊदी अरब आया तो मैंने महसूस किया कि सऊदी अरब दुनिया में सबसे पुरसुकून और सुरक्षित देश है ।

"अच्छा तो अब इरादा सऊदी अरब में नौकरी करने का है ?"

"नहीं...बहुत कर ली नौकरी ।"

"मैं इराक़ जाना चाहता हूं ।"

"वहां मैं अमेरिकी अतिक्रमण के विरुद्ध संघर्ष करूंगा।"

"अच्छा, तो तुम भी आतंकवादियों में शामिल होने जा रहे हो ?"

"आतंकवादियों में ? क्या बात करते हैं आप ? मैं तो वहां दहशतगर्दी के विरुद्ध लड़ने जा रहा हूं ।"

"अमेरिका के साथ ?"

"नहीं...अमेरिका के ख़िलाफ़ !"

"अमेरिका के ख़िलाफ़ दहशतगर्दी की जंग । यह तो

मैंने पहली बार सुना है ।''

''हो सकता है । इसलिए कि आप लोग तो वही कुछ सुनते हैं जो अमेरिका या उसका समर्थक संचार माध्यम कहता है । अब अमेरिका खुद अपने आपको तो आतंकवादी कह नहीं सकता इसलिए वह अपने विरोधियों को दहशतगर्द कह देता है ।''

''परंतु मैं तो अमेरिकी नहीं हूं ।''

''आप अमेरिकी नहीं हैं, मगर अमेरिका के हर सच और झूठ पर आंख मूंदकर विश्वास करने वालों में से एक हैं और इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं । मैं खुद भी उन्हीं में से था । लेकिन इराक़ में अमेरिकी फ़ौज के चढ़ाई के बाद मेरी आंखें खुल गयीं ।'' एंटिन ने कहा, ''मेरी तो समझ में कुछ भी नहीं आता ।''

''आ जाएगा...जब अमेरिका अपनी सेना कनाडा में भेजेगा तो सब समझ में आ जाएगा । जब वो आज़ादी दिलाने के नाम पर तुम लोगों को भी अपना गुलाम बना लेगा और जब तुम उसके क़ब्ज़े के ख़िलाफ़ आन्दोलन करोगे और ऐसा करने पर वह तो तुम्हें आतंकवादी कहेगा, तब तुम्हारी समझ में सब कुछ आ जाएगा ।''

पहली बार अदनान ने एंटिन से सवाल किया, ''एक बात बताओ, अमेरिका ने रासायनिक हथियारों का झूठ गढ़ के इराक़ पर ज़बरदस्ती क़ब्ज़ा किया या नहीं ।''

''इस झूठ को तो वह खुद ही स्वीकार कर चुके हैं ।'' एंटिन बोला ।

''इसके बावजूद इराक़ पर क़ब्ज़ा जमाये हुए हैं । अब अगर हम उसको अपने देश से निकालकर स्वराज स्थापित करना चाहते हैं तो वह हमें दहशतगर्द कहता है । क्या यह तर्क उचित है और तुम्हारी समझ में आता है ?''

एंटिन फंस चुका था । इस आसान से सवाल का उसके पास कोई जवाब नहीं था । हालांकि जवाब तो था परन्तु वह उससे बच रहा था, इसलिए एंटिन ने बात बनाते हुए कहा ।

''तुम्हारे विचार तो बड़े ऊंचे हैं । लेकिन यह जान जोख़िम का काम है, क्या तुम्हारा परिवार तुम्हें इसकी अनुमति देगा ?''

''जहां तक मेरे परिवार का सवाल है, वो खुद भी इस आग में जल रहा है जो मेरे सीने में लगी हुई है । दरअस्ल वह मेरे लिए रुकावट नहीं बनेगा बल्कि मेरा सहयोग करेगा । हमने आपस में विचार-विमर्श के पश्चात तय किया है कि मैं अपने छोटे बेटे के साथ समुद्री रास्ते से इराक़ जाऊंगा ।''

''परन्तु वहां जाकर क्या करोगे ?''

''वहां पर फ़िलहाल पुलिस में भर्ती का काम ज़ोरो-शोरों पर चल रहा है । हम दोनों उसमें भर्ती हो जाऐंगे । हथियार चलाने का प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे । दुश्मन के साथ रहकर उसके नापाक षड्यंत्रों की जानकारी प्राप्त करेंगे । उन्हीं के द्वारा हमें संघर्ष करने वालों का भी पता चल जाएगा जिनको वे ख़त्म करना चाहते हैं, यह सब जान लेने के बाद मुनासिब वक़्त पर हम स्वतंत्रता सेनानियों से जा मिलेंगे ।''

''हां, हमें पता है और यह ख़तरा हम मोल ले रहे हैं । हमें मौत का डर नहीं । हम आज़ादी की मौत को गुलामी की ज़िन्दगी से अधिक महत्व देते हैं । हमारी नीयत ठीक है इसलिए कार्यप्रणाली से कोई विशेष फ़र्क़ नहीं पड़ता । मगर हमें विश्वास है कि यह बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा और आज़ादी का सूरज इसी संघर्ष से उदय होगा । हम अपनी जान लड़ाकर यह सिद्ध कर देंगे कि हम अत्याचार और शोषण के सामने झुकने वाले नहीं, बल्कि ज़ालिमों से पंजा लड़ाने वाले लोग हैं । हमने अफ़ग़ानिस्तान में एक महाशक्ति को शमशान घाट पहुंचा दिया था और इराक़ में दूसरे की क़ब्र खोद रहे हैं ।''

एंटिन रक्तपात, सर्वनाश, मृत्यु और संघर्ष जैसे शब्दों से घबरा गया और उसने आंखें बंद कर लीं । रियाज़ एयरपोर्ट पर उतरते हुए एंटिन के दिल में अपने मुजरिम होने का एहसास पैदा हो गया था । वह अपने सहप्रवासी अदनान से आंखें नहीं मिला पा रहा था, फिर भी हाथ मिलाकर जुदा हो गया ।

एयरपोर्ट पर अपेक्षानुसार शमीम ने एंटिन का स्वागत किया और उसके साथ होटल हॉली डे इन की तरफ़ चल पड़ा । रास्ते में एंटिन ने गंभीरतापूर्वक पूछा, ''हालात बिल्कुल ठीक-ठाक हैं, किसी तरह का कोई ख़तरा तो नहीं है ?''

शमीम ने उसका साहस बढ़ाते हुए कहा, ''नहीं, चिंता की कोई बात नहीं है ।''

इतने में फ़ोन क़ी घंटी बज गयी । एंटिन के लिए मारिया का फ़ोन था और वह भी उससे वही सवाल कर रही थी जो अभी एंटिन ने शमीम से किया था । एंटिन उसे उन्हीं शब्दों में समझा रहा था जिनका प्रयोग अभी शमीम ने किया था । फ़ोन समाप्त हुआ और दोनों सुबह मिलने का वादा

करके एक-दूसरे से जुदा हो गये ।

दूसरे दिन सुबह, समय से पहले एंटिन तैयार होकर लॉबी में आ गया और शमीम को फ़ोन कर दिया । शमीम ने उसे बताया कि अभी एक घंटा शेष है और वह आधा घंटे बाद नाश्ता कर के निकलेगा । शमीम ने उसे भी शांति के साथ नाश्ता करने का सुझाव दिया । फ़ोन बंद करने के बाद एंटिन ने अख़बार उठाया । पहली ख़बर उसकी दिलचस्पी की थी । राजनीति के बजाय पर्यावरण के समाचार का महत्व देखकर उसे ख़ुशी हुई और वह अख़बार पढ़ते हुए नाश्ता करने लगा । जब अख़बार को लपेटकर उसने एक तरफ़ रखा और काफ़ी पीने लगा तो देखा कि सामने की मेज़ पर एक अंग्रेज़ बैठा हुआ था । उन दोनों ने आंखों-आंखों में एक-दूसरे का अभिनंदन किया और फिर एक-दूसरे के निकट आ गये । अंग्रेज़ ने एंटिन से उसका कार्यक्रम पूछा और जैसे ही एंटिन ने बताया कि वह दूसरे दिन जद्दा जा रहा है, तो वह चौंक पड़ा । एंटिन ने पूछा, "क्यों ? कोई संकट है ?"

अंग्रेज़ ने कहा, "वैसे तो कोई ख़ास बात नहीं है, लेकिन पिछले दिनों एक फ्रांसीसी की जद्दा में हत्या कर दी गयी थी ।"

एंटिन के कान खड़े हो गये, "पिछले दिनों, यानी एक आध हफ़्ते पहले ।"

"नहीं, यह लगभग पांच-छह हफ़्ते पहले की बात है ।"

"पांच छह सप्ताह पूर्व ! आप काफ़ी समय से यहां हो क्या ?"

"नहीं, मैं तो अभी तीन दिन पहले यहां आया था । परंतु चूंकि यहां आना था इसलिए यहां के हालात को जानना भी तो ज़रूरी था ।"

"परन्तु फ्रांसीसी को क्यों ?"

"हो सकता है स्कार्फ़ वाले मामले को लेकर क़त्ल किया गया हो । फ्रांस ने लड़कियों के स्कार्फ़ पर पाबन्दी लगाकर सारी दुनिया के मुसलमानों को नाराज़ कर दिया है ।"

"क्या हत्यारों ने इसका यही कारण बताया था ?"

"नहीं, उस वक़्त तो यह ख़बर आयी थी कि उसे अमेरिकी नागरिक समझकर ग़लती से मार दिया गया ।"

"क्या बात करते हो ?"

"सुना हे ये लोग सिर्फ़ अमेरिकियों और इंग्लैंड वालों को निशाना बनाते हैं ।"

"इसकी कोई ख़ास वजह ?"

"मुस्लिम जगत में हस्तक्षेप...और क्या ?"

"वह तो हमारे सत्ताधारी हैं जो कभी अफ़ग़ानिस्तान को, कभी ईरान को और कभी इराक़ को अपना निशाना बनाते रहते हैं, इसमें हमारा क्या क़सूर...?"

'ग़लती क्यों नहीं...? हम उन्हें चुनाव द्वारा शासन सौंपते हैं, उनका विरोध करने के बजाय समर्थन करते हैं ।"

एंटिन लाजवाब हो गया और बोला, "अगर गुस्सा हमारे ख़िलाफ़ है तो उन लोगों ने फ्रांसीसी नागरिक का क़त्ल क्यों किया ?"

"अरे भई ग़लती तो सभी से होती है । अब कोई हत्या करने से पहले पासपोर्ट तो चेक नहीं कर सकता । बस अंदाज़ा लगाता है और कभी-कभी इसमें चूक भी हो जाती है ।" "अच्छा यह बताओ, मेरे बारे में आतंकवादी क्या अंदाज़ा लगाएंगे ?" एंटिन ने प्रश्न किया ।

"तुम चेहरे से न केवल अमेरिकी बल्कि यहूदी भी लगते हो और फिर कनाडा को बहुत से लोग अमेरिका का ही अंग समझते हैं ।"

"तुम चेहरे से न केवल अमेरिकी बल्कि यहूदी भी लगते हो और फिर कनाडा को बहुत से लोग अमेरिका का ही अंग समझते हैं ।"

"तुम कहना क्या चाहते हो ? मुझे डरा रहे हो क्या ?"

"नहीं ऐसी बात नहीं है । यहां आने के बाद मुझ पर फ्रांसीसी की हत्या के विषय में कुछ नयी बातें मालूम हुईं ।" "वह क्या ?"

"पहले तो पता चला कि उसने किसी औरत को छेड़ा था, जिसका बदला लेने के लिए महिला के रिश्तेदारों नें उसे मौत के घाट उतार दिया ।"

"मगर क़ानून भी तो नहीं चीज़ होती है ।"

"इस देश में अपने नागरिकों के लिए तो सख़्त क़ानून व्यवस्था है लेकिन यूरोपियन देश अपने नागरिकों को राजनैतिक दबाव डालकर छुड़ा लेते हैं । इसलिए इन लोगों ने उनके ख़िलाफ़ क़ानूनी चाराजूई करने के बजाय खुद ही सज़ा देने का फ़ैसला कर लिया है ।"

"तुम्हें यक़ीन है कि ऐसा ही है ?" "पता नहीं, सुनते तो हैं, वैसे मैंने यह भी सुना है कि वह फ्रांसीसी नशीले पदार्थों का तस्कर था और दो गिरोहों की आपसी रंजिश का शिकार होकर अपनी जान गंवा बैठा ।" (जारी)

विश्वव्यापी नि:शस्त्रीकरण की दिशा में उठाएं सार्थक क़दम

❖ डॉ॰ जगदीश गांधी
(शिक्षाविद् एवं संस्थापक-प्रबंधक,
सिटी मान्टेसरी स्कूल, लखनऊ)

(1) शान्ति की सबसे बड़ी संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ के वैश्विक नि:शस्त्रीकरण के प्रयास : संयुक्त राष्ट्र संघ की जनरल एसेम्बली ने वर्ष 1978 के स्पेशल सेशन में सदस्य देशों को शस्त्रों की बढ़ती होड़ के ख़तरों पर अंकुश लगाने तथा जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रतिवर्ष 24 से 30 अक्तूबर को वैश्विक नि:शस्त्रीकरण सप्ताह मनाने की घोषणा की । संयुक्त राष्ट्र समय-समय पर इस विषय पर सदस्य देशों के राष्ट्राध्यक्ष तथा अधिकृत गैर-सरकारी संस्थाओं की मीटिंग बुलाकर वैश्विक नि:शस्त्रीकरण का प्रयास करता है ।

वैश्विक नि:शस्त्रीकरण के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने समय-समय पर सदस्य देशों को संधि के लिए भी प्रेरित किया है । शक्तिशाली देश संयुक्त राष्ट्र संघ की उपेक्षा करके ख़तरनाक परमाणु बम बनाने की होड़ में संलग्न हैं । विज्ञान की प्रगति इस युग की अभूतपूर्व उपलब्धि है । प्रकृति की शक्तियों को हाथ में लेने की क्षमता शायद ही कभी इतनी बड़ी मात्रा में मनुष्य के हाथ रही हो । विज्ञान दुधारी तलवार है । इससे जहां स्वर्गोपम सुख-शांति की प्राप्ति की जा सकती है, वहां ब्रह्माण्ड के इस अप्रतिम सुन्दर ग्रह को-पृथ्वी को, चूर्ण-विचूर्ण करके भी रखा जा सकता है । यदि एक पागल आदमी बस एक बम चला दे तो करोड़ों आदमी तो वैसे ही मर जाएंगे, बाक़ी बचे आदमियों के लिए हवा ज़हर बन जाएगी । ज़हरीली हवा, ज़हरीला पानी, ज़हरीले अनाज और ज़हरीले घास-पात को खा करके आदमी ज़िंदा नहीं रह सकता । तब सारी दुनिया के आदमी ख़त्म हो जाएंगे ।

(2) एक प्रभावशाली विश्व शासन तथा विश्व न्यायालय होना चाहिए : मानव जाति विनाश की दिशा में लगातार बढ़ती जा रही है । हाइड्रोजन और एटम अस्त्रों की इतनी बड़ी मात्रा उसने सर्वनाश के लिए ही संजोयी है । प्रस्तुत दुर्बुद्धि के बाहुल्य के रहते हुए यह असंभव नहीं कि इस बारूद में कोई उन्मादी किसी भी क्षण आग लगा दे और यह ईश्वरीय अरमानों से संजोयी, सींची हुई दुनिया क्षण भर में धूलिकण बनकर किसी नीहारिका के इर्द-गिर्द चक्कर लगाने लगे । विश्व का ऐसा दुखद अंत काल्पनिक नहीं, वर्तमान परिस्थितियों में उस स्तर का ख़तरा पूरी तरह मौजूद है ।

एक शोध के अनुसार परमाणु शस्त्र बनाने में जितनी धनराशि व्यय होती है उससे कई गुना धनराशि उसे नष्ट करने में व्यय होती है । स्टार वॉर की तैयारी के तहत अन्तरिक्ष में भी शक्तिशाली देशों ने घातक मिसाइलें फिट कर रखी है ।

एक शोध के अनुसार परमाणु शस्त्र बनाने में जितनी धनराशि व्यय होती है उससे कई गुना धनराशि उसे नष्ट करने में व्यय होती है । स्टार वॉर की तैयारी के तहत अन्तरिक्ष में भी शक्तिशाली देशों ने घातक मिसाइलें फिट कर रखी है ।

एक शुद्ध, दयालु तथा ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित व्यक्ति के लिए समस्त विश्व एक कुटुंब के समान है । गांधी जी ने कहा था कि कोई-न-कोई दिन ऐसा ज़रूर आएगा, जब जगत शांति की खोज करता-करता भारत में आएगा और भारत समस्त संसार की ज्योति बनेगा । पवित्रता

सबसे बड़ा हथियार होता है । पवित्र तथा शुद्ध होने पर व्यक्ति परिवार के लिए, परिवार गांव के लिए, गांव ज़िले के लिए, ज़िला प्रांत के लिए, प्रांत राष्ट्र के लिए और राष्ट्र सारे संसार के लिए अपने को कुरबान करता है।

(3) जब दो बमों के विस्फोट से मानवता कराह उठी ! : 65 वर्ष पूर्व 9 अगस्त, 1945 को द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका ने जापान के नागासाकी नगर पर 'फैट मैन' नाम का प्लूटोनियम बम गिराया था । इसके साथ ही तीन दिन पूर्व 6 अगस्त, 1945 को अमेरिका ने जापान के ही हिरोशिमा शहर पर 'लिटिल बॉय' नाम का यूरेनियम बम का विस्फोट किया था । इन दोनों परमाणु बमों का हिरोशिमा एवं नागासाकी नगर तथा इन दोनों शहरों में रहने वाले लोगों पर पड़ा प्रभाव इस प्रकार रहा :

1. हिरोशिमा में गिरे बम के कारण 13 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में तबाही फैल गयी थी ।
2. शहर की 60 प्रतिशत से अधिक इमारतें नष्ट हो गयीं।
3. एक अनुमान के अनुसार हिरोशिमा की कुल 3 लाख 50 हज़ार की आबादी में से 1 लाख 40 हज़ार लोग मारे गये थे ।
4. इनमें सैनिक और वे लोग भी शामिल थे जो बाद में परमाणु विकिरण की वजह से मारे गये । इसके पश्चात् भी बहुत से लोग लंबी बीमारी कैंसर और अपंगता के शिकार हुए ।
5. तीन दिनों बाद अमेरिका ने नागासाकी शहर पर पहले से भी बड़ा हमला किया, जिसमें लगभग 74 हज़ार लोग मारे गये थे और इतनी ही संख्या में लोग घायल हुए थे ।
6. नागासाकी शहर के पहाड़ों से घिरे होने के कारण केवल 6.7 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में ही तबाही फैल पायी ।
7. इसके अलावा इन दोनों बमों के रेडिएशन के प्रभाव से बाद के वर्षों में भी हज़ारों बच्चों में कैंसर जैसी बीमारी होती रही और वे असमय काल के ग्रास में समाते रहें।
8. इन बमों से निकलने वाली विषैली गैसों ने 18,000 किलोमीटर तक के क्षेत्र को अपने प्रभाव में ले लिया था ।
9. इन बमों के प्रभाव से इतनी ऊर्जा पैदा हुई जिससे 20,000 फॉरेनहाइट डिग्री तक गर्मी पैदा हुई जिससे बिल्डिंग व मकान आदि काग़ज़ों की तरह उड़ने लगे ।
10. इन बमों के धुंए का गुबार 18 किमी तक ऊंचा उठ गया था ।
11. इन बमों के प्रभाव से बच्चों व बड़ों की चमड़ी तक गल कर आपस में चिपक गयी ।

(4) बमों के ज़ोर से नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून से विश्व को कुटुम्ब बनाया जा सकता है :

एक आंकड़े के अनुसार वर्तमान में विश्व में परमाणु संपन्न देश व उनके द्वारा निर्मित परमाणु बमों की संख्या इस प्रकार हैं :

1. यूनाइटेड स्टेट्स अमेरिका - 10,640 परमाणु बम
2. रूस - 10,000 परमाणु बम
3. फ्रांस - 464 परमाणु बम
4. चीन - 420 परमाणु बम
5. इसराईल - 200 परमाणु बम
6. यूनाइटेड किंगडम - 200 परमाणु बम
7. भारत - 95 परमाणु बम
8. पाकिस्तान - 50 परमाणु बम

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 51 हमें अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून का सम्मान करने की सीख देता है । अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून का सम्मान करना राष्ट्रीय क़ानून का सम्मान जैसा ही पवित्र कर्त्तव्य है ।

(5) अब हिरोशिमा और नागासाकी जैसी घटनाएं दोहरायी न जाए ! : नाभिकीय अस्त्र या परमाणु बम एक विस्फोटक युक्ति है जिसकी विध्वंसक शक्ति का आधार नाभिकीय अभिक्रिया होती है । यह नाभिकीय संलयन या नाभिकीय विखंडन या इन दोनों प्रकार की नाभिकीय अभिक्रियाओं के सम्मिलन से बनाए जा सकते हैं । दोनों ही प्रकार की अभिक्रियाओं के परिणामस्वरूप थोड़ी ही सामग्री से भारी मात्रा में ऊर्जा उत्पन्न होती है । आज का एक हज़ार किलो से थोड़ा बड़ा नाभिकीय हथियार इतनी ऊर्जा उत्पन्न कर सकता है जितनी कई अरब किलो के परंपरागत विस्फोटकों से ही उत्पन्न हो सकती है । नाभिकीय हथियार महाविनाशकारी हथियार कहे जाते हैं । आज की परिस्थितियां ऐसी हैं, जिनमें मनुष्य तबाही की ओर जा रहा है । दो महायुद्ध हो चुके हैं और अब तीसरा हुआ तो दुनिया का

ठिकाना नहीं रहेगा, क्योंकि वर्तमान में घातक शस्त्र इतने ज़बरदस्त बने हैं, जो आज दुनिया में कहीं भी चला दिये गये तो एक परमाणु बम पूरी दुनिया को समाप्त कर देने के लिए काफ़ी है । नागासाकी और हिरोशिमा पर तो आज की तुलना में छोटे-छोटे दो बम गिराये गये थे । आज उनकी तुलना में एक लाख गुना अधिक ताक़त के बम बनकर तैयार हैं ।

(6) युद्ध में फंसी हुई दुनिया शांति के अमृत की प्यासी है : वर्तमान में एटम बम के अलावा 22 प्रकार के अन्य बमों के निर्माण विभिन्न देशों के द्वारा किये जा चुके हैं, जो बहुत ज़्यादा भयानक एवं ख़तरनाक हैं । ये बम इतने ज़्यादा ख़तरनाक है जिनके द्वारा पूरे विश्व का ख़ात्मा कई बार किया जा सकता है । युद्ध में फंसी हुई दुनिया शांति के अमृत की प्यासी है । अणुबम ने उन श्रेष्ठतम भावनाओं को मार दिया है, जिन्होंने मानव-जाति को युगों से जीवित रखा है । सर्वनाश का जो ख़तरा दुनिया के सिर पर झूल रहा है, उससे बचने का इसके सिवा दूसरा कोई मार्ग नहीं है कि हृदय की एकता को उसमें समाये हुए सारे भव्य अर्थों के साथ साहसपूर्वक और बिना किसी शर्त के स्वीकार कर लिया जाए । अगर हथियारों के लिए इसी प्रकार की पागलपन भरी प्रतिस्पर्धा जारी रही तो निश्चित रूप से उसका परिणाम ऐसे भयानक मानव-संहार के रूप में आएगा जैसा कि संसार के इतिहास में इसके पहले कभी नहीं हुआ । अगर कोई विजेता बचा रहा तो जिस राष्ट्र की विजय होगी, उसके लिए वह विजय भी जीवित-मृत्यु जैसी बन जाएगी ।

(7) पृथ्वी एक देश है तथा मानव जाति इसके नागरिक है : हमारा मानना है कि सारे संसार में व्याप्त ग्लोबल वार्मिंग, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद एवं तीसरे विश्व युद्ध की विभीषिका जैसी विषम सामाजिक परिस्थितियों से मुक्ति के लिए संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षा को विश्वव्यापी बनाना चाहिए । प्राचीन काल से हमारी मान्यता वसुधैव कुटुम्बकम अर्थात 'सारी वसुधा एक कुटुम्ब के समान है' की रही है । बहाउल्लाह ने कहा है कि पृथ्वी एक देश है तथा मानव जाति इसके नागरिक है । धर्म की अज्ञानता को दूर करने के लिए विश्व धर्म की शिक्षा बच्चों को देने की आवश्यकता है । सारे विश्व में इस ज्ञान को फैलाना चाहिए कि ईश्वर एक है, धर्म एक है तथा मानव जाति एक है । हमें पूरा विश्वास है कि शैतानी सभ्यता के स्थान पर आध्यात्मिक सभ्यता स्थापित करने में हम निकट भविष्य में सफल होंगे ।

(8) विश्व एकता की शिक्षा की आज सर्वाधिक आवश्यकता है : हमारा मानना है कि युद्ध के विचार मानव मस्तिष्क में पैदा होते हैं । इसलिए मानव मस्तिष्क में ही शान्ति के विचार डालने होंगे । मनुष्य को विचारवान बनाने की श्रेष्ठ अवस्था बचपन है । इसलिए संसार के प्रत्येक बालक को विश्व एकता एवं विश्व शांति की शिक्षा बचपन से अनिवार्य रूप से दी जानी चाहिए । मानव इतिहास में वह क्षण आ गया है जब शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन लाने का सशक्त माध्यम बनाकर विश्व भर में हो रही उथल-पुथल का समाधान विश्व एकता तथा विश्व शान्ति की शिक्षा द्वारा प्रस्तुत करना चाहिए । हमें बाल एवं युवा पीढ़ी को अपने चुने हुए क्षेत्र में वर्ल्ड लीडर बनाना है । इसके साथ ही विश्व के सभी देशों का यह नैतिक उत्तरदायित्व है कि वे विश्व के 2.4 अरब बच्चों के साथ ही आगे जन्म लेने वाली पीढ़ियों के सुन्दर एवं सुरक्षित भविष्य के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ को शक्ति प्रदान कर उसे विश्व संसद के रूप में परिवर्तित करना चाहिए । ग्लोबल विलेज के युग में अब वैश्विक समाज का एक प्रभावशाली विश्व शासन तथा विश्व न्यायालय होना चाहिए तभी वसुधैव कुटुम्बकम तथा ग्लोबल विलेज की अवधारणा साकार होगी ।

इसके साथ ही विश्व के सभी देशों का यह नैतिक उत्तरदायित्व है कि वे विश्व के 2.4 अरब बच्चों के साथ ही आगे जन्म लेने वाली पीढ़ियों के सुन्दर एवं सुरक्षित भविष्य के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ को शक्ति प्रदान कर उसे विश्व संसद के रूप में परिवर्तित करना चाहिए । ग्लोबल विलेज के युग में अब वैश्विक समाज का एक प्रभावशाली विश्व शासन तथा विश्व न्यायालय होना चाहिए तभी वसुधैव कुटुम्बकम तथा ग्लोबल विलेज की अवधारणा साकार होगी ।

मकतबा अलफहीम मऊ

की नई हिंदी इस्लामी पुस्तकें

मुख्तसर तफसीर अहसनुल बयान	450/=
बुलूगुल मराम	275/=
नबूवत की किरनें मौ० सफीउर्रहमान मो०	275/=
हुकूकुलएबाद सलाहुददीन यूसुफ	55/=
हुकूकुल औलाद सलाहुददीन यूसुफ	50/=
हुकूकुज़्ज़ौजैन सलाहुददीन यूसुफ	32/=
सैय्यदना अबू बक्र सिद्दीक रज़ि:	28/=
सैय्यदना उमर फारूक रज़ि:	28/=
सैय्यदना उसमान गनी रज़ि:	28/=
सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि:	28/=
इस्लाम पर ४० एतेराज़ात और उसके जवाबात	80/=
कुरआन और विज्ञान डा. ज़ाकिर नाइक	50/=
इस्लाम और हिन्दूधर्म में समानताएं	50/=
क्या कुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है	60/=
विशेष धर्मों में ईश्वर की कल्पना	28/=
इस्लाम में औरतों के अधिकार	60/=
इस्लाम आतंकवाद या भाईचारा	50/=
मांसाहार उचित या अनुचित	60/=
जन्नत का बयान इकबाल कीलानी	120/=
जहन्नम का बयान इकबाल कीलानी	130/=
नमाज़ के मसाइल इकबाल कीलानी	120/=
तौहीद के मसाइल इकवाल कीलानी	120/=

सुन्नत के मसाइल इकबाल कीलानी	80/=
तौहीद के आंसू इकबाल कीलानी	65/=
हमारी दावत किताब व सून्नत	40/=
चेहरे का पर्दा मुस्तहब या वाजिब	20/=
मुहम्मद(स०) हिन्दू किताबों में	65/=
तावीज़ गंडा की हक़ीक़त	30/=
और मैं मर गया	32/=
मसला उर्स और ग्यारहवीं	30/=
इस्लाम और इमान के अरकान	80/=
किताबुत्तौहीद	75/=
कुरआन की शीतल छाया	85/=
अल्लाह और उसके रसूल की पहचान	50/=
जादू का इलाज	85/=
कलमा-ए-तौहीद अर्थ, महत्तव, फज़ीलत	28/=
इस्लाम एक नज़र में	50/=
इस्लाम खालिस क्या है	22/=
इस्लामी अक़ीदा	22/=
इस्लाम क्या है	50/=
मासूरह दुआएं	30/=
हिसनुल मुसलिम (उच्चारण सहित)	50/=
नमाज़े मोहम्मदी (उच्चारण सहित)	35/=
परदा	35/=

आप घर बैठे किताबें VPP डाक द्वारा मँगा सकते हैं। एकाउंट में रक्म ट्रांस्फर करने पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा किताबें भेजने की सुविधा है।

MAKTABA AL-FAHEEM

Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email :faheembooks@gmail.com

कथा सत्य नारायण की और जीवन सत्य से ख़ाली

बात किसी व्यक्ति विशेष या संप्रदाय विशेष या धर्म विशेष की भावना को ठेस पहुंचाने की नहीं है लेकिन एक विडंबना अवश्य है कि प्रत्येक हिन्दू माह की पूर्णमासी पर वैष्णव भक्त पवित्र नदियों के किनारे या अपने-अपने घरों में सत्यनारायण की कथा कराते हैं । इस कथा में एक विशेष बात भी है कि "कथा क्या है ?" यह तो किसी को पता नहीं, लेकिन पंडिताजी यह ज़रूर बताएंगे कि अमुक व्यक्ति ने यह कथा करायी तो उसको अमुक अभीष्ट सिद्धि या लाभ हुआ और जिसने कथा कराने का संकल्प करने के बाद कथा नहीं करायी तो उसका अमुक अनिष्ट हुआ ।

हास्यस्पद बात यह है कि चौबीसों घंटों झूठ का अमल करने वाले सत्य नारायण की कथा आयोजित करते हैं और प्रतिज्ञा तो सत्य बोलने, सत्य श्रवण करने और सत्य को ही आचरण में ढालने की करते हैं लेकिन दैनिक व्यवहार में सत्य कोसों दूर रहता है / बुद्धि में अहंकार, मन में ईर्ष्या द्वेष राग वैमनस्य, वाणी पर हर समय स्थित अटल स्थिर व्यंग्य और रोगी काया इन सबके रहते मनुष्य सत्य तो दूर की बात ईश्वर भजन भी नहीं कर सकता ?

वेद शास्त्र पुराण और संत वाणी सब एक सुर में समझाते हैं कि यदि व्यक्ति अपने जीवन में सत्य को शत-प्रतिशत धारण कर ले तो उसको किसी पूजा या सत्संग की आवश्यकता ही नहीं है, क्योंकि सत्य तो स्वयं नारायण है । पूरी ज़िन्दगी गुज़ारने के बाद जब शव अर्थी पर लेट जाता है तो कंधे देने वाले मुर्दे को सुनाते हैं कि रामनाम सत्य है लेकिन अब बेचारा यह सुनकर क्या करेगा और जो सुना भी रहे हैं उनको भी शमशान में क्षणिक सन्यास तो होता है लेकिन जैसे ही मुर्दा फूंककर घर की ओर चले कि फिर असत्य झूठ वैमनस्य ईर्ष्या द्वेष के घेरे में पहुंच जाते हैं ।

छोटा बच्चा झूठ नहीं बोलता लेकिन उसके परिवारजन उसको झूठ बोलना सिखाते हैं, झूठ बोलने की प्रैक्टिस कराते हैं और झूठ न बोलने पर डांट-डपट तक करते हैं लेकिन जब यही झूठ उस बच्चे से लेकर वयस्क हो चुके मनुष्य में पूर्णतः स्थान बना चुका होता है तो अब उसको झूठ का परित्याग करके सत्य को धारण करने की शिक्षा दी जाती है जो कि अब असंभव है/चोरी, असत्य भाषण और व्यभिचार ये तीन गुण दोष ऐसे हैं कि जो एक बार मन बुद्धि में प्रवेश कर गये तो फिर कितना भी प्रयास कर लो ये जाने वाले नहीं हैं / माता-पिता अपने छोटे-छोटे बच्चों को फ्लाइंग किस मारना सिखाते हैं और घर में किसी अथिति के आने पर अपने बच्चे से फ्लाइंग किस मारकर दिखाने का स्वांग भी करते हैं, लेकिन बड़ा होकर जब यही बच्चा इसी फ्लाइंग किस का सड़क चलती लड़की पर प्रयोग करता है तो ये ही माता-पिता यह कहते सुने जाते हैं कि इनके माता-पिता ने इनको संस्कार नहीं दिये ? अब सोचने की बात है कि बच्चों को झूठ बोलना सिखाने वाले, उनको चोरी करना सिखाना वाले और फ्लाइंग किस मारना सिखाने वाले माता-पिता यदि अपने बच्चों को इन सब बुरी आदतों से दूर रखते तो आज उनको किसी सत्य नारायण कथा कराने या सुनने की ज़रूरत ही कहां पड़ती ?

अक्सर लोग कहते सुने जाते हैं कि बच्चे और बूढ़े लगभग एक जैसे ही होते हैं क्या आप इससे सहमत हैं ? कदापि नहीं सहमत नहीं हो सकते क्योंकि बचपन में बच्चों को चलना सिखाया जाता है लेकिन बुढ़ापे में चलना जानते हुए भी चल नहीं पाता और गिर जाता है / बचपन में बच्चा कभी झूठ नहीं बोलता और बुढ़ापे में सत्य बोला नहीं जाता क्योंकि सारा जीवन असत्य क्लेश-कलह राग द्वेष वैमनस्य में ही गुज़ार दिया और ये सब गुण अब इतने परिपक्व हो गये कि अब निकल नहीं सकते ।

आज बाज़ार में हर वस्तु नक़ली भी मिलती है और नक़ली सामान बनाने वाले इतनी ख़ूबसूरती से नक़ली

सामान बनाते हैं कि आसानी से अस्ली-नक़ली में भेद नहीं पकड़ा जा सकता लेकिन जिन घरों में ये नक़ली सामान बन रहे हैं वे क्या विदेशी हैं ? जी नहीं ! वे सब स्वदेशी और संभ्रांत घरानों से ही होते हैं और जब इन्हीं नक़ली सामान बनाने वालों को खुद कोई नक़ली सामान ख़रीदना पड़ जाता है तो ज़माना ख़राब हो जाता है, सरकार बेईमान हो जाती है और कलियुग का आधिपत्य हो जाता है / खुद नक़ली बनाओ तो वह पैसा कमाने का माध्यम है और यही कहा जाता है कि भाई पैसा कमाओ, धन तो आख़िर धन है, क्या काला और क्या सफ़ेद ? संसार में पैसा कमाना है तो भाई झूठ-फ़रेब कमीशनबाज़ी यह सब तो करना ही पड़ेगा लेकिन जब स्वयं इसी गोरखधंधे का शिकार बन जाओ तब भाषा इतनी अमर्यादित और असभ्य क्यों हो जाती हैं ?

समाज में कोई बाहरी व्यक्ति नहीं है, बल्कि हम सब मिलकर ही समाज बनाते हैं, जो आशा हम दूसरों से रखते हैं वही दूसरे हम से भी रखते होंगे / हम किसी को धोखा दे रहे हैं तो कोई हमें भी ठग रहा होता है / यही क्रम चलता आ रहा है और इस क्रम को तोड़ने का केवल एक ही माध्यम है और वह है अपने बच्चों को चोरी, झूठ, हिंसा, वैमनस्य और ईर्ष्या से हर संभव तरीक़े से दूर रखने का प्रयास करना / छोटा बच्चा तो स्वाभाविक रूप से ही ईमानदार, सत्यवादी और अहिंसक होता है लेकिन बेईमानी, झूठ और हिंसा के संस्कार उसमें भरे जाते हैं और यही कुसंस्कार परिपक्व होकर मनुष्य को रावण बना देते हैं । अत: सत्य नारायण की कथा भी यही और सत्य नारायण कथा का सार भी यही है कि सत्य बोलना, सत्य सुनने का धैर्य, संयम व साहस होना और सत्य को जीवन में शत-प्रतिशत धारण करना ही वास्तविक पुरुषार्थ है ।

रचना रस्तोगी
189/9 वेस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ (यू०पी०)

लघुकथाएं

तालियां

समूचा पंडाल लोगों से भर गया था । लोगों की भारी भीड़ देखकर नेता जी बहुत खुश हुए । नेता जी ने अपना ओजस्वी भाषण सुनानां शुरू किया । लोग नेता जी का भाषण सुनने में तल्लीन थे । लेकिन वे भाषण पर तालियां नहीं बजा रहे थे ।

इस बात से नेता जी बड़े निराश दिखायी देने लगे तो उसके समर्थकों ने लोगों से तालियां बजाने का अनुरोध व आग्रह भी किया । पर लोग थे कि तालियां बजाने का काम नहीं ले रहे थे ।

तभी नेता जी को एक उपाय सूझा । उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि वे भाषण पर न सही, पर तालियां बजाने में कंजूसी न करें । तालियां बजाने से मन प्रसन्नचित होता है तथा स्वास्थ्य भी ठीक रहता है । नेता जी की यह बात सुन लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट से वातावरण को गूंजा दिया ।

तालियों की गड़गड़ाहट में नेता जी का ओजस्वी भाषण भी ठीक से सुनायी नहीं दे रहा था । किन्तु नेता जी तालियों की गड़गड़ाहट से खुश थे । वहीं लोग तालियां बजाकर खुश थे ।

घोषणा पत्र

चुनाव प्रचार अपने यौवन पर था । विपक्षी दल ने आज पार्टी कार्यालय में एक पत्रकार सम्मेलन का आयोजन किया था ।

पार्टी अध्यक्ष जब पत्रकारों को संबोधित करने लगे तो एक पत्रकार ने उनसे पूछ लिया–

"अध्यक्ष महोदय जी, सत्तारूढ़ दल ने अपना चुनावी घोषणा पत्र जारी कर दिया है । अब आप अपनी पार्टी का घोषणा पत्र कब जारी कर रहे हैं ?"

पत्रकार का यह प्रश्न सुनकर अध्यक्ष जी ने मुस्कराते हुए जवाब दिया–

"पत्रकार महोदय, हमें इसके जारी करने की क्या ज़रूरत है ? जो वादे सत्तारूढ़ दल ने अपने घोषणा-पत्र में किये हैं, वे सब हमारे ही तो हैं । हम इन वादों को पूरा करेंगे । फिर भी जिन वादों को सत्तारूढ़ दल ने छोड़ दिया है, उन शेष वादों को भी हमारी पार्टी पूरा करेगी । इसका मैं वचन देता हूं ।"

अध्यक्ष महोदय का यह जवाब सुनकर सभी पत्रकार स्तब्ध रह गये ।

रोहित यादव
सैदपुर, मंडी अटेली (हरियाणा)

मुद्दों से ध्यान हटाने की कला !

■ सी॰ के॰ रहमानी

हाल में एक टी॰वी॰ पत्रकार उमाशंकर सिंह ने अपने ब्लाग में एक लेख लिखा । वह लेख जनसत्ता ने छापा । इसके अलावा एक अन्य अख़बार ने प्रकाशित किया । लेख में पत्रकार ने उस घटना का ब्योरा दिया जिसमें सांसद और मंत्री सरकार के सौ दिन पूरे होने के बाद प्रधानमंत्री से मिलने गये । इस मीटिंग में मंत्रियों और सांसदों ने प्रधानमंत्री मोदी से मार्गदर्शन मांगा था कि वह क्या करें ? मंत्रियों ने और सांसदों ने प्रधानमंत्री से कहा कि हमने चुनाव से पहले जनता से महंगाई कम करने का वादा किया था लेकिन महंगाई कम नहीं हुई और बढ़ती जा रही है । हमारे वादे पर जनता ने हमें अभूतपूर्व समर्थन दिया ।

अब सरकार चलाते हुए छह महीना हो गये हैं, लेकिन महंगाई कम नहीं हुई । इस पर प्रधानमंत्री ने कहा कि 'महंगाई कम नहीं होगी और बढ़ेगी लेकिन इस महंगाई से निबटने का उन्होंने तरीक़ा बताया कि जनता का ध्यान मुद्दों और महंगाई से हटाना सीखो ।' जब महंगाई से ध्यान हट जाएगा तो महंगाई महसूस ही नहीं होगी । यानी सांप भी मर गया और लाठी भी नहीं टूटी । इसी नीति पर भाजपा और एन॰डी॰ए॰ की सरकार चल रही है ।

अब सरकार चलाते हुए छह महीना हो गये हैं, लेकिन महंगाई कम नहीं हुई । इस पर प्रधानमंत्री ने कहा कि 'महंगाई कम नहीं होगी और बढ़ेगी लेकिन इस महंगाई से निबटने का उन्होंने तरीक़ा बताया कि जनता का ध्यान मुद्दों और महंगाई से हटाना सीखो ।' जब महंगाई से ध्यान हट जाएगा तो महंगाई महसूस ही नहीं होगी ।

मोदी ने सांसद और मंत्रियों को खाली सलाह ही नहीं दी, बल्कि उस पर खुद अमल भी कर रहे हैं । एक उदाहरण देखिए । मोदी की अमेरिकी यात्रा से पहले और पांच दिन वहां रहने तक भारत के हर चैनल और हर अख़बार मोदी ही मोदी छाए रहे । हर चर्चा में मोदी, हर अख़बार के लेख में मोदी ही मोदी । ऐसा लगा मानो यह एक प्रधानमंत्री की यात्रा नहीं बल्कि एक इवेंट हो । ऐसा होना हमारे लिए गर्व की बात है, क्योंकि मोदी अमेरिका में किसी पार्टी का नहीं बल्कि पूरे देश का वहां प्रतिनिधित्व कर रहे थे । उनसे या उनकी पार्टी से किसी को भी मतभेद हो सकता है लेकिन विदेश में पूरा देश उनके साथ होना ही चाहिए ।



उनकी यात्रा से ऐसा महसूस हुआ कि जिस तरह से मोदी का अमेरिका में स्वागत हुआ शायद ही हिन्दुस्तान के किसी प्रधानमंत्री का ऐसा स्वागत हुआ हो । अप्रवासी भारतीयों ने तो उनके लिए पलक पावड़े बिछा दिये थे । यह स्वागत अभूतपूर्व था । यह अलग बात है कि अमेरिकी मीडिया ने मोदी की यात्रा को तवज्जोह नहीं दी । 'वाशिंगटन पोस्ट' न्यूयार्क टाइम्स' से लेकर गार्जियन तक हर अख़बार ने मोदी को पहले, दूसरे या तीसरे पेज पर भी कवरेज नहीं दी थी, बल्कि ओपेड पेज (संपादकीय पृष्ठ के सामने वाला) पर उनकी ख़बरें छापी थीं । सह अमेरिकी मीडिया का भारत के प्रधानमंत्री के प्रति घटिया सोच का प्रतीक थी । मोदी की इस यात्रा की एक ख़ास बात यह रही कि मोदी के भारत में क़दम रखने के साथ ही 62 दवाएं बेहद महंगी हो गयीं । ये सभी दवाएं जीवन रक्षक की श्रेणी में आती हैं । इन दवाओं में कैंसर/हार्ट से लेकर ब्लड प्रेशर तक की दवा शामिल है । जो एंटी कैंसर दवा साढ़े आठ हज़ार की आती थी वही दवा अब एक लाख आठ हज़ार की आ रही है । जो साढ़े पांच हज़ार की आती थी वह एक लाख 15 हज़ार की हो गयी है ।

ये दवा बनाने वाली कंपनियां कुछ भारतीय हैं और कुछ अमेरिकी हैं । इसके अलावा संबंधों के स्तर पर अमेरिका से क्या-क्या डील हुई और डील में भारत को क्या नफ़ा नुक़सान हुआ और दवाओं पर से सरकारी नियंत्रण क्यों हटाया गया इसका विश्लेषण होना था । ज़ाहिर है इसमें मोदी की किरकिरी होना तय थी इसलिए उन्होंने मुद्दे से ध्यान हटाने के लिए आते ही राष्ट्रीय स्तर पर सफ़ाई अभियान चलवा दिया । मोदी बहुत अच्छे वक्ता हैं और बहुत अच्छे मार्केट मैनेजर हैं । इसलिए वह जहां जाते हैं इवेंट बन जाते हैं । सफ़ाई अभियान को भी उन्होंने इवेंट बना दिया ।

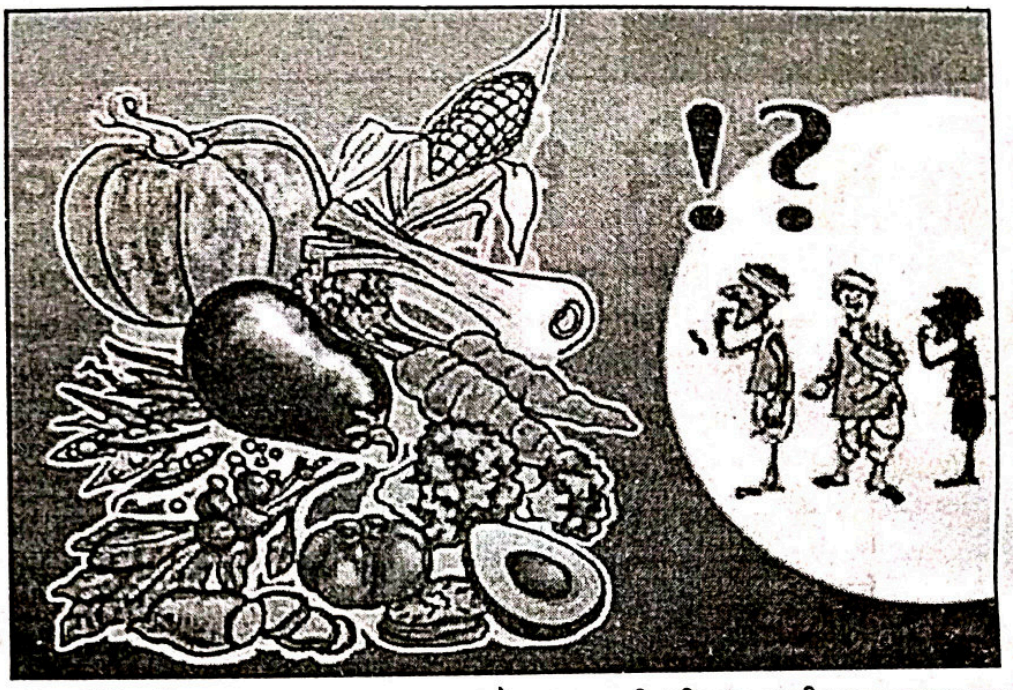

अमेरिकी संबंधों और महंगी की गयी दवाओं को लेकर चर्चा होने वाली चर्चा सफ़ाई अभियान की भेंट चढ़ गयी । इसे कहते हैं मुद्दों से ध्यान हटाने की कला । यही कला मोदी जी अपने मंत्रियों और सांसदों को सिखाना चाह रहे हैं । यह अलग बात है वह इस कला में कितना आगे निकल पाएंगे ।

ऐसा नहीं है कि ध्यान बंटाने की कला में सिर्फ़ मोदी या भारतीय नेताओं का ही एकाधिकार है । इस काम में पाकिस्तान भी बहुत आगे है । जैसे ही पाकिस्तान के अंदरूनी हालात ख़राब होते हैं वह अपना रामवाण इस्तेमाल करने लगता है । यानी वह भारतीय सीमा पर गोलीबारी शुरू कर देता है । पाकिस्तान के लोग भारत को लेकर बेहद संवेदनशील हैं । वह भारत से निबटने के लिए एकजुट हो जाते हैं । परिणामस्वरूप आंतरिक विद्रोह शांत हो जाता है । ऐसे ही हालात भारत के हैं । जैसे ही सीमा पर गोलीबारी शुरू होती है हमारी मुट्ठियां तन जाती हैं और पाकिस्तान को नेस्तनाबूद करने के लिए संकल्प लेने लगते हैं । ऐसा दोनों ही देश की जनता करती है । वहां आंतरिक विद्रोह शांत हो जाता है और इधर महंगाई की कोई बात नहीं करता । इधर और उधर तब तक कोई समस्या नहीं उठाएगा जब तक कि गोलीबारी चलती रहेगी । यह दोनों तरफ़ की जनता के साथ भावनात्माक खिलवाड़ है ।

एक बात और भारत की सीमा पर चीन हमला करता है तो कोई बात नहीं । तब हमारी मुट्ठियां नहीं तनतीं । इसी तरह अमेरिका पाकिस्तान में घुसकर मारता है तब वहां के लोगों का ख़ून नहीं खौलता, लेकिन भारत और पाकिस्तान के बीच ज़रा-सी कोई बात हो जाए कुछ होता है तो हंगामा बरपा जाता है । यह हंगामा दोनों देश की जनता के लिए त्रासदी होती है, लेकिन दोनों ही देश के नेताओं के लिए संजीवनी का काम करता है ।

अब सवाल रहा महंगाई का तो वह मोदी सरकार किसी भी क़ीमत पर कम नहीं कर सकती है । कहा जाता है कि लोकसभा चुनाव प्रचार में मोदी ने दस हज़ार करोड़ रुपये ख़र्च किये हैं । वह कहां से आये ? ज़ाहिर है वह रुपया उद्योगपतियों ने लगाया होगा । जो उद्योगपति पैसा लगवाएगा वह उसका दस गुना वसूल भी करेगा । वह अपने उत्पाद को महंगे दाम पर बेचकर रुपया कमाएगा और सरकार उस पर अंकुश नहीं लगा सकती क्योंकि उद्योगपति आपके ऊपर पहले ही रुपया लगा चुका है । सरकार उस पर रोक लगाने से रही ? जनता की कौन सुने । जनता उस भेड़ की तरह जिसको हर हाल में मुड़ना ही है । सरकार कोई भी आये लेकिन उसे राहत नहीं मिलनी । यूं भी जनता को सब्ज़बाग दिखाकर सत्ता हासिल करना और बात है और उसकी समस्याओं को दूर करना अलग बात है । हम भगवान से दुआ करते हैं कि मोदी ने जो जनता से वादे किये हैं वह उन्हें पूरा करें ताकि जनता बढ़ती महंगाई से राहत पा सके ।

अस्ल गुनाहगार है हमारा लोकतंत्र

■ विभांशु दिव्याल

छत्तीसगढ़ के नसबंदी शिविरों में हुए ऑपरेशनों के बाद 15 औरतें अब तक मौत के मुंह में समा चुकी हैं और कई मौत का निवाला बनने की तैयारी में हैं । कहते हैं कि ये मौतें डॉक्टर की लापरवाही से हुई यानी उस सूरमा डॉक्टर की लापरवाही से जो अब तक ऐसे 50 हज़ार ऑपरेशन कर चुकने के लिए राज्य सरकार से वीरता पुरस्कार पा चुका है । इस शिविर में भी उसने कमाल का काम किया । उसने सारे निर्धारित मानकों की धज्जियां उड़ाकर अकेले दम 83 महिलाओं के ऑपरेशन मात्र 5-6 घंटे की अवधि में निपटा दिये यानी एक ऑपरेशन 3-4 मिनट में । उसने एक ऑपरेशन में इतना समय भी नहीं लगाया जितना कि एक व्यक्ति एक नारियल को छीलने में लगा देता है ।

चाहे भोपाल त्रासदी हो या उत्तराखंड की या फिर छत्तीसगढ़ के शिविर में हुई चंद मौतें, हर जगह यही शैली कार्यरत रही है । इस पर कोई नियंत्रण नहीं कोई अंकुश नहीं, यह निर्बाध जारी है । अगर अन्ना हज़ारे जैसा कोई सिरफिरा व्यक्ति इस शैली में हस्तक्षेप करने की कोशिश करता है तो सारी राजनीतिक ताक़तें उसे झाड़-बुहारकर इतिहास के कूड़ेदान में फेंक देती हैं ।

जैसा कि हर मानव निर्मित त्रासदी के बाद होता है, यहां भी वही अश्लील खेल शुरू हो गया–खुद को बचाने और दूसरे को फंसाने का गंदा खेल । यह गिरफ़्तार और बर्ख़ास्त हुआ डॉक्टर कहता है कि मौतें ऑपरेशन के कारण नहीं बल्कि उन दवाइयों के कारण हुईं जो इन महिलाओं को दी गयी । यानी ये दवाइयां नक़ली थीं या अपनी जीवंतता अवधि को पार कर चुकी थीं या ये गुणवत्ताविहीन थीं । दवाओं के ठेकेदार कहते हैं कि मौतें दवाओं के कारण नहीं बल्कि उन मशीनों और उपकरणों के कारण हुईं जो ऑपरेशन में प्रयुक्त हुए । ये उपकरण जंग लगे थे या संक्रमित थे जिनके कारण महिलाएं संक्रमित हुई और मौत का शिकार हुई ।

क्योंकि बड़ी संख्या में हुई मौतों के कारण तात्कालिक दबाव है इसलिए मुख्यमंत्री को कुछ करना है, संबंधित मंत्री को कुछ करना है और स्वास्थ्य एवं प्रशासन संबंधी बड़े अधिकारियों को भी कुछ करना है । मांगें उठ रही हैं कि जिस डॉक्टर की वजह से यह हुआ है उसे सूली पर चढ़ा दिया जाए, जिन कर्मचारियों की वजह से उपकरण विसंक्रमित नहीं हुए उन्हें पकड़ा जाए, जिस दवा कंपनी ने नक़ली या गुणवत्ताविहीन दवाओं की आपूर्ति की उसे धरा जाए, जिन स्वास्थ्य अधिकारियों के निर्देशन में यह कार्यक्रम चला उन्हें चिन्हित किया जाए आदि, आदि । यानी कुल मिलाकर जल्दी-से-जल्दी अपराध की ज़िम्मेदारी तय की जाए और जो अपराधी प्रतीत हो उसे क़ानून के हवाले किया जाए ।

अब यह 'जल्दी-से-जल्दी' तब तक रहेगी जब तक लोगों में सनसनी रहेगी, मीडिया में थोड़ी गर्मी रहेगी, नेताओं-अधिकारियों में थोड़ा डर रहेगा । उसके बाद यह 'जल्दी-से-जल्दी' जल्दी ही विलंबित हो जाएगी, ऐसी अन्य घटनाओं की तरह यह घटना भी धीरे-धीरे विस्मृति के गर्भ में समा जाएगी । लोगों को इससे कोई मतलब नहीं रहेगा कि क़ानून ने किसे अपराधी माना किसे नहीं, किसे छोड़ा किसे नहीं । जो लोग क़ानून और न्याय की चौपड़ पर अपनी लोकतांत्रिक ताक़त और रसूख़ के बल पर सही गोटियां चल पाएंगे वे मूंछों पर ताव देते हुए बाहर आ जाएंगे और जो दो-चार कमज़ोर साबित होंगे वे बलि का बकरा हो जाएंगे । जो वास्तविक ज़िम्मेदार हैं वे कभी ज़िम्मेदार नहीं ठहराए जाएंगे और जो ज़िम्मेदार ठहराए जाएंगे वे वस्तुत: ज़िम्मेदार नहीं होंगे ।

इस कहानी में आप किसे ज़िम्मेदार ठहराएंगे–उस डॉक्टर को जिसने चंद घंटों में 83 ऑपरेशन निपटा दिये, जैसे इंसानों का नहीं जानवरों की किसी रेवड़ का ऑपरेशन किया जा रहा हो । आख़िर इस डॉक्टर ने ऐसा क्यों किया ? इंसानों के साथ जानवरों जैसा सुलूक करने की इसकी

मानसिकता कहां से पैदा हुई ? अगर औजार जंग लगे थे या संक्रमित थे तो ऐसा क्यों हुआ ? अगर ऑपरेशन के लिए आयी औरतों ने बाज़ार दर पर 10-10 या 20-20 हज़ार रुपये दिये होते तब भी क्या ये ऑपरेशन इतनी ही लापरवाही से किये गये होते ?

अगर दवाओं में गड़बड़ थी तो ये गड़बड़ आख़िर कैसे पैदा हुई ? दवा आपूर्तिकर्ताओं को यह हिम्मत कहां से मिली कि वे घटिया और मिलावटी दवाओं की निरीह लोगों की जान की क़ीमत पर आपूर्ति करें ? ज़ाहिर है कि उन्होंने यह काम पहली बार तो नहीं ही किया होगा । उनके मन में अगर कोई भय नहीं था तो क्यों नहीं था ? आख़िर उनकी पीठ पर किसी न किसी ताक़तवर का वरदहस्त तो रहा ही होगा । इसी तरह अगर स्वास्थ्य अधिकारियों ने लापरवाही बरती या वे नसबंदी के निर्धारित लक्ष्य की पूर्ति के लिए इस तरह के असुरक्षित शिविर आयोजित कर रहे थे तो कुछ न कुछ तो उनका स्वार्थ रहा होगा । क्या था उनका स्वार्थ और कैसे पैदा हुआ ? अगर उनके ऊपर दबाव था तो किसने पैदा किया यह दबाव और क्यों ? अगर स्वास्थ्य तंत्र निरीह और बदनसीब इंसानों के प्रति इतना अनुदार और क्रूर था तो इसके पीछे कुछ कारण तो रहे ही होंगे । क्या थे वे कारण और किसके चलते पैदा हुए ?

दरअस्ल ये सब लोग उस लोकतंत्र की शर्तों पर काम कर रहे थे जिसे हमने विकसित किया है । उस लोकतांत्रिक वातावरण में काम कर रहे थे जिसे सारी राजनीतिक ताक़तों ने मिलकर तैयार किया है । इस लोकतंत्र ने कथित सफलता के जो तौर-तरीक़े निर्मित किये हैं, सत्ता और संपन्नता की सीढ़ियां चढ़ने के लिए जो मानक निर्धारित किये हैं, ये लोग उन्हीं तौर-तरीक़ों और मानकों के आधार पर सक्रिय थे । इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि सत्ता सपा की है या बसपा की, कांग्रेस की है या भाजपा की, वसुंधरा राजे की है या रमन सिंह की, सभी जगह अधिकारी और कर्मचारी एक ही शैली में काम कर रहे हैं, उस शैली में जो हमारे इस महान लोकतंत्र की अपनी शैली है ।

चाहे भोपाल त्रासदी हो या उत्तराखंड की या फिर छत्तीसगढ़ के शिविर में हुई चंद मौतें, हर जगह यही शैली कार्यरत रही है । इस पर कोई नियंत्रण नहीं कोई अंकुश नहीं, यह निर्बाध जारी है । अगर अन्ना हज़ारे जैसा कोई सिरफिरा व्यक्ति इस शैली में हस्तक्षेप करने की कोशिश करता है तो सारी राजनीतिक ताक़तें उसे झाड़-बुहारकर इतिहास के कूड़ेदान में फेंक देती हैं । और अगर 'आप' पार्टी जैसी कोई पार्टी राजनीतिक हस्तक्षेप के माध्यम से कुछ भिन्न करना चाहती है तो इस लोकतंत्र की शैली और शर्तें उस पर इतनी गंद और कीचड़ उछाल देती हैं कि उसका अपना चेहरा ही विकृत हो जाता है । सच कहें तो छत्तीसगढ़ की कमज़ोर औरतों की हत्या इस क्रूर, नक़ली और मिलावटी लोकतंत्र ने की है, क्या कोई इसे न्याय के कटघरे में खड़ा करेगा ? (साभार : राष्ट्रीय सहारा)

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

www.kanti.in

प्रचार-प्रसार मुहिम के लिए विशेष छूट

मासिक कान्ति के प्रचार-प्रसार हेतु एक मुहिम शुरू की गयी है जिसके तहत कोई भी व्यक्ति 'मासिक कान्ति' के 5 नये ख़रीदार बनाता है तो उसे मुफ़्त में एक और ख़रीदार बनाने की छूट होगी । इस अवसर से लाभ उठाने के लिए एक साथ एक हज़ार एक सौ रुपये (Rs. 1100/-) सीधे कान्ति के कार्यालय में जमा करने होंगे । प्रचार-प्रसार की यह मुहिम आगामी कुछ महीनों तक चलती रहेगी । मासिक कान्ति के पाठक इस विशेष छूट का लाभ उठाने के लिए अपने-अपने इलाक़ों में अपने सगे-संबंधियों एवं अन्य साथियों को प्रेरित कर सकते हैं । विस्तार से जानने के लिए सम्पर्क करें :

मैनेजर

मासिक कान्ति

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नई दिल्ली-110025
09818799223, 011-26949430
E-mail : kanti hindimonthly@yahoo.com

समकालीन सामाजिक विसंगतियों पर व्यंग्यकार की तिरछी नज़र के निशाने

■ डॉ॰ सूर्यप्रसाद शुक्ल

श्री कन्हैयालाल गुप्त 'सलिल' ने जीवन के विविध क्षेत्रों में व्याप्त भ्रष्ट आचरण से त्रस्त आज के समय और समाज का, तत्कालीन और समकालीन परिदृश्य बहुत तल्ख़ी के साथ कुरेदते, कचोटते, छेदते और चीरते शब्दों में अर्थवान करने का प्रयास किया है । उनकी व्यंग्योक्तियों में जनतंत्र और प्रजातंत्र का स्वप्न भंग तो राजनीतिज्ञ के भ्रष्ट आचरण का भंडाफोड़ है । समाजवाद के बदलते और दिखावटी चेहरों की नक़ाब के अन्दर की तस्वीर है जो सरकारी कामकाज में कामचोरी, रिश्वतख़ोरी, भाई भतीजों की टेंडर डालने और खुलने खुलवाने के खुली छूट की भर्त्सना है । चरित्रहीनता, आचरणहीनता, सांस्कृतिक मूल्यों में गिरावट, रहन-सहन, खानपान तथा भोजन वस्त्रों में व्याप्त बेशर्मी भी इन कटूक्तियों का विषय बनी है । सेक्स और हिंसा, कालाधन और इसका दुरुपयोग भी 'सलिल जी' के मन को कचोटता रहा है, जिसका उन्होंने खुलकर वर्णन किया है ।

श्री कन्हैयालाल गुप्त 'सलिल' की पुस्तक 'दुर्गति-चालीसा' की व्यंग्योक्तियां साहित्यकार के आक्रोश का परिणाम हैं जिसमें देशकाल और परिस्थितियों की दुर्गति का अहिंसक प्रतिकार शब्द की शक्ति के साथ समाज के समक्ष उपस्थित हुआ है ।

'दुर्गतिचालीसा' में राजनैतिक अराजकता और भारतीय स्वातंत्र्य के लिए बलिदान हो जाने वाले शहीदों के स्वप्नों को बिखरते देखकर कहा गया है कि 'अंग्रेज़ों से पाया राज, बापू संग मर गया सुराज' और काले धन में डूबा मुल्क आज किस तरह हुआ ज़रूरी सुविधा-शुल्क का खुलेआम धंधा पनप रहा है । यह तो इसी से समझा जा सकता है कि नोटों की गड्डी से दबकर, नैतिकता का डब्बा गोल हो रहा है । ये चुनाव हैं या बरबादी कहकर व्यंग्यकार ने प्रश्न किया है

दुर्गति चालीसा (व्यंग्य रचना)

लेखक : कन्हैया लालगुप्त सलिल
प्रकाशन : वाणी साहित्य संस्था एवं प्रकाशन संस्थान कानपुर
पृष्ठ : 102, मूल्य : 60 रुपये

कि जब सदनों में क़ातिल अपराधी घुसे बैठे हैं तब रोटी, न्याय और सुरक्षा की बात कैसे की जा सकती है । यहां तो सिर्फ़ लूटने की आज़ादी है फिर यह मुखौटाधारी लुटेरे जनता के धन पर हल्ला क्यों नहीं बोलेंगे ? इसी तरह यह भी कहा गया है कि–

चाटुकारों को तरी मलाई, 'हरिश्चन्द' की जांच धुनाई ।

इसी के साथ छोटी-छोटी से लेकर बड़ी-बड़ी जगहों पर लूट-खसोट और चालाकी भरे धंधों का व्यापार गरम है जिसके लिए एक अन्योक्ति में कहा गया है–

गिद्धों, कौवों का आलिंगन
सत्ता हित पावन-गठबंधन
ललुआ को पारस की कुर्सी
कलुआ के माथे पर चंदन

वर्गीय विशेषता से युक्त समाज में सामाजिक नियमों को निर्धारित करने वाली आंतरित समता और ममता का सद-भावना प्रधान ताना-बाना छिन्न-भिन्न हो गया है । एक वर्ग के तमाम भीतरी और बाहरी संबंध तथा विभिन्न वर्गों के आपसी संबंध ही तो मानव संबंध होते हैं । यह मानवी संबंध ही मानव चेतना की मूलभूत नींव हैं, जिस पर संस्कृति, धर्म, दर्शन, राजनीति, कला, साहित्य आदि के भवन निर्मित होते हैं, किन्तु इनको भी अराजक व्यवस्था ने अपने काले पैसे के बल पर ख़रीद कर अव्यवस्थित और अनैतिक बना दिया है । इस पर ही करारा व्यंग्य करते हुए 'सलिल जी' कहते हैं–

(शेष पृष्ठ 49 पर)

ठंड को भगाएं कोसों दूर

❖ डॉ॰ अनुराग श्रीवास्तव

सर्दी का मौसम है । इस ऋतु में जुकाम और कफ़ की समस्या आम बात है । इस स्थिति में ढेर सारी दवाइयां खाने के बजाय कुछ ऐसी चीज़ों को लें जो न केवल हमारे शरीर को गर्म रखे बल्कि हमें ठंड में होने वाले संक्रमण से दूर भी रखें । प्रस्तुत है ऐसी चीज़ों के बारे में उपयोगी जानकारी–

अदरक

अदरक में विद्यमान एंटी आक्सीडेंट्स शरीर को सर्दी में होने वाले संक्रमण से बचाने में सहायक है । इससे एसिडिटी से लेकर शरीर के मेटाबालिज़्म संबंधी समस्याएं दूर होती हैं ।

तिल

काली अथवा सफ़ेद तिल की तासीर गर्म रहती है । तिलुवा, गजक, रेवड़ी या लड्डू में तिल का इस्तेमाल सर्द मौसम में अधिक होता है । यह शरीर को गर्म रखने के साथ पाचन क्रिया को दुरुस्त रखता है ।

दालचीनी

दालचीनी की गर्म तासीर शरीर को गर्भ रखने में मददगार हो सकती है । गर्म दूध में शहद के साथ इसका सेवन करें जिससे पूरे मौसम में ठंड से आपका बचाव हो सकेगा ।

लहसुन

लहसुन में एंटीबैक्टीरियल तथा एंटी वायरल गुण पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं । यह न सिर्फ़ आपके शरीर को गर्म रखता है बल्कि कोलेस्ट्रोल का स्तर कम करने में भी मददगार है । लहसुन का नियमित उपयोग करने से सर्दी में फ़ायदा होता है और सीने में होने वाले संक्रमण में भी लाभ होता है ।

बादाम

ठंडे मौसम में बादाम का नियमित उपयोग करने से शरीर गर्म रहता है । यह श्वसन रोग संबंधी समस्याओं में भी लाभकारी है । इसमें ओमेगा 3 फैटी एसिड पर्याप्त मात्रा में मौजूद है जो फैट घटाने तथा ऊर्जा बनाए रखने में सहायक है ।

अजवाइन

अजवाइन की तासीर गर्म है । सर्दी के मौसम में अजवाइन मिश्रित चाय पीना लाभदायक होता है । सर्दी का प्रकोप होने पर रात में भोजन के बाद सोते समय गुड़ के साथ अजवाइन फांकना आरामदायक और राहतकारी होता है । अजवाइन फांकने के बाद पानी नहीं पीना चाहिए ।

लाभकारी बथुआ

बथुवे का साग अनेक औषधीय गुणयुक्त तथा स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है । सामान्य तौर पर किसानों के खेत में अपने आप उगने वाले बथुआ में आयरन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है । इसके साग को नियमित रूप से खाने से अनेक प्रकार के रोगों को जड़ से समाप्त किया जा सकता है । इससे गुर्दे में पथरी होने का ख़तरा काफ़ी हद तक कम हो जाता है । यह वायु विकार, उदरशूल तथा कोष्ठबद्धता में लाभकारी है ।

कच्चे बथुआ के एक प्याली रस में अल्प मात्रा में नमक मिलाकर प्रतिदिन खाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं । यह कृमिघ्न होता है । दाद, सफ़ेद दाग़, खाज-खुजली, फोड़ा-फुंसी, अपरस तथा अन्य प्रकार के चर्म रोगों में प्रतिदिन उबालकर बथुवे के रस का सेवन करना चाहिए । मलेरिया, ज्वर तथा कालाजार जैसे संक्रामक रोगों में भी बथुआ का रस लाभदायक होता है । कब्ज़ के रोगियों को इसका नियमित रूप से सेवन करना चाहिए ।

कुछ सप्ताह तक इसको नियमित रूप से खाने से कोष्ठबद्धता, अपच और बदहज़मी की समस्या समाप्त हो जाती है । पथरी की बीमारी होने पर एक गिलास कच्चे बथुवे के रस में शक्कर मिलाकर प्रतिदिन पीने से पथरी टूटकर बाहर निकल आएगी । बथुवे के प्रतिदिन सेवन से व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है । इसके अलावा नेत्र ज्योति बढ़ाने तथा जोड़ों के दर्द से राहत और आराम पाने में बथुआ बहुत लाभदायक माना जाता है ।

मूल्यवान समय का दुरुपयोग न करें

■ विद्या प्रकाश

समय मूल्यवान है, जिसने समय की क़द्र की, वही ज़िन्दगी में कामयाब होता है और जो पाबन्द वक़्त नहीं रहा, वह जीवन में कभी सफल नहीं हो पाता । उसके सारे काम बनते-बनते बिगड़ कर रह जाया करते हैं । मगर एक हम हैं जो समय की न क़द्र करते हैं और न परवाह ।

अपवादस्वरूप कुछेक लोगों को छोड़कर ज़्यादातर भारतवासी समय के प्रति संजीदा और पाबन्द नहीं रहते । हम रेलवे स्टेशन पर ट्रेन के वक़्त पर पहुंचने की उम्मीद तो करते हैं मगर खुद निर्धारित वक़्त पर कभी आफ़िस नहीं पहुंचते । हम गोष्ठी जैसे कार्यक्रम में दूसरों को तो ससम्मान आमंत्रित कर देते हैं तथा आमंत्रित जन का कार्यक्रम स्थल पर आगमन होने भी लगता है मगर अपना कार्यक्रम तयशुदा वक़्त से घंटे दो घंटे बाद ही शुरू करते हैं । हम दूसरों को मुलाक़ात का वक़्त देकर मौक़े पर नहीं पहुंचना चाहते । हम यह नहीं सोचते कि हमारे वक़्त पर न पहुंचने तथा लेटलतीफ़ी से दूसरों को कितनी व्यावहारिक असुविधा का सामना करना पड़ता है । प्रोग्राम शीघ्र शुरू के इन्तिज़ार में बैठे-बैठे वे बोर होने लगते हैं ।

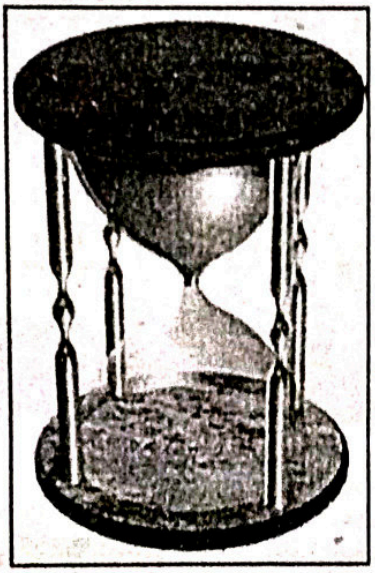

प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक बाल्यावस्था में शहर आगरा में था । उस वक़्त पं० जवाहर लाल नेहरू प्रधानमंत्री थे । शहर के एक मैदान में उनके भाषण का कार्यक्रम था । मैदान में पचासों हज़ार की संख्या में भीड़ जुटी थी तथा जनता प्रधानमंत्री की प्रतीक्षा कर रही थी । उनका हेलीकॉप्टर अभी तक आया नहीं था । एक विदेशी महिला विश्वविख्यात ताजमहल देखने के लिए आगरा आयी थी और उधर से गुज़र रही थी । मैदान में भीड़-भाड़ देखकर वह रुकी और एक पुलिस अधिकारी से अंग्रेज़ी में पूछने लगी, 'आज यहां कोई मेला है क्या ?' अधिकारी ने बताया, आज यहां पी०एम० का कार्यक्रम है । उनका भाषण सुनने के लिए पब्लिक इकट्ठी है ।' सुनकर महिला हैरत से बोल उठी, 'ओ माई गॉड । क्या पब्लिक के पास कोई काम नहीं है ?' इसी संदर्भ में जापानियों का एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहूंगा । लगभग दो ढाई दशक पहले जापानियों का एक प्रतिनिधिमंडल भारत भ्रमण पर आया था । देश के अनेक शहरों में भ्रमण के बाद

(पृष्ठ 47 का शेष)

पढ़े लिखों के ख़ाली झोले
भूखे पेट आंख में शोले
जननायक जी आंखें मूंदे
'ओम शान्ति' हंसकर बोले ।

अपनी कवित्वमय फ़ब्तियों में व्यंग्यकार ने स्वीकार किया है कि–

'सीता' समा चुकी पृथ्वी में, शूर्पणखा की जय जय बोल
अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बोल । अस्सी नब्बे पूरे सौ
नौ दिन चले अढ़ाई कोस, चालिस चोर हो गये सौ ।'

इस राजनीति बनाम अखाड़ेबाज़ी के खेल में आरक्षण की आग में जलते पीढ़ी के नौनिहाल, संख्या बल पर पनपी गुण्डागरीरी और विकल्प ही समाज व्यवस्था के लिए कवि के मन में जो दर्द उपजा है वह ही घनीभूत होकर इस तरह हो गया है–

बदहाली/कुहासे की तरह/हो चुकी इतनी घनी
विवशता की है दहशत/आक्रोश की सनसनी
दूर तक भी नहीं नज़र आती/टिमटिमाती हुई रोशनी ।

अनेक पारंपरिक शब्दों को नये अर्थों में प्रयोग करते हुए दुर्गति चालीसा के व्यंग्यकार ने छन्द प्रयोगों में अपनी प्रतिभा से चुटीले शब्द बाण चलाने का प्रयास किया है जो उसके लक्ष्य बोध को सार्थक बना सकते हैं क्योंकि ये व्यंग्यकार की तिरछी नज़र के निशाने हैं ।

प्रतिनिधिमंडल दिल्ली पहुंचा । एक पत्रकार ने जापानियों से पूछा, 'द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान नागासाकी और हिरोशिमा शहर भीषण बमबारी में तबाह हो गया था । जापान में बड़े पैमाने पर विनाश हुआ । इसके बावजूद अल्प समय में विज्ञान तथा टैक्नोलॉजी सहित विभिन्न क्षेत्रों में आपकी उल्लेखनीय सफलता का राज क्या है ?' जापानियों ने उत्तर दिया, 'हमारे देश में प्रत्येक व्यक्ति को हर पल अपने काम की धुन और लगन रहती है । वह कभी अपने समय का दुरुपयोग नहीं करता ।' एक हमारा देश है जहां लोग समय का दुरुपयोग ख़ूब करते हैं । ख़ाली वक़्त में लोग जलपान गृहों में बैठकर चाय की गरम-गरम चुस्कियों तथा सिगरेट के धूमिल छल्लों के बीच देश की भ्रष्ट सियासत पर एक घंटा बहस करते हैं, भ्रष्टाचार तथा महंगाई पर अरण्यरोदन और अश्रुपात करते हैं मगर करते कुछ भी नहीं हैं । मनोरंजन के नाम पर समय बरबाद करने में हम अव्वल हैं । दूसरो को वक़्त देकर समय पर न पहुंचना, कार्यक्रम वक़्त पर न शुरू करना और कार्यालय समय पर न पहुंचना हमारी आदत में शुमार है मगर हम उम्मीद करते हैं कि रेलवे स्टेशन पर ट्रेन समय पर पहुंचे । हमारा मरीज़ सरकारी अस्पताल में इलाज के सिलसिले में भर्ती है । डॉक्टर समय-समय पर पहुंचकर उसका चेकअप करे और स्टाफ़ नर्स वक़्त पर आकर उसको इंजेक्शन लगाए तथा ग्लूकोज का पानी चढ़ाये । बिजली का बिल जमा करने के लिए हम विभागीय कार्यालय में जाते हैं मगर काउंटर पर कर्मचारी को अनुपस्थित देखकर झल्लाते हैं । रेलवे स्टेशन पर ट्रेन के आगमन का समय हो रहा है तथा टिकट विंडों पर कर्मचारी अनुपस्थित है जिस पर हम गुस्साते हैं, मगर अपनी नहीं देखते । जब दूसरों की लेटलतीफ़ी से हमको असुविधा होती है तो हमें खीझ होती है मगर जब हमारी लेटलतीफ़ी के चलते दूसरों को परेशानी होती है तो हमें उसकी न फ़िक्र होती है और न परवाह । अपनी इस आदत में सुधार किये बिना न हमारा विकास संभव है और न मुल्क का । यदि हम समय की क़द्र करेंगे तो वह हम पर मेहरबान होगा और यदि हमने वक़्त की क़ीमत नहीं समझी तो वह हमें ठोकर मारकर आगे निकल जाएगा ।

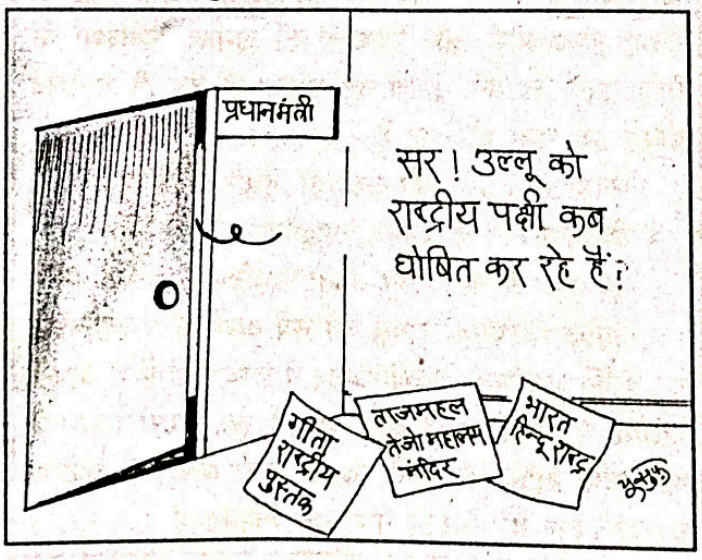

लाभदायक पान

पान को ताम्बूल, नागरबेल तथा नागवल्ली जैसे नामों से भी जाना जाता है । यह एक लता होती है जिसके पत्ते पीपल के पत्तों के समान मगर कोमल होते हैं । इसके उत्पादन के लिए जल की आवश्यकता होती है और इसकी पैदावार जलाशय के किनारे की जाती है । पान सामाजिक शिष्टाचार से जुड़ा है । अनेक व्यक्ति भोजन करने के बाद पान खाने के आदी होते हैं । शादी-विवाह के अवसर पर अन्य रुचिकर व्यंजनों के अलावा पान की भी व्यवस्था की जाती है तथा लौंग, इलायची, सौंफ़ तथा नारियल की महीन कतरन के बीच पान की निराली शोभा देखते ही बनती है ।

पान के पत्तों में आयुर्वेदिक गुण होते हैं । आयुर्वेदिक औषधीय गुण युक्त पान के पत्ते वात, कफ़ और पित्त के त्रिदोष को दूर कर शरीर को स्वस्थ, निरोग तथा सबल बनाने में सहायक हैं । इसके अलावा पान रक्त के जमाव, श्वास रोग, मनोविकार, नेत्र रोग, सूजन, ज्वर तथा सूखी खांसी जैसी बीमारियों में लाभदायक है । पान के पत्तों का रस आंखों में डालने से रतौंधी जैसी नेत्र संबंधी बीमारियों में लाभ होता है तथा नेत्र ज्योति में वृद्धि होती है । इससे मानव मस्तिष्क के अन्दर रक्त का जमाव दूर हो जाता है तथा ख़ून के थक्के नहीं जमते ।

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।



HOTEL Al-Zam Zam

RESTAURANT & LODGING



The best taste in Veg. & Non-Veg. dishes



Now At Ajni Square Wardha Road

Comfortable interior, hygienic separate preparation for Veg. and Non-Veg.
Special air conditioned hall for family.

Comfortable lodging in air conditioned and well decorated rooms.

Customer Care No :- 08796466666

Main Branch :- Central Avenue, Chandra Shekhar Azad Square, Nagpur - 440002
Branch 1 :- Plot No. 1 Hindustan Colony, Ajni Square, Beside Chevrolet Showroom, Wardha Road, Nagpur
Branch 2 :- Opp Battuk Bhai Jewellers, Dharampeth, W.H.C. Road, Nagpur

Ph: 0712-2763131, 2732401

E-mail :- hotelalzamzam@gmail.com

Log on to :- www.hotelalzamzam.com
or like us on :- hotelalzamzam.facebook.com

Posted on 20-21 December 2014
January 2015
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.12.2014

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2012-14

2015

JANUARY

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

FEBRUARY

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28

MARCH

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

APRIL

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

MAY

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

JUNE

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

JULY

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

AUGUST

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

SEPTEMBER

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

OCTOBER

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

NOVEMBER

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

DECEMBER

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		